षष्ठम अध्याय

1. 'भट्टिकाव्यम्' में प्रयुक्त समस्त पदों का संख्या निर्धारण, वर्गीकरण एवं लौकिकाऽलौकिक विग्रह प्रदर्शनपूर्वक व्युत्पत्ति।

अभून्नृपो .... स्वयम्।।1।।[1]

1. **विबुधसखः**-विबुधानां सखा। (विबुध आम्, सखा सु)। 'षष्ठी' सूत्र से षष्ठी तत्पुरुष समास। (विबुधानां, सखा + टच्) 'राजाहः सखिभ्यष्टच्'[2] सूत्र से तत्पुरुष समास में 'सखा' शब्द से समासान्त 'टच्' (अ) प्रत्यय।

2. **श्रुताऽन्वितः**-श्रुतैरन्वितः। (श्रुत + टा, अन्वित + सु) 'तृतीया तत्कृतार्थे गुणवचनेन' [3]सूत्र से योग विभक्ति से ''तृतीया तत्पुरुष'' समास।

3. **दशरथ**-दशसु रथो यस्य सः। (दश + सुप्, रथ + सु) 'सप्तमीविशेषणे बहुव्रीहौ' [4][5]सूत्र से 'बहुव्रीही समास'।

4. **नृपः**-नृन् पातीति। (नृ + पा + क) 'तत्रोपपदं सप्तमीस्थम्' सूत्र से 'उपपद तत्पुरुष समास'।

सोऽध्यैष्ट .... न्यवधीदरींश्च ।।2।।

5. **त्रिदशाः**-तिस्रः (जन्मसत्ताविनाशाख्या) दशा येषां ते। (तिस्र सु, दशा सु) 'अनेकमन्यपदार्थे'[6] सूत्र से ''बहुव्रीहि समास''।

6. **षड्वर्गम्**-षण्णां दोषाणां वर्गम् इति। (षड् + आम्, वर्ग + सु) 'षष्ठी' सूत्र से ''षष्ठी तत्पुरुष' समास।'

7. **समूलघातम्**-मूलने सहिता समूला। (मूल टा, सह) 'तेन सहेति तुल्ययोगे'[7] सूत्र से ''बहुव्रीहि समास''।

वसुनि .... निरास्थत्।।3।।

8. **त्रयम्बकः**-त्रीणि अम्बकानि यस्य सः। (त्रि + जस्, अम्बक + सु) 'अनेकमन्यपदाथे'[8] सूत्र से ''बहुव्रीहि समास''।

9. **सर्वेषुभृताः**-सर्वे च ते इषुभृतः। (सर्व + जस्, इषुभृत + जस्) 'पूर्वकालैकसर्वजरत्पुराणनवकेवलाः समानाधिकरणेन'[9] सूत्र से 'समानाधिकरण तत्पुरुष समास।'

पुण्यो .... वह्निरभिप्रणीतः।।4 ।।

10. **महाब्रह्मसमूहजुष्टः**-'महान्तश्च ते ब्रह्माण इति।' (महत् + सु, ब्रह्मन् + सु) 'सन्महत्परमोतमोत्कृष्टाः पूज्यमानैः[10]' सूत्र से 'तत्पुरुष समास' (कर्मधारय)।

11. **नाकसदाम्**–कं–सुखं, न कं–अकम् (दु:खम्)। (नञ् अक सु) 'नलोपो नञ:' सूत्र से 'नञ् तत्पुरुष' समास। न विद्यते नाकं दुखं यस्मिन् स नाक:। 'नञोऽस्त्यर्थानं वाच्यो वा चोतरपदलोप:' वार्तिक से 'बहुब्रीहि समास'।

12. **अभिप्रणीत:**–अभिमुख्येन प्रणीत इति। (अभि, प्रणीत + सु) 'कुगतिप्रादय:[11]' सूत्र से 'प्रादि तत्पुरुष समास'।

स पुण्यकीर्तिः .... ब्रह्मभिरिद्धबोधैः ।।5।।

13. **पुण्यकीर्ति:**–पुण्यकीर्तियस्य स:। (पुण्य ङि, कीर्ति सु) 'सप्तमी विशेषणे बहुब्रीहौ'[12] सूत्र से ''बहुब्रीहि समास''।

14. **समृद्धया**–समीचीना ऋद्धि:। (सम् – ऋद्धि + सु) 'कुगतिप्रादय:'[13] सूत्र से 'तत्पुरुष समास'।

15. **महेन्द्रलोकप्रतिमाम्**–महान् चासौ इन्द्रो। (महत् सु इन्द्र सु) 'सन्महत्परमोत्तमोत्कृष्टा: पूज्यमानै:'[14] सूत्र से 'कर्मधारय समास'। महेन्द्रस्य लोको महेन्द्रलोक:। (महेन्द्र ङस, लोक सु।) 'षष्ठी' सूत्र से ''षष्ठी तत्पुरुष'' समास। महेनद्रलोकेन प्रतिमा समाना वा। (महेन्द्रलोक + टा, प्रतिमा + सु) 'तृतीया तत्पुरुष' समास।

16. **सर्वर्तुसुखा**–सर्वे च ते ऋतव: सर्वर्तव:। (सर्व + जस्, ऋतु + जस् 'पूर्वकालैकसर्वजरत्पुराणनवकेवला: समानाधिकरणेन')[15] सूत्र से 'कर्मधारय समास'। तेषु सुखा सर्वर्तुसुखा।

17. **इद्धबोधै:**–इद्ध: बोधो येषां ते इद्धबोधै:। (इद्ध सु, बुध आम्) 'अनेकमन्यपदार्थे'[16] सूत्र से 'बहुब्रीही समास'।

निर्माणदक्षस्य .... मघोनः ।।6।।

18. **निर्माणदक्षस्य**–निर्माणे दक्षो इति। (निर्माण: ङि, दक्ष सु) 'सप्तमी शौण्डै:' सूत्र से 'सप्तमी तत्पुरुष' समास।

19. **पद्मासनकौशलस्य**–पद्मम् आसनम् यस्य स: पद्मासन:। (पद्म सु, आसन सु) 'अनेकमन्यपदार्थे'[17] सूत्र से 'बहुब्रीही समास'। पद्मासनस्य कौशलं, पद्मासनकौशलं 'पूरणगुणसुहितार्थसदव्ययतव्य समानाधिकरणेन' सूत्र से ''षष्ठी तत्पुरुष'' समास का अभाव। तस्य पद्मासनकौशलस्य।

20. **ऊर्ध्वस्फुरद्रत्नगभस्तिभी:**–ऊर्ध्वं स्फुरन्त:, उर्ध्वस्फुरन्त:। (उर्ध्व सु, स्फुरन्त सु) 'सह सुपा'[18] सूत्र से सुप्सुपा समास। रत्नानां गभस्तय:, रत्नगभस्तय: (रत्न आम्, गभ सु)। ''षष्ठी तत्पुरुष' समास'।

सद्रत्नमुक्ताफलवज्रभाञ्जि .... यस्याम्।।7।।

21. **सद्रत्नमुक्ताफलवज्रभाञ्जि**–सन्ति च तानि रत्नानि सद्रत्नानि। (सत् सु, रत्न सु) 'सन्महत्परमोत्तमोत्कृष्टा: पूज्यमानै:'[19] सूत्र से 'कर्मधारय समास'। मुक्ता: फलानि इव

मुक्ताफलानि। (मुक्त जस्, फल जस्) 'उपमितं व्याघ्रादिभिः' सामान्याऽप्रयोगे' सूत्र से 'कर्मधारय (उपमानोत्तरपद) समास'। सद्रत्नानि च मुक्ताफलानि च वज्राणि च सद्रत्नमुक्ताफलवज्राणि (सद्रत्न जस्, मुक्ताफल जस्, वज्र जस्) 'चाऽर्थे द्वन्द्वः' सूत्र से 'द्वन्द्व समास'।

22. **विचित्रधातूनि**–विचित्रा धातवो येषु तानि। (विचित्र सु, धातु सु) 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र स ''बहुब्रीहि समास''।

23. **सकाननानि**–काननैः सह वर्तन्ते इति। (कान टा, सह) 'तेन सहेति तुल्ययोगे'[20] सूत्र से ''बहुब्रीहि समास''।

अन्तर्निविष्टोज्ज्वलरत्नभासो .... गृहेभ्यः ।। 8 ।।

24. **अन्तर्निविष्टोज्ज्वलरत्नभासः**–अन्तः निविष्टानि अन्तर्निविष्टानि। (अन्त सु, निविष्ट सु) 'सह सुपा'[21] सूत्र से 'सुप्सुपा समास'। उज्ज्वलानि च तानि रत्नानि (उज्ज्वल सु, रत्न सु) 'विशेषणं विशेष्येण बहुलम्'[22] सूत्र से 'कर्मधारय समास'। अन्तर्निविष्टानि च तानि उज्ज्वलरत्नानि, अन्तर्निविष्टोज्ज्वल रत्नानि (अन्तर्निविष्ट सु, उज्ज्वलरत्न सु) 'विशेषणं विशेष्येण बहुलम्' सूत्र से 'कर्मधारय समास'। तेषां भासः, अन्तर्निविष्टोज्ज्वलरत्नभासः 'षष्ठी'[23]सूत्र से ''षष्ठी तत्पुरुष'' समास।

25. **गवाक्षजालैः**–गवाम् अक्षिणि इव गवाक्षः। (गव आम्, अक्ष सु) 'षष्ठी' सूत्र से ''षष्ठी तत्पुरुष'' समास। तेषां जालानि गवाक्षजालानि, ''षष्ठी तत्पुरुष'' समास।

26. **हिमाद्रिटङ्कात्**–हिमानाम् अद्रिः हिमाद्रि। (हिम आम्, अद्रि सु) 'षष्ठी' सूत्र से ''षष्ठी तत्पुरुष'' समास।

27. **गङ्गाऽम्बुपातप्रतिमा**–गङ्गायाः अम्बूनि, गङ्गाऽम्बुनि (गङ्गा ङस्, अम्बु सु) तेषां पाताः गङ्गाऽम्बुपाताः (गङ्गाम्बु आम्, पात सु) 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास। तैः प्रतिमाः (समानाः) (गङ्गाम्बुपात टा, प्रतिमा सु) 'पूर्वसदृशसमोनार्थकलहनिपुणमिश्रश्लक्ष्णैः'[24] सूत्र से 'तृतीया तत्पुरुष' समास। यासां ताः गङ्गाम्बुपातप्रतिमाः।

धर्म्यासु .... तिसृषूत्तमासु ।। 9 ।।

28. **कामाऽर्थयशस्करीषु**–कामश्च अर्थश्च यशश्च इति कामार्थयशांसि। (काम सु, अर्थ सु, यश सु) 'चार्थे द्वन्द्वः' सूत्र से इतरेतरयोग 'द्वन्द्व समास'।

पुत्रीयता .... पुरमृष्यश्रृङ्गः ।। 10 ।।

29. **वराङ्गनाभिः**–वराश्च ता अङ्गनाः इति वराङ्गना। (वर टा, अङ्ग टा) 'तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः'[25] सूत्र से 'कर्मधारय समास'। ताभिः वराङ्गनाभिः।

30. **ज्ञानगतिः**–ज्ञानस्य गतिः इति ज्ञानगतिः। (ज्ञान ङस् गति सु) 'षष्ठी'[26] सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

31. **ऋश्यश्रृङ्ग**–ऋष्यस्य इव शृङ्ग यस्य सः। (ऋषि ङस्, शृङ्ग सु) 'अनेकमन्यपदार्थे' [27] सूत्र से ''बहुब्रीहि समास''।

ऐहिष्टं .... सुताऽनुबन्धम्।। 11।।

32. **कृताऽऽत्माः**–कृतः आत्मा येन सः इति कृताऽऽत्माः। (कृत सु, आत्मन् सु) 'अनेकमन्यपदार्थे'[28] सूत्र से समानाधिकरण 'बहुब्रीहि समास'।

33. **मुनीन्द्रम्**–मुनिषु इन्द्रः इति मुनीन्द्रः तम्। (मुनि सुप्, इन्द्र सु) सप्तमी तत्पुरुष समास।

34. **पुत्रफलम्**–पुत्रः फलं यस्य सः इति पुत्रफलम्। (पुत्र ङस्, फल सु) 'अनेकमन्यपदार्थे'[29] सूत्र से व्याधिकरणं 'बहुब्रीहि समास'।

35. **ज्ञाताऽऽशयः**–ज्ञातः आशयो येन सः इति ज्ञाताऽऽशयः। (ज्ञात सु, आशय सु) 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से ''बहुब्रीहि समास''।

36. **सुताऽनुबन्धम्**–सुतान् अनुबन्धातीति सुताऽनुबन्धम्। (सुत शस्, अनुबन्ध सु) 'उपपदमतिङ' सूत्र से 'उपपद समास'।

रक्षांसि .... नृपतेरमार्गीत्।। 12।।

37. **नृपतेः** – नृणां पतिः इति नृपतिः। (नृ आम्, पति सु) 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

38. **सुतसम्पदे**–सुतानां सम्पद इति सुतसम्पद तस्यै। (सुत आम्, सम्पद् सु) 'षष्ठी' सूत्र से ''षष्ठी तत्पुरुष'' समास।

निष्ठां .... सुपुत्रान्।। 13।।

39. **सभ्यतोषः**–सभ्यानां तोषः इति सभ्यतोषः। (सभ्य आम्, तोष सु) 'षष्ठी' सूत्र से ''षष्ठी तत्पुरुष''[30] समास।

40. **उदारवंश्याः**–उदारश्चासौ वंशः इति उदारवंशः। (उदार सु, वंश सु) 'तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः'[31] सूत्र से 'कर्मधारय समास'।

41. **राजपत्नयः**–राज्ञः पत्न्यः इति राजपत्न्यः। (राजन् ङस्, पत्नि सु) 'षष्ठी' सूत्र से ''षष्ठी तत्पुरुष''[32] समास।

42. **सुपुत्रान्**–शोभनाः पुत्राः इति सुपुत्राः तान्। (सु पुत्र जस्) 'कुगतिप्रादयः'[33] सूत्र से 'प्रादि समास'।

43. **हुतोच्छिष्टम्**–हुतस्य उच्छिष्टम् इति हूतोच्छिष्टम्। (हुत ङस् उच्छिष्ट सु) 'षष्ठी'[34] सूत्र से ''षष्ठी तत्पुरुष'' समास।

कोसल्ययाऽसावि .... लक्ष्मणेन।। 14।।

44. **उदारचेष्टम्**–उदाराचेष्टा यस्य सः इति उदारचेष्टम्। (उदार सु, चेष्ट सु) 'अनेकमन्यपदार्थे'[35] सूत्र से 'बहुब्रीहि समास'।

आर्चीद् .... वरिष्ठः।। 15।।

45. **वशिष्ठः**–वशिषु तिष्ठतीति वशिष्ठः। (वश सुप्, स्था सु) 'उपपदमतिङ'[36] सूत्र से 'उपपद समास'।

46. **परमार्थविन्दान्**–परमश्चासौ अर्थः इति परमार्थः। (परम सू, अर्थ सु) 'ततपुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः' सूत्र से 'कर्मधारय समास'। परमार्थस्य विन्दाः इति परमार्थविन्दास्तान्। (परमार्थ ङस्, विन्द सु) 'षष्ठी' सूत्र से ''षष्ठी तत्पुरुष'' समास।

47. **द्विजातीन्**–द्वे जाती जन्मनो येषा ते द्विजातयः इति द्विजातीन् तान् (द्वि सु, जाती सु) 'अनेकमन्यपदार्थे'[37] सूत्र से 'बहुब्रीहि समास'।

48. **भूतगणान्**–भूतानां गणा इति भूतगणास्तान्। (भूत आम् गण सु) 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष'[38] समास।

ततोऽभ्यगाद् .... मधुपर्कपाणिः।। 17।।

49. **अभ्याहतकर्मवृत्तिः**–कर्मणो वृत्तिः इतिकर्मवृत्तिः। (कर्मन्ओस्, वृत्ति सु) 'षष्ठी'[39] सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

50. **गाधिसुतः**–गाधेः सुतो इति गाधिसुतः। (गाधि ङस्, सुत सु) 'षष्ठी'[40] सूत्र से ''षष्ठी तत्पुरुष''[41] समास।

51. **क्षितीन्द्रम्**–क्षितेः इन्द्रः इति क्षितीन्द्रस्तम्। (क्षिति ङस्, इन्द्र सु) 'षष्ठी'[42] सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

52. **मधुपर्कपाणिः**–मधुपर्कः पाणौ यस्य सः इति मधुपर्कपाणिः। (मधुपर्क सु पाणि ङि) 'अनेकमन्यपदार्थे'[43] सूत्र से ''बहुब्रीहि समास''।

ऐषीः .... नृपस्तच्छिवमित्त्यवादीत्।। 18।।

53. **पुनर्जन्मजयाय**–पुनर्जन्मनो जयः इति पुनर्जन्मजयः। (पुनर्जन्म ओस, जय सु) 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठीतत्पुरुष' समास।

54. **प्रतनूनि**–प्रकर्षेण तनूनि इति प्रतनूनि। (प्र–तनु ङि) 'सहसुपा' सूत्र से सुप्सुपा समास।

आख्यन्मुनिस्तस्यशिवं .... लक्ष्मणेन।। 19।।

55. **द्विषद्वीर्यनिराकरिष्णुः**–द्विषतां वीर्यम् इति द्विषद्वीर्यम्। (द्विषत् आम् वीर्य सू) 'षष्ठी'[44] सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास। द्विषद्वीर्यस्य निराकरिष्णुः इति द्विषद्वीर्यनिराकरिष्णुः। (द्विषद्वीर्य ङस्, निराकरिष्णु सु) 'शेषे षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

स .... वचस्तापसकुञ्जरेण।। 20।।

56. **सुतविप्रयोगम्**–सुतेन विप्रयोगः इति सुतविप्रयोगः तम् (सुत टा विप्रयोग सु) 'कर्तृकरणे कृतां बहुलम्'[45] सूत्र से 'तृतीया तत्पुरुष' समास।

57. **असहिष्णुः**–न सहिष्णुः इति असहिष्णुः। (न सु, सहिष्णु सु) 'नलोपो नञ्'[46] सूत्र से 'नञ् समास'।

58. **तद्वचनम्**–तस्य वचनं इति तद्ववचनम्। (तत् ङस्, वचन सु) 'षष्ठी'[47] सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

59. **तापसकञ्जरेण**–तापसश्चासौ कुञ्जरः इति तापसकुञ्जरः। (तापः सु, कुञ्जर सु) 'वृन्दारकनागकुञ्जरैः पूज्यमानम्'[48] सूत्र से तत्पुरुष समास।

मया .... स्वसूनुम्।। 21।।

60. **परस्परार्थम्**–परस्परायेदम् इति। (परस्पर ङे, इदम् सु) 'चतुर्थी तदर्थार्थबलिहितसुखरक्षितैः'[49] सूत्र से 'चतुर्थी तत्पुरुष' समास।

घानिष्यते .... भारमगयम्।। 22।।

61. **विपक्षः**–विरुद्धः पक्षः इति विपक्षः। (वि–पक्ष सु) 'कुगतिप्रादयः'[50] सूत्र से 'प्रादि तत्पुरुष' समास।

62. **मद्विधः**–मम इव विधा (सादृश्यम्) यस्य सः इति मद्विधः। (अस्मद् ङस्, विधा सु) 'अनेकमन्यपदार्थे'[51] सूत्र से 'बहुब्रीहि समास'।

63. **अयोग्यः**–न योग्यः इति अयोग्यः। (न सु, योग्य सु) 'नलोपो नञ्'[52] सूत्र से 'नञ् समास'।

कुध्यन्कुलं .... सुतस्य।। 23।।

64. **विप्रवह्नि**–विप्र एव वह्निः इति विप्रवह्निः। (विप्र सु, वह्नि सु) 'मयूरव्यंसकादयश्च'[53] सूत्र से 'रूपक समास'।

65. **समन्युम्**–मन्युना सहितः इति समन्यु तम्। (मन्यु टा सह) 'तेन सहेति तुल्ययोगे'[54] सूत्र से 'बहुब्रीहि समास'।

आशीर्भिरभ्यर्च्य .... कुमारः।। 24।।

66. **अभ्यर्च्यः**–अभि अर्चित्वेति अभ्यर्च्यः। (अभि अर्च्य सु) 'कुगतिप्रादयः'[55] सूत्र से 'प्रादि समास'।

67. **हिंस्त्रेषुदीप्ताऽऽप्तधनुः**–हिंस्त्राश्च ते इषवो इति हिंस्त्रेषवः। (हिंस्र जस्, इषव जस्) 'तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः' सूत्र से 'कर्मधारय समास'। तै दीप्तं इति हिंस्त्रेषु दीप्तम्। (हिंस्त्रेशु भिस्, दीप्त सु) 'कर्तृकरणे कृता बहुलम्' सूत्र से 'तृतीया तत्पुरुष' समास। तत् आप्तं च धनुर्यस्य सः इति हिंस्त्रेषुदीप्ताऽऽप्तधनुः। (आप्त सु, धनु सु) 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से 'बहुब्रीहि समास'।

प्रयाष्यतः .... **लक्ष्मणोऽभूत्।। 25।।**

68. **कृत्स्नजिताऽस्त्रशस्त्रः**–कृत्स्नं जितानि इति कृत्स्नजितानि (कृत्सन सु जितानि जस्) 'सह सुपा' सूत्र से 'सुप्सुपा' समास। अस्त्राणि च शस्त्राणि च इति अस्त्रशस्त्राणि (अस्त्र जस्, शस्त्र जस्) 'चाऽर्थे द्वन्द्वः'[56] सूत्र से 'द्वन्द्व समास'। कृत्स्नजितानि अस्त्रशस्त्राणि येन सः कृत्स्नजिताऽस्त्रशस्त्रः (कृत्स्नजितानि जस्, अस्त्रशस्त्र जस्) 'अनेकमन्यपदार्थे'[57] सूत्र से 'बहुब्रीहि समास'।

69. **त्रैमातुरः**–तिसृणां मातृणामपत्यं पुमान् इति त्रैमातुरः। (त्रि आम् मातृ आम्) 'तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च'[58] सूत्र से 'तत्पुरुष समास'।

70. **पुण्यवनाय**–पुण्यं च तद्वनम् इति पुण्यवनम् तस्मै। (पुण्य सु वन सु) 'तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः'[59] सूत्र से 'कर्मधारय समास'।

71. **रोचिष्णुमुखस्य**–रोचिष्णुः मुखं यस्य सः इति रोचिष्णुमुखम्। (रोचिष्णु सु, मुख अम्) 'अनेकमन्यपदार्थे'[60] सूत्र से 'बहुब्रीहि समास'।

इषुमति .... **रूदन्माङ्गलिक्यः।। 26।।**

72. **बद्धचित्राऽङगुलित्रम्**–चित्रं च तत् अङगुलित्रम् इति। चित्राऽङगुलित्रम्। (चित्र अम्, अङ्गुलित्र अम्) 'तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः' सूत्र से 'कर्मधारय समास'। बद्धं चित्राऽङ्गुलित्रं येन सः बद्धचित्राङगुलित्रः। 'अनेकमन्यपदार्थे'[61] सूत्र से 'बहुब्रीहि समास'।

73. **असह्यम्**–न सह्यम् इति असह्यं तत्। (नञ् असह्य सु) 'नलोपो नञ्'[62] सूत्र सूत्र से 'नञ् समास'।

74. **मुष्टिपीडम्**–मुष्टिना पीड़ा यस्मिन् इति मुष्टिपीडम्। (मुष्टि टा पीडा सु) 'उपपदमतिङ्'[63] सूत्र से 'उपपद समास'।

75. **रघुसिहे**–रघुषु सिंहो इति रघुसिंहः तस्मिन्। (रघु सुप्, सिंह सु) 'सप्तमी तत्पुरुष'[64] समास।

76. **गुरुशोकात्**–गुरुश्चासौ शोको इति गुरूशोकः। (गुरू सु शोक सु) 'तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः'[65] सूत्र से 'कर्मधारय समास'। तस्मात् गुरूशोकात्।

अथ .... **पक्षिणाश्चाऽनुकूलाः।। 27।।**

77. **अनीचः**–न नीचैः इति अनीचैः। (नञ् नीचै सु) 'नलोपो नञ्'[66] सूत्र से 'नञ् समास'।

78. **अभिमतफलशंसी**–अभिमतं च तत् फलम् इति अभिमतफलम्। (अभिमत सु फल सु) 'तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः' सूत्र से 'कर्मधारय समास'। अभिमफलं तत् शंसतीति। (अभिमतफल सु, शंस सु) 'उपपदमतिङ्'[67] सूत्र से उपपद समास।

द्वितीयः सर्गः

तरङ्गसङ्गाच्चपलैः .... षट्पदानि।।12।।

79. **तरङ्गसङ्गात्**–तरङ्गाणां सङ्गः इति तरङ्गसङ्ग।। (तरङ्ग आम्, सङ्ग सु) 'षष्ठी'[68] सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष'[69] समास। तस्मात् तरङ्गसङ्गात्।

80. **साऽतिशयाम्**–अतिशयेन सहिता इति साऽतिशया। (अतिशय टा सह) 'तेन सहेति तुल्ययोगे'[70] सूत्र से 'बहुब्रीहि समास'।

81. **ज्वालाश्रियम्**–ज्वालायाः श्रीः इति ज्वालाश्रीः, ताम्। (ज्वाला + ङस्, श्री+सु) 'षष्ठी'[71] सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

82. **आकुलषट्पदानि**–षट्पदानि येषां ते इति षट्पदाः। (षट्+सु, पद्+जस्) 'अनेकमन्यपदार्थे'[72] सूत्र से 'बहुब्रीहि समास'। आकुलाः षट्पदा येषु तानि इति आकुलषट्पदा (आकुल जस्, षट् पद जस्) 'अनेकमन्यपदार्थेः' सूत्र से 'बहुब्रीहि समास'।

83. **सधूमदीप्ताऽग्निरूचीनि**–धूमेन सहितः इति सधूमः। (धूम टा सह) 'तेन सहेति तुल्ययोगे'[73] सूत्र से 'बहुब्रीहि समास'। दीप्तश्चाऽसौ अग्निः इति दीप्ताग्निः। (दीप्त सु अग्नि सु) सधूमश्चाऽसौ दीप्ताऽग्निः इति सधूमदीप्ताऽग्निः (सधूमसु दीप्ताग्नि सु) कर्मधारय समास। सधूमदीप्ताऽग्नि रूचिः येषाः तानि इति सधूमदीप्ताऽग्निरूचीनि (सधूमदीप्ताऽग्नि सु, रूचि सु) 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से 'बहुब्रीहि समास'।

84. **ताम्रोत्पलानि**–ताम्राणि च तानि उत्पलानि इति ताम्रोत्पलानि। (ताम्र जस्, उत्पल जस्) 'विशेषणं विशेष्येण बहुलम्'[74] सूत्र से 'कर्मधारय समास'।

बिम्बागतैस्तीरवनैः .... स्थलपद्महासैः।।4।।

85. **बिम्बागतैः**–बिम्बेन आगतानि इति बिम्बागतैः। (बिम्ब टा, आगत सु) 'कर्तृकरणे कृता बहुलम्'[75] सूत्र से 'तृतीया तत्पुरुष' समास।

86. **तीरवनैः**–तीरेषु यानि वनानि इति तीरवनानि, तैः (तीर सुप्, वन जस्) 'सप्तमी तत्पुरुष'[76] समास।

87. **साऽमर्षतया**–अमर्षेण सह वर्तन्ते इति। साऽमर्षाणि। (अमर्ष टा सह) 'तेन सहेति तुल्ययोगे'[77] सूत्र से 'बहुब्रीहि समास'।

88. **स्थलपद्महासैः**–स्थलस्य पद्मानि इति स्थलपद्मानि। (स्थल ङस्, पद्म जस्) तेषां हासाः इति स्थलपद्माहसैः। (स्थलपद्म ङस्, हास जस्) 'षष्ठी'[78] सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

89. **सरोजलक्ष्मीम्**–सरोजानां लक्ष्मीः इति सरोजलक्षमी। (सरोज आम्, लक्ष्मीं सु) 'षष्ठी'[79] सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

निशातुषारैर्नयनाऽम्बुकल्पैः .... तीरतरूर्दिनादौ।। 14।।

90. **दिनादौ**–दिनस्य आदिः इति दिनादिः। (दिन ङस्, आदि सु) 'षष्ठी'[80] सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

91. **नयनाऽम्बुकल्पैः**–नयनयोः अम्बूनि इति नयनाऽम्बुनि। (नयन ओस्, अम्बु सु) 'षष्ठी'[81] सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास। तैः नयनाऽम्बुकल्पैः।

92. **नदत्पतङ्ग**–नदन्तः पतङ्गाः इति नदत्पतङ्गः। (नदत सु पतङ्ग जस्) 'अनेकमन्यपदार्थे'[82] सूत्र से 'बहुब्रीहि समास'।

93. **तीरतरूः**–तीरस्य तरूः इति तीरतरूः। (तीर ङस्, तरू सु) 'षष्ठी'[83] सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

वनानि .... लक्ष्मीमालोकयाञ्चुकरिवारेण।। 5।।

94. **निलीनभृङ्गैः**–निलीनाः भृङ्गाः येषु तै निलीनभृङ्गैः। (निलीन जस्, भृङ्ग जस्) 'अनेकमन्यपदार्थे'[84] सूत्र से 'बहुब्रीहि समास'।

प्रभातवाताहतिकम्पिताकृतिः .... अन्यसङ्गमम्।। 6।।

95. **प्रभातवाताहतिकम्पिताकृतिः**–प्रभातवाताहत्या कम्पिताऽऽकृतिः यस्याः सा इति प्रभातवाताहतिकम्पिताकृतिः। (प्रभातवाताहत् टा कम्पिताऽऽकृति सु) 'अनेकमन्यपदार्थे'[85] सूत्र से 'बहुब्रीहि समास'।

96. **कुमुद्वतीरेणुपिशङ्गविग्रहम्**–कुमुद्वतीरेणुभिः पिशङ्गविग्रहः इति कुमुद्वतीरेणु पिशङ्ग विग्रहम्। (कुमुद्वतीरेणु भिस्, पिशङ्गविग्रह सु) 'कर्तृकरणे कृता बहुलम्'[86] सूत्र से 'तृतीया तत्पुरुष' समास।

97. **अन्यसङ्गमम्**–अन्यया सङ्गमः इति अन्यसङ्गमस्तम्। (अत्य टा, सङ्गम सु) 'कर्तृकरणे कृता बहुलम्'[87] सूत्र से 'तृतीया तत्पुरुष' समास।

दत्तावधानं .... मृगावित् ।। 7।।

98. **दत्तवधानम्**–दत्तम् अवधानम् ये सः। (दत + सु, अवधान सु) 'अनेकमन्यपदार्थः'[88] सूत्र से 'बहुब्रीहि समास'।

99. **मधुलेहिगीतौ**–मधुलेहिनांम् गीतिः। (मधुलेहि + आम् गीति + सु) 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष समास'।

100. **प्रशान्तचेष्टम्**–प्रशान्ता चेष्टा यस्य सः। 'अनेकमन्यपदार्थः'[89] सूत्र से बहुवचन सप्तमी। द्वितीया एकवचन।

101. **उत्सुकहंसनादान्**–उत्सुकाश्च ते हंसाः–उत्सुकहंसा कर्मधारय, उत्सुकहंसानाम् नादा, उत्सुकहंसनादा ष.त.स.। द्वितीय बहुवचन।

गिरेनितम्बे मरुता .... लक्ष्मीम् ।।8।।

102. **तोयावशेषेण**–तोयानाम् अवशेषः (तोय + आम्, अवशेष + सु) 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष'[90] समास।

103. **हिमाभम्**–हिमस्य एव आभा यस्य तत्। 'अनेकमन्यपदार्थे'[91] सूत्र से 'बहुब्रीहि समास'।

104. **सरिन्मुखाऽभ्युच्चयम्**–सरितां मुखानि इति सरिन्मुखानि (सरिता आम्, मुख जस्) 'षष्ठी तत्पुरुष'[92] समास। सरिन्मुखेषु अभ्युच्चयः (सरिन्मुख + सुप्, अभ्युच्चय सु) सप्तमी तत्पुरुष समास।

105. **शैलाधिपस्य**–शैलानाम् अधिपः (शैल + आम्, अधिप + सु) शैलाधिप 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष'[93] समास। षष्ठी एकवचन।

गर्जन् हरिः साऽम्भसि .... मृगेन्द्रनादान्। ।।9।।

106. **साम्भसि**–अम्भसा सहिताः इति साऽम्भाः। (अम्भस् , टा + सह) 'अनेकमन्यपदार्थ'[94] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

107. **शैलकुञ्जे**–शैलस्य कुञ्जः। (शैल + ङस्, कुञ्ज + सु) 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष'[95] समास।

108. **आत्मकृतान्**–आत्मना कृताः। (आत्मन् + टा , कृत + जस्) 'कर्तृकरणे कृता बहुलम्'[96] सूत्र से तृतीया तत्पुरुष समास। तान्।

109. **सकोपः**–कोपेन सहितः। 'तेन सहेति तुल्ययोगे'[97] सूत्र से 'बहुब्रीहि समास'। (कोप + टा + सह)।

110. **अन्यमृगेन्द्रनादान्**–मृगेषु इन्द्रः इति मृगेन्द्रः। (मृग + सुप इन्द्र + सु) 'सप्तमी तत्पुरुष'[98] समास अन्यश्चासौ मृगेन्द्रः इति। (अन्य + सु मृगेन्द्र + सु) 'तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः' सूत्र से कर्मधारय समास। अन्यमृगेन्द्रस्य नादाः इति (अन्यमृगेन्द्रङस्, नादा सु) 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

अदृक्षताऽभांसि .... व्यतिषङ्गवांश्च।।10।।

111. **नवोत्पलानि**–नवानि उत्पलानि येषु तानि। (नव + जस्, उत्पल + जस्) 'अनेकमन्यपदार्थे'[99] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

112. **षट्पदानाम्**–षट् पदानि येषां ते (षट + जस्, पद + जस्) बहुब्रीहि समास। षटपदाः तेषाम्।

113. **सुगन्धः**–शोभनः गन्धः यस्य सः। 'अनेकमन्यपदार्थे'[100] सूत्र से बहुब्रीहि समास।।

114. **अरविन्दव्यतिषङ्गवान्**–अरविन्दानाम् व्यतिषङ्गः इति अरविन्दव्यतिषङ्गः। (अरविन्द + आम्, व्यतिषङ्ग + सुः) 'षष्ठी'[101] सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

लताऽनुपातं कुसुमान्यगृह्णात् .... **आस्त् ।। 11 ।।**

115. **चारूशिलोपवेशम्**–चारूश्चाऽसौ शिला। (चारू सु, शिला सु) 'तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः'[102] सूत्र से कर्मधारय समास।

तिग्मांऽशुरश्मि .... **संभृतानि ।। 12 ।।**

116. **तिग्मांऽशुरश्मिच्छुरितानि**–तिग्माः अंशः यस्य सः तिग्मांशु। (तिग्म + जस् , अंशु + जस्) 'अनेकमन्यपदार्थे'[103] सूत्र से बहुब्रीहि समास तिग्मांशोः रश्मयः इति तिग्मांऽशुरश्मयः षष्ठी तत्पुरुष समास।

117. **अदूरात्**–न दूरम् अदूरम् तस्मात्। (नञ् अदूर सु) 'नलोपो नञ्'[104] सूत्र से नञ् तत्पुरुष समास।

118. **गभस्तिधाराभिः** – गभस्तीनाम् धारा 'षष्ठी सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास। (गभस्ति + आम् धारा + भिस्)।

दिव्यापिनी .... **वितृणाऽन्तरालाः ।। 13 ।।**

119. **लोचनलोभनीयाः**–लोचनानां लोभनीयाः (लोचन + आम् लोभनीय + जस्) 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

120. **मृजान्वयाः** – मृजया अन्वयः यासां ताः। (मृजा + जस् अन्वय + जस) 'अनेकमन्यपदार्थे सूत्र से बहुब्रीहि समास।

121. **ऋज्वायताः**–ऋजवः च ता आयताश्च (ऋजु + जस्, आयत + जस्) 'तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः' सूत्र से कर्मधारय समास।

122. **वितृणान्तरालाः**–विगतानि तृणानि येभ्यः तानि वितृणानि। (विगत + जस्, तृण + जस्) 'प्रादिभ्यो धातुजस्य वाच्यो वा चोत्तरपदलोपः' सूत्र से बहुब्रीहि समास।

123. **वितृणानि**–अन्तरालानि यासां ताः (वितृण + जस्, अन्तराल + जस्) 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से बहुब्रीहि समास।

124. **सस्यविशेषपङ्क्ती**–सस्यानाम् विशेषाः इति सस्यविशेषः। (सस्य + आम् विशेष + जस्) 'षष्ठो'[105] सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास। सस्यविशेषाम् पंकयः (सस्यविशेष + आम्, पंकी + जस्) 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

वियोगदुःखाऽनुभव .... **गोष्ठान् ।। 14 ।।**

125. **वियोगदुःखाऽनुभवाऽनभिज्ञैः**–वियोगेन दुःखम् (वियाग + टा, दुःख + सु) 'तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन'[106] सूत्र से 'तृतीया तत्पुरुष' समास। वियोगदुःखस्य अनुभवः (षष्ठी तत्पुरुष समास)।

न अभिज्ञा इति अनभिज्ञाः नञ् तत्पुरुष समास। वियोगदुःखाऽनुभवे अनभिज्ञाः–(वियोगदुःखाऽनुभव + ङि. अनभिज्ञ + जस्) वियोगदुःखानुभवानुभिज्ञाः–तैः। सप्तमी तत्पुरुष समास।

126. **नृपाऽशं**–नृपस्य अंशः इति नृपाऽशः (नृप + ङस् , अंशु + सु) 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष'[107] समास।

127. **आहार्यशोभारहितैः**–आहार्या चाऽसौ शोभा। कर्मधारय समास। आहार्यशोभया रहिता (आहार्यशोभा टा, रहित जस्) 'तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन' सूत्र से तृतीया तत्पुरुष समास। आहार्यशोभारहिता तैः।

स्त्रीभूषणं .... विलोक्य ।। 15 ।।

128. **स्त्रीभूषणम्**–स्त्रीणाम् भूषणम् (स्त्री + आम् , भूषण + सु) 'षष्ठी' 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष'[108] समास।

129. **अप्रगल्भम्** – न प्रगल्भम् इति अप्रगल्भम्। (नञ् अप्रगल्भ सु) 'न लोपो नञ्'[109] सूत्र से 'नञ्' समास।

130. **अचक्राणि**–न चक्राणि इति अचक्राणि। (नञ् , अचक्र जस्) 'नलोपो नञ्'[110] सूत्र से नञ् तत्पुरुष समास।

131. **गोपांङ्गनानाम्**–गोपानाम् अंगना (गोपा + आम्, अंगना + सु) 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

विवृत्तपार्श्वं ....अनन्दयत्तम् ।। 16 ।।

132. **विवृत्तपार्श्वं**–विवृत्ते पार्श्वे यस्मिन् तत् इति विवृत्तपार्श्वं। (विवृत ङि, पार्श्व ङि)। 'अनेकमन्यपदार्थे'[111] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

133. **रुचिरांहकारम्**–रुचिरः अहंकारः यस्मिन् तत्। बहुब्रीहि समास।

134. **समुद्रहचारुनित्तम्बरम्यँ**–चारूः च असौ नितम्बश्च (चारू + सु नितम्ब + सु) विशेषणं विशेष्येण बहुलम् सूत्र से कर्मधारय समास। समुद्वहंश्चासौ चारूनितम्बः कर्मधारय समास। समुद्वहंचारुनितम्बः। समुद्वहंचारुनितम्बेन रम्यम्। 'तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन'[112] से तृतीया तत्पुरुष समास।

135. **आमन्द्रः**–ईषद् मन्द्रः इति आमन्द्रः। 'कुगतिप्रादयः' सूत्र से प्रादितत्पुरुषः समास।

136. **मन्थध्वनिः**–मन्थस्य ध्वनिः (मन्थ + ङस् ध्वनि + सु) 'षष्ठी'[113] सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

137. **दत्ततालम्**–दन्तः तालः यस्मिन् तत्। 'अनेकमन्यपदार्थे'[114] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

138. **आमन्द्रमन्थध्वचनिदत्ततालम्**–आमन्द्रमन्थध्वनिना दत्ततालम्। 'तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन'[115] सूत्र से 'तृतीया तत्पुरुष' समास।

139. **गोपाऽङ्गनानृत्यम्**-गोपानाम् अंगना इति गोपाऽङ्गनाः। (गोप आम्, अङ्गना सु) 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष'[116] समास। गोपाऽङ्गनानाम् नृत्यम् इति गोपाऽङ्गनानृत्यम्। 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

विचित्रमुच्चैः .... मृगाणाम्।। 17।।

140. **विचित्रम्**-विशेषेण चित्रम् इति विचित्रम्। 'सहसुपा' सूत्र से 'सुप्सुपा समास'।

141. **मेघात्ययः**-मेघानाम् अत्ययः (मेघ + आम्, अव्यय + सु) 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

142. **वनोपशोभे**-वनं च उपशोभा च 'चाऽर्थे द्वन्द्व' सूत्र से द्वन्द्व समास।

143. **मेघात्ययोपात्ते**-मेघात्ययेन उपात्ते (मेघात्यय + टा, उपात्ते + सु) 'तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन' सूत्र से 'तृतीया तत्पुरुष' समास।

144. **मेघात्ययोपात्ते**-वनोपशोभे येन तत् 'तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन' सूत्र से 'तृतीया तत्पुरुष' समास। इति मेधात्ययापात्तवनोपशोभम्।

सितारविन्दप्रचयेषु .... श्रोत्र सुखै र्निनादैः ।। 18।।

145. **सितारविन्दप्रचयेषु**-सितानि च तानि अरविन्दानि। (सिता + जस्, अरविन्द + जस्) 'तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः'[117] सूत्र से कर्मधारय समास। सितारविन्दानाम् प्रचयाः (सितारविनद + आम्, प्रचय + जस्) 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

146. **संसक्तफेनेषु**-संसक्ताः फेनाः येषु तानि। (संसक्त + जस्, फेन + जस्) 'अनेकमन्यपदार्थे''[118] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

147. **कुन्दावदात्ताः**-कुन्दानि इव अवदाताः। (कुन्द + जस्, अवदात + जस्) 'उपमानानि सामान्यवचनै'[119] सूत्र से कर्मधारय समास।

148. **कलहंसमालाः**-कलहंसानाम् मालाः। (कलहंस + आम् , माला + जस्) 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

149. **श्रौत्रसुखैः**-श्रोत्रयोः सुखाः। (श्रोत्र + ओस् , सुखा + जस्) 'षष्ठी'[120] सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

न तज्जलं .... यन्मनः ।। 19।।

150. **सुचारूपंङ्कजम्**-अत्यंतं चारू इति- सुचारूः। 'कुगतिप्रादयः'[121] सूत्र से प्रादि समास। सुचारू पंकजम् यस्मिन् तत्। 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से बहुब्रीहि समास।

151. **अलीनषट्पदम्**-न लीनाः इति। अलीनाः (नञ् अलीना सु) सूत्र से 'नञ् तत्पुरुष'[122] समास। अलीनाः षट्पदा यस्मिन् इति। (अलीन जस्, षट्पद जस) 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से बहुब्रीहि समास।

तं यायजूकाः .... जगदर्चनीयम् ।। 20 ।।

152. **भिक्षुमुख्यैः**-भिक्षुषु मुख्याः। (भिक्षु + सुप्, मुख्य + जस्) 'यतश्च निर्द्धारणम्' सूत्र से 'सप्तमी तत्पुरुष' समास।

153. **तपः कृशाः**-तपसा कृशाः (तपस् + टाप् , कृश + जस्)। 'तृतीया तत्कृतार्थे गुणवचनेन' सूत्र से 'तृतीया तत्पुरुष' समास।

154. **शान्त्युदकुम्भहस्ताः**-उदकस्य कुम्भः (उदक + ङस्, कुम्भ + सु) 'एकहलादौ पूरयितव्येऽन्यतरस्याम्' से उदक को उद् आदेश। 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

155. **शान्त्यर्थंउद्कुम्भः**-'शाकपार्थिवादीनां सिद्धय उत्तरपद-लोपस्योपसंख्यानम् वार्तिक से मध्यपदीलोपी लोप तत्पुरुष समास। शान्त्युदकुम्भः हस्ते येषां ते। इति शान्त्युदकुम्भहस्ताः। 'अनेकमन्यपदार्थे'[123] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

विद्यामथैनं विजयां .... यातुधानान् ।। 21 ।।

156. **रक्षोगणम्**-रक्षसाम् गणः इति। (रक्षस् + आम्, गण + सु) 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष'[124] समास।

157. **अविक्षतात्मा**-न विक्षत इति। अविक्षतः। नञ् तत्पुरुष समास। अविक्षत आत्मा यस्म सः (अविक्षत सु, आत्मा सु) 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से बहुब्रीहि समास।

158. **गाधिसुतः**-गाधेः सुतः इति। (गाधि + ङस्, सुत + सु) 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

आयोधने... श्रेयसि जागरूकः ।। 22 ।।

159. **अस्रजातम्**-अस्रणाम् जातम् (अस्र + आम्, जात + सु) 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष'[125] समास।

160. **अमोघम्**-न मोघम् इति अमोघम्। (नञ् अमोघ सु) 'नलोपो नञ्' सूत्र से नञ् तत्पुरुष समास।

161. **महाहवाय** - महान् च असौ आहवः इति। (महत् + सु, आहव + सु) 'सन्महत्परमोत्कृष्टाः पूज्यमानैः' सूत्र से कर्मधारय समास। 'आन्महवः समानाधिकरणजातीययोः' से महत् को आत्वम् तस्मै।

162. **अभ्यर्णमहाहवाय**-'अभ्यर्णो महाहवः यस्य सः' इति। 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से बहुब्रीहि समास।

तं विप्रदर्शं .... निजघान रामः ।। 23 ।।

163. **कृतघातयत्ना**-घातस्य यत्नो। (घात + ङस्, यत्न + सु) 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष'[126] समास। कृत घातयत्नो यया सा। 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से बहुब्रीहि समास।

164. **रात्रिचरी**-रात्रौ चरति-'उपपदमतिङ'[127] सूत्र से उपपद तत्पुरुष समास।

165. **घृतभासुरास्त्रम्**-घृतं भासुरम् अस्त्रं येन सः।

166. **ताडकाख्याम्**-ताडका आख्या यस्याः सा। 'अनेकमन्यपदार्थे'[128] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

अथाऽऽलुलोके .... चारूपतत्त्रिशिञ्जम् ।।24।।

167. **धूमकेतुः**–धूमः केतुः यस्य सः। (धूम + सु, केतु + सु.) 'अनेकमन्यपदार्थे'[129] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

168. **हूतधूमकेतु**–हुतश्च असौ धूमकेतुः।'विशेषणं विशेष्येण बहुलम्'[130] सूत्र से कर्मधारय समास।

169. **हुतधूमकेतुशिखाः**–हुतधूमकेतोः शिखाः।'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

170. **हुतधूमकेतुशिखाञ्जनानि**–हुतधूमकेतु शिखानाम् अञ्जनानि। 'षष्ठी'[131] सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

171. **हुतधूमकेतुशिखाञ्जनास्निग्धसमृद्धशाखम्**–हुतधूमकतुशिखाञ्जनस्निग्धाः समृद्धाः शाखाः यस्य तत्।'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से बहुब्रीहि समास।

172. **प्राध्ययनम्**–प्रकृष्टम् अध्ययनम्। (प्र–अध्ययन सु) 'कुगतिप्रादयः' सूत्र से 'प्रादि तत्पुरुष' समास।

173. **तपोवनम्**–तपसो वनम्। (तपस् + ङस, वन + सु)।'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

क्षुद्रान्न जक्षुर्हरिणान् .... लता विलोलाः ।।25।।

174. **मृगेन्द्राः**–मृगेषु इन्द्रः (मृग + सुप्, इन्द्र + जस्) 'सप्तमी तत्पुरुष' समास।

175. **पक्षिगणैः**–पक्षिणाम् गणाः। (पक्षि + आम्, गणा + जस) 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

176. **विलोलाः**–विशेषेण लोलाः इति विलोलाः।'सहसुपा' सूत्र से 'सुप्सुपा' समास।

अपूपुजन् .... क्षितिपालपुत्रौ ।।26।।

177. **विष्टरपाद्यमाल्यैः**–विष्टरश्च पाद्यं च माल्यं च इति विष्टरपाद्यमाल्यानि 'चाऽर्थे द्वन्द्वः'[132] सूत्र से 'द्वन्द्व समास।'

178. **आतिथ्यनिष्णाः**–आतिथ्ये निष्णाः। (आतिथ्य + ङि, निष्णा + जस्) 'सप्तमी तत्पुरुष समास।'

179. **वनवासिमुख्याः**–वनवासिषु मुख्याः। (वनवासि + सुप्, मुख्य + सु) 'सप्तमी तत्पुरुष समास।'

180. **क्षितिपालपुत्रौ**–क्षितिपालस्य पुत्रौ। (क्षितिपाल + ङस्, पुत्र + औ) 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

181. **मधुपर्कमिश्रम्**–मधुपर्केण मिश्रम्। (मधुपर्क टा, मिश्र सु) 'तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन' सूत्र से 'तृतीया तत्पुरुष' समास।

182. **आसनादि**–आसनम् आदिः यस्य तत् आसनादि। (आसन सु, आदि सु) 'अनेकमन्यपदार्थे'[133] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

दैत्याऽभिभूतस्य .... अभाषिषाताम् ।।27।।

183. **दैत्याभिभूतस्य**–दैत्यैः अभिभूतम् (दैत्य + भिस्, अभिभूत + सु) तस्य। 'तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन' सूत्र से 'तृतीया तत्पुरुष' समास।

184. **तपोधनैः** – तप एव धन येषां ते इति तपोधना: तैः। 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से बहुब्रीहि समास।

तान् प्रत्यवादीदथ .... नोऽरिसमिन्धनेषु ।। 28 ।।

185. **यथेप्सितम्**–ईप्सितम् अनतिक्रम्य इति। (ईप्सित + सु + यथा) 'अव्ययं विभक्तिसमीपसमृद्धिव्यद्धयर्थाऽभावात्ययाऽसम्प्रतिशब्दप्रादुर्भावपश्चाद्यथाऽऽनुपूर्व्ययौगपद्यसादृश्यसम्पतिसाकल्याऽन्तवचनेषु' सूत्र से अव्ययीभाव समास

186. **तपोमरुद्भिः**–तपांसि एव मरुतः इति। (तपस् जस्, मरुत + जस्) 'मयूरव्ंसकादयश्च' सूत्र से रूपक (तत्पुरुष) समास।

187. **शराग्निः**–शरः एव अग्निः इति। (शर् सु, अग्नि सु) 'मयूरव्यंसकादयश्च' सूत्र से 'रूपक' समास।

188. **अरिसमिन्धनेषु** – अरयः एव समिन्धनानि : अरिसमिन्धनानि, तेषु। 'मयूरव्यंसकादायश्च'[134] सूत्र से रूपक समास।

प्रतुष्टुवुः कर्म .... प्रसर्पत् ।। 29 ।।

189. **प्रक्लृप्तैः**–प्रकर्षेण क्लृप्ताः तैः। 'सहसुपा' सूत्र से 'सुप्सुपा' समास।

190. **द्रव्यगणैः**–द्रव्याणाम् गणाः। (द्रव्य + आम्, गण + जस्) तैः। 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

191. **दक्षिण्यदिष्टम्**–दक्षिण्यैः दिष्टम् इति। (दक्षिण्य + भिस्, दिष्ट + सु) 'कर्तृकरणेकृता बहुलम' सूत्र से 'तृतीया तत्पुरुष' समास।

आपिङ्गरुक्षोर्ध्व .... चाऽनशेऽब्दैः ।। 30 ।।

192. **आपिंङ्गरूक्षोर्ध्वशिरस्यबालैः**–आपिंङ्गाः रूक्षाः ऊर्ध्वाः शिरस्यबाला येषां ते। 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से बहुब्रीहि समास।

193. **शिरालजंङ्घैः** – शिरालाः जंङ्घाः येषाम् ते इति। शिरालजंङ्घाः तैः। 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से बहुब्रीहि समास।

194. **गिरिकूटः**–गिरेः कुटः। (गिरि + ङस्, कुट + सु) 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

195. **पृथुपिंङ्गलाक्षैः**–पृथूनि पिङ्गलानि अक्षीणि येषां ते। बहुब्रीहि समास। 'बहुव्रीहौ सक्थ्यक्ष्णोः स्वाऽङ्गात्षच्' से षच् प्रत्यय।

अधिज्यचापः .... शुद्धेषुरमन्दकर्षी ।। 31 ।।

196. **अधिज्यचापः**–अधिज्यः चापः यस्य सः इति। 'अनेकमन्यपदार्थे'[135] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

197. **अधिज्यः**–ज्याम् अधिगतः इति। 'अत्यादयः क्रान्ताद्यर्थे द्वितीयया' सूत्र से प्रादि तत्पुरुष समास।

198. **स्थिरबाहुमुष्टिः**–बाहुश्च मुष्टिश्च इति। बाहुमुष्टिः। 'द्वन्द्वश्च प्राणितूर्यसेनाङ्गानाम्' सूत्र से 'द्वन्द्व' समास। स्थिरं बाहुमुष्टिः यस्य सः। बहुब्रीहि समास।

199. **उदञ्चिताक्षः** – ऊर्ध्वम् अञ्चिते इति उदञ्चिते। 'सह सुपा' सूत्र से सुप्सुपा समास। उदञ्चिते अक्षिणी यस्य सः इति उदञ्चिताक्षः। बहुब्रीहि समास।

200. **अञ्चितदक्षिणोरूः**–अञ्चितः दक्षिणोरू यस्य सः। 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से बहुब्रीहि समास।

201. **सन्नतवामजंङ्घ** – सम्यक् नता इति सन्नता। प्रादितत्पुरुष समास। वामा चाऽसौ जङ्घा इति वामजंघा। कर्मधारय समास। सन्नता वामजंघा यस्य सः इति। सन्नतवामजङ्घः। 'अनेकमन्यपदार्थे'[136] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

202. **शुद्धेषुः** – शुद्धाः इषवः यस्य सः । 'अनेकमन्यपदार्थे'[137] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

गाधेयदिष्टं .... **महार्थम् ।।32।।**

203. **गाधेयदिष्टम्**–गाधेयेन दिष्टः इति 'कर्तृकरणे कृता बहुलम्'[138] सूत्र से (गाधेय + टा, दिष्ट + सु) 'तृतीया तत्पुरुष' समास।

204. **विरसम्**–विगतः रसः यस्मात् तत् इति। 'अनेकमन्यपदार्थे'[139] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

205. **स्मरेमुखः**–स्मेरम मुखं यस्य सः इति। 'अनेकमन्यपदार्थे'[140] सूत्र से बहुब्रीहि समास। – **महार्थम्**– महान् अर्थो यस्य तत् इति। 'अनेकमन्यपदार्थे'[141] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

अह्नो द्विजान् .... **वेदवृत्ते ।।34।।**

206. **प्रेतनराऽधिवासम्**–प्रेताश्च ते नराः (प्रेत + जस्, नर + जस्) 'विशेषणं विशेष्येण बहुलम्'[142] सूत्र से कर्मधारय समास। प्रेतनराणाम् अधिवासः इति। (प्रेतनर + आम्, अधिवास + सु) 'षष्ठी' सूत्र स 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

207. **वेदवृत्ते**–वेदविहितं वृतं इति। 'मध्यमपद लोपी'[143] तत्पुरुष समास।

धर्मोऽस्ति .... धृतकार्मुकेषुः ।।35।।

208. **राजन्यवृतिः** – राजन्यस्य वृत्तिः यस्य सः। 'अनेकमन्यपदार्थे'[144] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

209. **धृतकार्मुकेषवः** – कार्मुकं च इषवश्च इति। (कार्मुक अम्, इषव सु)। 'चाऽर्थेद्वन्द्वः'[145] सूत्र से 'द्वन्द्व समास'। धृताः कार्मुकेषवः येन सः इति धृतकार्मुकेषवः। बहुब्रीहि समास।

इत्थंप्रवादं .... प्रधनान्निरास्थत् ।।36।।

210. **रामनिशाविहारौ**–निशायां विहारः यस्य सः। (निशा + ङि, विहारसु) बहुब्रीहि समास। रामश्च निशाविहारश्च। (राम सु, निशाविहार सु) 'चाऽर्थे द्वन्द्वः'[146] सूत्र से द्वन्द्व समास।

211. **इत्थंप्रवादम्** – इत्थं प्रवादः यस्मिन् सः। 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से बहुब्रीहि समास।

212. **रघुनन्दनः**–रघूणां नन्दनः। (रघु + आम् , नन्दन + सु)। 'षष्ठी'[147] सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

जग्मुः प्रसादं .... **मुनिना कुमारः ।।37।।**

213. **द्विजमानसानि** – द्विजानां मानसानि। (द्विज + आम्, मानस + जस्)। 'षष्ठी'[148] सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

214. **पुष्पचयम्**–पुष्पाणाम् चयः। (पुष्प + आम्, चय + सु) 'षष्ठी'[149] सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

215. **निर्व्याजम्**–निर्गतः व्याजः यस्मात् तत् इति। 'अनेकमन्यपदार्थे'[150] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

महीय्यमाना .... न भूमिः ।। 38 ।।

216. **सुराऽध्वरे**–सुराणाम् अध्वरः इति। (सुर + आम् अध्वर + सु) सुराध्वरः तस्मिन्। 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष'[151] समास।

217. **घस्मरजित्वरेण**–घस्मराणाम् जित्वरः (घस्मर + आम्, जित्वर + सु) तन। 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष'[152] समास।

218. **अतिमात्रम्**–अतिक्रान्तम् मात्राम् (अति–मात्रा + अम्) 'अत्यादयः क्रान्ताद्यर्थे द्वितीयया'[153] सूत्र से प्रादि समास।

219. **वज्रायुधभूषणायाः** – वज्रायुधः भूषणम् यस्याः सा वज्रायुधभूषणा तस्याः। बहुब्रीहि समास। वज्रायुधः – वज्रम् आयुधम् यस्य सः। वज्रायुधः (बहुब्रीहि समास)

बलिर्बबन्धे .... गुरूर्न तस्य ।। 39 ।।

220. **दैत्यकुलम्**–दैत्यानाम् कुलम्। (दैत्य + आम्, कुल + सु)। 'षष्ठी'[154] सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

221. **कल्पाऽन्तदुःस्था**–कल्पस्य अन्तः इति कल्पान्तः। षष्ठी तत्पुरुष समास। कल्पान्ते दुःस्था (कल्पान्त + ङि, दुःस्था सु) 'सप्तमी तत्पुरुष'[155] समास।

222. **अतिगुरूः**– अत्यन्तं गुरूः। 'सहसुपा' सूत्र से 'सुप्सुपा' समास।

इति ब्रुवाणो मधुरम् .... निजिघृक्षयिष्यन् ।। 40 ।।

223. **मैथिलयज्ञभूमिम्** – मैथिलस्य यज्ञभूमिः। (मैथिल + ङस्, यज्ञभूमि + सु) 'षष्ठी'[156] सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

224. **यज्ञभूमिः**–यज्ञस्य भूमिः इति। 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष'[157] समास।

225. **मखान्ते**–मखस्य अन्तः इति। (मख + ङस्, अन्त + सु) 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष'[158] समास।

226. **प्रीतमनाः**–प्रीतं मनः यस्य सः इति। (प्रीत + अम्, मन + सु) 'अनेकमन्यपदार्थे'[159] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

इतः स्म .... नृसिंहौ ।। 41 ।।

227. **मित्रावरूणौ** – मित्रश्च वरुणश्च इति। चाऽर्थे द्वन्द्वः' सूत्र से द्वन्द्व समास।

228. **सोमरसम्**–सोमस्य रसः (सोम + ङस् रस + सु) 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष'[160] समास।

229. **नृसिंहौ**–नरौ सिहौ इव इति। (नृ + औ, सिंह + औ) 'उपमितं व्याघ्रादिभिः सामान्या प्रयोगे'[161] सूत्र से कर्मधारय समास।

230. **जनकाश्रमस्थम्**–जनकस्य आश्रमः। (जनक + ङस, आश्रम + सु) 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास। **जनकाश्रमे तिष्ठति**–सुपि स्थः सूत्र से 'स्थ' होकर 'जनकाश्रमस्थ' तम्।

अजिग्रहत्तं .... रघुनन्दनस्तत्।। 42।।

231. **दैत्यपुरम्**–दैत्यानाम् पुर इति। (दैत्य + आम्, पुर + सु) 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

ततो नदीष्णान् .... मैथिलमर्त्यमुख्यः ।। 43।।

232. **भूमिपतेः**–भूमेः पतिः (भूमि + ङ्स्, पति + सु)। षष्ठी तत्पुरुष समास।

233. **मैथिलमर्त्यमुख्यः** – मर्त्येषु मुख्यः इति। (मर्त्य + सप्, मुख्य + सु) सप्तमी तत्पुरुष समास। मैथिलः च असौ मर्त्यमुख्यः कर्मधारय समास।

क्षिप्रं .... मिथिलामगच्छत्।। 44।।

234. **अध्वन्यतुरंगः**–अध्वन्याश्च ते तुरंगाः। (अध्वन्यः + जस्, तुरंग + जस्) अध्वन्यतुरंगाः। 'तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः'[162] सूत्र से कर्मधारय समास।

235. **श्रुतसूनुवृत्तिः**– सूनोः वृतिः। (सूनु + ङस्, वृति + सु) षष्ठी तत्पुरुष समास। श्रुता सूनुवृत्तिः येन सः। 'अनेकमन्यपदार्थे'[163] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

वृन्दिष्ठं .... वरिष्ठम्।। 45।।

236. **वसुधाधिपानाम्**–वसुधायाः अधिपाः इति। (वसुधा + ङस्, अधिपा + जस्) 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष'[164] समास।

237. **सुकृताधिवासम्**–शोभनम् कृतम् इति। सुकृतम् (गति तत्पुरुष समास)। सुकृतस्य अधिवासः– (सुकृत + ङस्, अधिवासन सु) 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष'[165] समास।

त्रिवर्गपारीणमसौ .... बभासे ।। 46।।

238. **त्रिवर्गपारीणम्**–त्रयाणाम् वर्गः इति त्रिवर्गः। (त्रि + आम्, वर्ग + सु) 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष'[166] समास। त्रिवर्गस्य पारीणः (त्रिवर्ग + ङस्, पारीण + स) 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

हिरणमयी शाललतेव .... मैथिली ।। 47।।

239. **शाललता**–शालस्य लता। (शाल + ङस्, लता + सु) 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष'[167] समास।

240. **अचिरप्रभा**–न चिरम् इति अचिरम्। ('नलोपो नञ्' सूत्र से नञ् तत्पुरुष समास।) अचिरम् प्रभा यस्याः सा (बहुब्रीहि समास।)

241. **शशाङ्ककान्तेः**–शशः अङ्क : यस्य स शशाङ्क : (शश सु, अङ्क सु) 'अनेकमन्यपदार्थे'[168] सूत्र से बहुब्रीहि समास। **शशाङ्कस्य कान्तिः**–(शशाङ्क + ङस्, कान्ति + सु) तस्या। 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

242. **अधिदेवताऽऽकृतिः**–अधिष्ठात्री देवता इति 'प्रादयो गताद्यर्थे प्रथमया' सूत्र से प्रादि तत्पुरुष समास। अधिदेवतायाः इव आकृतिः यस्याः सा। व्यधिकरण बहुब्रीहि समास।

लब्ध्वां ततो .... रघुवर्ग्यलक्ष्मीम्।।48।।

243. **विश्वजनीनवृत्तिः**–विश्वजनीना वृत्तिर्यस्य सः। (विश्वजनी + टा , वृति + सु) 'अनेकमन्यपदार्थे'[169] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

244. **सद्रत्नमुक्ताफलभर्मभूषा**–मुक्ताः फलानि इव इति, मुक्ताफलानि । 'उपमितं व्याघ्रादिभिः सामान्याप्रयोगे सूत्र से कर्मधारय समास। रत्नमुक्ताफलभर्माणि इति रत्नानि च मुक्ताफलानि च। चाऽर्थे द्वन्द्वः सूत्र से द्वन्द्व समास रत्नमुक्ताफलभर्मभूषा इति रत्नमुक्ताफलभर्मणाम् भूषा। 'षष्ठी'[170] सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास। सद्रत्नमुक्ताफलभर्मभूषा – सती रत्नमुक्ताफलभर्मभूषा यस्याः सा। 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से बहुब्रीहि समास।

245. **रघुवर्ग्यलक्ष्मीम्**–रघुवर्ग्या चाऽसौ लक्ष्मी इति। रधुवर्ग्यलक्ष्मी ताम् 'तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः'[171] सूत्र से कर्मधारय समास।

सुप्रातम् .... बलमध्वनीनम् ।।49।।

246. **सुप्रातम्** – शोभनं प्रातः यस्य तत् (शोभन सु, प्रात सु)। 'अनेकमन्यपदार्थे'[172] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

247. **आसादितसम्भदम्** – आसादितः सम्पदः येन सः (तम्)। (आसादित सु, सम्पद सु)। 'अनेकमन्यपदार्थे'[173] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

248. **अश्वीयराजन्यकहास्तिकाढ्यम्**–अश्वीयम् च राजन्यकम् च हास्तिकम् च इति। 'द्वन्द्वश्च प्राणितूर्यसेनागानाम्'[174] सूत्र से 'द्वन्द्व समास।' अश्वीयराजन्यकहास्तिकेन आढ्यम्। 'कर्तृकरणे कृता बहुलम्' सूत्र से तृतीया तत्पुरुष समास।

249. **सराजम्**–राज्ञा युगपत्। (सह राजन टा्) 'अव्ययंविभक्तिसमीप'[175] समृद्धिव्यद्धयर्थाभावात्यया–सम्प्रतिशब्दप्रादुर्भावपश्चाद्यथाऽऽनुपूर्व्ययोंगपद्यसादृश्यसम्पत्तिसाकल्यान्तवचनेषु' सूत्र से अव्ययीभाव समास।

250. **अभ्योध्यम्**–अयोध्याम् अभि इति। 'लक्षणनोऽभिप्रती आभिमुख्ये'[176] सूत्र से अव्ययी भाव समास।

विशङ्कटो वक्षसि .... जामदग्न्यः ।।50।।

251. **बाणपाणिः**–बाणः पाणौ यस्य सः इति। 'अनेकमन्यपदार्थे'[177] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

252. **सम्पन्नतालः** – सम्पन्नः च असौ तालः इति। सम्पन्नतालः। 'तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः'[178] सूत्र से कर्मधरय समास।

253. **उपजान्वरत्नि**–जानुनोः समीपम् उपजानु। 'अव्ययंविभक्तिसमीपसमृद्धिव्यृद्ध्यर्थाभावात्ययासम्प्रतिशब्दप्रादुर्भावपश्चाद्यथाऽऽनुपूर्व्ययोंगपद्यसादृश्यसम्पत्तिसाकल्यान्तवचनेषु' सूत्र से अव्ययीभाव समास। उपजानु अरत्नि यस्य सः। 'अनेकमन्यपदार्थे'[179] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

उच्चैरर्सो .... अनुनिनीषरूचे ।। 51 ।।

254. **सबाणम्**–बाणेन सहितम् सबाणम् तत्। 'तेन सहेति तुल्ययोगे'[180] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

255. **प्रियसन्ततिः** – प्रिया सन्ततिः यस्य सः। 'अनेकमन्यपदार्थे'[181] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

256. **क्षितीन्द्रः** – क्षितेः इन्द्रः इति। (क्षिति + ङस्, इन्द्र + सु) 'षष्ठी'[182] सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

अनेकशोः .... राम! रामे ।। 52 ।।

257. **अनेकशः**– न एकशः अनेकशः इति। 'नलोपो नञ्' सूत्र से 'नञ्'[183] तत्पुरुष समास।

258. **निर्जितराजकः**–निर्जितम् राजकम् येन सः इति। 'अनेकमन्यपदार्थे'[184] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

259. **नृपरक्ततोयैः**–नृपानाम् रक्तानि। षष्ठी तत्पुरुष समास। नृपरक्तानि एव तोयानि नृपरक्ततोयानि तै। 'मयूरव्यंसकादयश्च'[185] सूत्र से रूपक समास।

260. **असद्विपक्षम्**–विरुद्धः पक्षः, यस्या सः इति विपक्षः। 'अनेकमन्यपदार्थे'[186] सूत्र से बहुब्रीहि समास। न सन् असन् इति। 'नलोपो नञ्' सूत्र से 'नञ् तत्पुरुष' समास। स विपक्षः यस्य सः इति असद्विपक्षः तम्। 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से बहुब्रीहि समास।

अजीगणत् .... तस्य ।। 53 ।।

261. **गुरूबाणगर्भम्**–गुरूः च असौ बाणः इति गुरूबाणः। 'तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः'[187] सूत्र से कर्मधारय समास। गुरूबाणः, गर्भे यस्य तत्। 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से बहुब्रीहि समास।

जिते नृपाऽरौ–... मार्गान् ।। 54 ।।

262. **नृपाऽरौ**–नृपाणाम् अरिः इति 'नृपारिः'। (नृप + आम्, अरि + सु) 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष'[188] समास।

263. **अशनैः**–न शनैः इति। 'नलोपो नञ्' सूत्र से 'नञ् तत्पुरुष'[189] समास।

264. **अशङ्कम्** – अविद्यमाना शङ्का यस्मिन् तत्। 'नञोऽस्त्यर्थाना वाच्यो वा चोत्तरपदलोपः'[190] वार्तिक से 'नञ' समास।

265. **अनेकमुखानि**–न एकानि इति अनेकानि। 'नञ् तत्पुरुष समास' अनेकानि मुखानि येषाम् तानि 'अनेकमन्यपदार्थे'[191] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

अथ पुरुजवयो .... तूर्णमायादयोध्याम् ।।55।।

266. **पुरुजवयोगात्**–पुरुजवेन योगः इति, पुरुजवयोग तस्मात्। (पुरूजव टा, योग सु) 'तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन' सूत्र से 'तृतीया तत्पुरुष'[192] समास।

267. **दूरसंस्थम्**–दूरे संस्था यस्य तत् इति।'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से बहुब्रीहि समास।

268. **उर्वीविभागम्**–उर्व्याः विभागः इति (उर्वी + ङस्, विभाग + सु) 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष'[193] समास।

269. **अतिरयेण**–अत्यन्तम् रयः इति अतिश्येन।'सह सुपा' सूत्र से 'सुप्सुपा'[194] समास।

270. **अचेतत्**–न चेतत् इति।'नलोपो नञ्' सूत्र से 'नञ्'[195] समास।

271. **नीरजीकारितक्षमाम्** – निर्गतम् रजः यस्याः सा नीरजाः। (निर्गत सु, रज सु)। 'अनेकमन्यपदार्थे'[196] सूत्र से बहुब्रीहि समास। नीरजकारिता क्षमा यस्याम् सा इति नीरजीकारिताक्षमा ताम्। बहुब्रीहि समास।

तृतीय सर्ग

वधेन संख्ये .... नाऽऽसीत् ।।1।।

272. **पिशिताऽशनानाम्**–पिशितमशनम् येषाम् ते। (पिशित + सु, अशनम् + सु)।'अनेकमन्यपदार्थे'[197] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

273. **क्षत्रान्तकस्य**–क्षत्राणामन्तकः इति। (क्षत्र + आम्, अन्तक + सु) 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष'[198] समास।

ततः सुचेतीकृतपौरभृत्यो .... समनीचकार ।।2।।

274. **सुचेतीकृतपौरभृत्यः**–सुचेतीकृताः पौरा भृत्याश्च येन सः। (सुचेतीकृत + जस् पौराभृत्या + जस्)। 'अनेकमन्यपदार्थे'[199] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

275. **भूमिपतिः**–भूमेः पतिः। (भूमि + ङस्, पति + सु) 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष'[200] समास।

276. **अनीचैः**–न नीचैः इति।'नलोपो नञ्' सूत्र से 'नञ् तत्पुरुष'[201] समास।

आदिक्षत् .... महार्धरत्नम् ।।3।।

277. **आदीप्तकुशानुकल्पम्**–समन्ताद् दीप्तः इति आदीप्तः। 'कुगतिप्रादयः'[202] सूत्र से गति समास। आदीप्तश्चाऽसौ कृशानुः (आदिप्त + सु, कृशानु + सु) 'विशेषणं विशेष्येण बहुलम्' सूत्र से आदीप्तकृशानुः।

278. **सिहांसनम्**–सिंहस्य आसनम् इति। (सिंह ङस्, आसन सु) 'षष्ठी'[203] सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

279. **सपादपीठम्**-पादयोः पीठम् इति। (पाद + ओस्, पीठ + सु) 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास। पादपीठम् - पादपीठेन सहितम् तत्। (पादपीठ + टाप्, सह) सपादपीठम् 'तेन सहेति तुल्ययोगे'[204] सूत्र से 'ब्रहुब्रीहि समास'।

280. **सन्तप्तचामीकरवल्गुवज्रम्**-सन्तप्तचामीकरवल्गूनि वज्राणि यस्य तत् (सन्तप्तचामीकवल्गु + जस् , वज्र + जस्) 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से बहुब्रीहि समास।

प्रास्थापयत् .... तीर्थजलार्थमाशु ।।4।।

281. **पूगकृतान्**-अपूगाः पूगाः कृताः तान् 'श्रेण्यादिषु च्व्यर्थवचनम् कर्तव्यम्'[205] इति वचनात् 'श्रेण्यादयः कृतादिभिः' सूत्र से गतिसमास।

282. **दृढगात्रबन्धान्** - दृढः गात्रबन्धः येषां ते इति। (दृढ + सु, गात्रबन्ध + सु) दृढ गात्रबन्धः , तान् 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से बहुब्रीहि समास।

283. **सभर्मकुम्भान्** -भर्मणः कुम्भा इति भर्मकुम्भाः। (भर्म ङस्, कुम्भ जस्) 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास। भर्मकुम्भैः सहिताः इति सभर्मकुम्भान् बहुब्रीहि समास।

284. **तीर्थजलार्थम्**-तीर्थजलेभ्यः इदम् (यथा तथा) तीर्थजलार्थम्। 'अर्थेन् नित्यसमासो विशेष्यलिंगता चेति वक्तक्म्'[206] (तीर्थ आम्, जल जस्)। 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास। तीर्थानाम् जलानि इति।

285. **प्रयत्नात्**-प्रकृष्टो यत्नः इति प्रयत्नः। 'कुगतिप्रादयः'[207] सूत्र से प्रादि तत्पुरुष समास।

उक्षाम्प्रचक्रुर्नगरस्य .... नियुक्ताः ।।5।।

286. **खधूपान्** - खव्यापका धूपाः '**शाकपार्थिवादीना**' सूत्र से मध्यपदलोपी तत्पुरुष समास।

मातामहा .... वनप्रयाणम् ।।6।।

287. **मातामहावासम्**-मातामहस्य आवासः इति। (मतामह + ङस्, आवास सु) 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष'[208] समास।

288. **अपृष्ट्वा**-न पृष्ट्वा इति। 'नलोपो नञ्' सूत्र से 'नञ् तत्पुरुष' समास।

289. **वनप्रयाणम्**-वनाय प्रयाणम् इति। (वन + ङे., प्रमाण + सु) 'गत्यर्थकर्मणि द्वितीयाचतुर्थ्यो चेष्टायामनध्वनि'[209] सूत्र से योग विभक्ति से 'चतुर्थी तत्पुरुष' समास।

कर्णेजपैः .... सनरेन्द्रमृत्युम्।।7।।

290. **कर्णेजपैः**-कर्णे जपन्तीति। (कर्ण + ङि, जप + सु) तैः 'स्तम्बकर्णयोरमिजपोः' इत्यच 'तत्पुरुषे कृति बहुलम्'[210] सूत्र से सप्तमी विभक्ति का लोप होने पर 'कर्णेजपः'।

291. **आहितराज्यलोभा**–राज्यस्य लोभः इति। (राज्य ङस्, लोभ सु) 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास। आहितः राज्यलोभः यस्याः सा। (आहित सु राज्यलोभ सु)। 'अनेकमन्यपदार्थे'[211] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

292. **रामप्रवासे** = रामस्य प्रवासेः। (राम + ङस् , प्रवास + सु) तस्मिन्। 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष'[212] समास।

293. **सनरेन्द्रमृत्युम्**–नरेन्द्रमृत्युना सहितः (नरेन्द्रमत्यु + टा, सह)। 'तेन सहेति तुल्ययोगे' सूत्र से बहुब्रीहि समास। नराणाम् इन्द्रः इति नरेन्द्रः 'षष्ठी तत्पुरुष'[213] समास। नरेन्द्रस्य मृत्युः इति नरेन्द्र मृत्युः (ष.त.)।

294. **जनापवादम्**–जनानाम् अपवादः। (जन + आम्, अपवाद + सु) जनापवादः (तम्)। 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष'[214] समास।

वसूनि देशांश्च .... निचख्ने ।।8।।

295. **भरताभिषेकः**–भरतस्य अभिषेकः इति। (भरत + ङस्, अभिषेक + सु) 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

296. **विषादशंकः**–विषादः शंकः इव इति। 'उपमितं' व्याघ्रादिभिः सामान्याऽप्रयोगे सूत्र से कर्मधारय समास।

ततः प्रविव्राजयिषुः .... शोचन् ।।9।।

297. **सौमित्रिसीतानुचरस्य**–'सौमित्रिश्च सीता च' सौमित्रिसीतम् सर्वो द्वन्द्वो विभाषकम् भवति इति वचनाद् एकवद्भावः। सौमित्रीसीतम् अनुचरम् यस्य सः इति 'अनेकमन्यपदार्थे'[215] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

298. **सुमन्त्रनेत्रेण**–सुमन्त्रः नेत्रः यस्य सः। 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से बहुब्रीहि समास।

केचित् .... जगाद ।।10।।

299. **अप्रशान्तम्**–न प्रशान्तः इति अप्रशान्तः। 'नलोपो नञ्' सूत्र से 'नञ् तत्पुरुष' समास।

300. **सास्रम्**–अस्त्रैः सहितं सास्त्रं तद्। (सह अस्त्र, सु) 'तेन सहेति तुल्ययोगे' सूत्र से बहुब्रीहि समास।

गतो वनं .... मनांसि ।।11।।

301. **च्युतमन्यवः**–च्युतः मन्युः येषां ते इति। (च्युत सु, मन्यु सु)। 'अनेकमन्यपदार्थे'[216] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

302. **कुमारानुगमे**–कुमारस्य अनुगमः तस्मिन्। 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष'[217] समास।

प्रस्थास्यमानावुपसेदुषस्तौ .... कृताऽर्थान् ।।12।।

303. **नियोगलाभेन**–नियोगस्य लाभः इति। (नियोग + ङस्, लाभ + सु) तेन। 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष'[218] समास।

304. **कृताऽर्थान्**–कृतः अर्थः यैः ते इति कृतार्थाः तान्। (कृत सु, अर्थ सु)। 'अनेकमन्यपदार्थे'[219] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

असृष्ट यो यश्च .... वनस्य मोक्षः ।। 13 ।।

305. **महोपकारस्य**–महान् च असौ उपकारः तस्य इति। (महत् सु, उपकार सु)। 'तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः' सूत्र से कर्मधारय समास।

ज्ञात्वेङ्गितै .... अपजगाम रामः ।। 16 ।।

306. **सपौरः**–पौरैः सहितः इति। 'तेन सहेति तुल्ययोगे' सूत्र से बहुब्रीहि समास।

307. **वनेवासकृतात्**–वने वासो इति वनेवासः। 'सप्तमी' सूत्र से योग विभक्ति से सप्तमी तत्पुरुष समास। 'शयवासवासिष्वकालात्'[220] इति विकल्प से सप्तमी विभक्ति लोप। वनेवासेन कृतः (वनेवास + टा + कृत + सु)। 'तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन' सूत्र से 'तृतीया तत्पुरुष' समास।

अस्त्राक्षुरस्त्रं .... न्यवृतन्मनोभिः ।। 17 ।।

308. **कवोष्णम्**–ईषद् उष्णम् इति। कवोष्णम्। 'कुगतिप्रादयः' सूत्र से प्रादि समास। 'कवं चोष्णे' इति कोः कवादेशः।

309. **पराङ्मुखैः**–पराक् मुखं येषां ते पराङ्मुखाः तैः। 'अनेकमन्यपदार्थे'[221] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

सूतोऽपि गंङ्गासलिलैः .... पुरमाविवेश ।। 18 ।।

310. **गंङ्गासलिलैः**–गंङ्गायाः सलिलानि इति। (गंङ्गा + ङस्, सलिल + जस्)। गंङ्गासलिलानि तैः 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

311. **सहाश्वम्**–अश्वैः सहितः इति। (अश्व + भिस् , सह) तम्। 'तेन सहेति तुल्ययोगे' सूत्र से बहुब्रीहि समास।

312. **अनल्पमन्युः**–न अल्पः इति अनल्पः। 'नञ् तत्पुरुष'[222] समास। अनल्पः मन्युः यस्य सः। 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से बहुब्रीहि समास।

313. **ससीतयोः**–सीतया सहितौ तयोः। (सीता टा सह)। 'तेन सहेति तुल्ययोगे' सूत्र से बहुब्रीहि समास।

314. **कदुष्णम्**–ईषद् उष्णम् इति। 'कुगतिप्रादय' सूत्र से प्रादि समासः 'कवं चोष्णे' सूत्र से कवादेश। 'कोः कत् तत्पुरुषोऽचि'[223] सूत्र से कदादेश।

प्रतीय सा .... सर्वचेष्टा ।। 19 ।।

315. **भानुशीतांशुविनाकृता**–शीताः अशंवः यस्य सः इति। (शीत + जस्, अंश + जस्) शीतांशुः। बहुब्रीहि समास। भानुश्च शीतांशुश्च इति भानुशीतांशू (द्वन्द्व) चाऽर्थे द्वन्द्वः सूत्र से द्वन्द्व समास।

भानुशीतांशुभ्याम् विनाकृता। (भानुशीतांशु + भ्याम्, विनाकृता + सु) 'तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन'[224] सूत्र से 'तृतीया तत्पुरुष' समास।

316. **राजन्यनक्षत्रसमन्विता**–राजन्या एव नक्षत्राणि इति। (राजन्य जस्, नक्षत्र जस्), 'मयूरव्यंसकादयश्च' सूत्र से रूपक समास। राजन्यनक्षत्रैः समन्विता (राजन्यनक्षत्र + भिस् समन्विता + सु) 'तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन'[225] सूत्र से 'तृतीया तत्पुरुष' समास।

317. **शोकाऽन्धकारक्षतसर्वचेष्टा**–शोक एव अन्धकारः इति शोकांधकारः। 'मयूरवयंसकादयश्च:' सूत्र से रूपक समास। क्षता सर्वा चेष्टा यस्याः सा क्षतसर्वचेष्टा इति। 'अनेकमन्यपदार्थे'[226] सूत्र से बहुब्रीहि समास। शोकांधकारेण क्षतसर्वचेष्टा इति 'तृतीया तत्पुरुष समास।'

विलोक्य .... वस्त्रै ।।20।।

318. **च्युताशः**–च्युता आशा यस्य सः इति। 'अनेकमन्यपदार्थे'[227] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

319. **नृपतिः**–नृणाम् पतिः इति। (नृ + आम्, पति + सु) 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

आसिष्ट नैकत्र .... द्युनिवासभूयम्।।21।।

320. **कृताकृतेभ्यः**–कृतानि च तानि अकृतानि इति। (कृत + जस्, अकृत + जस्) तेभ्यः कृताकृतानि क्तेन नञ्विशिष्टे नानञ्) सूत्र से 'नञ् तत्पुरुष समास।'[228]

321. **चन्दनोशीरमृणालदिग्धः**–चन्दनश्च उशीरं च मृणालं च इति। 'चाऽर्थे द्वन्द्वः' सूत्र से द्वन्द्व समास। चन्दनोशीरमृणालैः दिग्धः इति। (चन्दनोशीरमृणाल + भिस् दिग्ध + सु) 'कर्तृकरणे कृता बहुलम्'[229] सूत्र से तृतीया तत्पुरुष समास।

322. **शोकाग्निना**–शोकः एव अग्निः इति शोकाग्निः तेन। 'मयूरव्यंसकादयश्च' सूत्र से रूपक समास।

323. **द्युनिवासभूयम्**–द्यौः निवासः यस्य सः 'द्युनिवासः'[230] इति। 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से बहुब्रीहि समास। द्युनिवासस्य भावः = धुनिवासभूयम्।

विचुक्रशुर्भूमि .... चैव ।।22।।

324. **भूमिपतेः**–भूमेः पतिः इति। (भूमि + ङस्, पति + सु) तस्य। 'षष्ठी'[231] सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

325. **स्ववपूंषि** : स्वस्य वपूंसि इति। (स्व + ङस्, वपुस् + जस्) स्ववपूंसि, तानि। 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

ताः सान्त्वयन्ती .... यूनः ।।23।।

326. **राजात्मजम्**–राज्ञः आत्मजः इति। (राजन् + ङस्, आत्मज + सु) 'षष्ठी'[232] सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

327. **मन्त्रिमतेन**–मन्त्रिणां मतम् इति। (मन्त्रिन् + आम्, मत् + सु) तेन। 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

सुप्तो नभस्तः .... राज्ञः ।। 24 ।।

328. **मातृकुले**–मातुः कुलम् इति। (मातृ + ङस्, कुल + सु) तस्मिन्। 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

अशिश्रवन् .... गुरूणाम् ।। 25 ।।

329. **जाताञ्जिहिषः** – जाता अञ्जिहिषा (गमनेच्छ) यस्य सः इति। 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से बहुब्रीहि समास। 'गोस्त्रियोरूपसर्जनस्य' इति उपसर्जन ह्रस्वः।

बन्धूनशङ्किष्ट .... अरासिषुश्च ।। 26 ।।

330. **स्नेहवशात्** – स्नेहस्य वशः (स्नेह + ङस्, वस + सु) तस्मात्। 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

331. **गोमायुसारंगणाश्च**–गोमायवश्च सारंगाश्च इति। (गोमायु जस्, सारंङ्ग जस्)। 'चाऽर्थे द्वन्द्वः' सूत्र से द्वन्द्व समास। गोमायुसारंगस्य, गणाः इति। (गोमायुसारङ्ग ङस् गण जस्)। 'षष्ठी' [233]सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

स प्रोषिवानेत्य .... पणाऽऽयान् ।। 27 ।।

332. **जनौघजन्यम्**–जनानामोघो इति। (जन + आम् ओघ + सु)। जनौघः। 'षष्ठी'[234] सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास। जनौघेन जन्यः (जनौध + टा जन्य + सु) जनौघजन्यः (तम्)। 'कर्तृकरणे कृता बहुलम्' सूत्र से 'तृतीया तत्पुरुष' समास।

333. **वेदनादान्**–वेदानाम् नादाः (वेद + आम् नाद + जस्) तान्। 'षष्ठी' सूत्र स 'षष्ठी तत्पुरुष'[235] समास।

334. **पणाऽऽयान्**–पणानाम् आयाः (पण् + आम् , आय + जस्) तान्। 'षष्ठी'[236] सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

चक्रन्दुः .... प्रतिपूर्णमन्या ।। 28 ।।

335. **नृपतिम्**–नृणाम् पतिः इति। (नृ + आम् पति + सु)। 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

336. **उपागतास्त्राः**–उपागतम् अस्त्रं येषां ते इति उपागतास्त्राः। (उपागत सु, अस्त्र सु)। 'अनेकमन्यपदार्थे'[237] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

337. **पुरोहिताऽमात्यमुखाः**–पुरोहितश्च अमात्यश्च इति (पुरोहित + सु, अमात्य + सु) 'चाऽर्थेद्वन्द्वः' सूत्र से द्वन्द्व समास। 'अभ्यर्हितं च' से पुरोहित शब्द का पूर्वप्रयोग। पुरोहितामात्यौ। पुरोहितामात्यौ मुखम् येषां ते इति। 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से बहुब्रीहि समास।

338. **विवृद्धमन्यप्रतिपूर्णमन्याः**–विवृद्धश्चाऽसौ मन्युः इति (विवृद्ध + सु मन्यु + सु) 'तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः' सूत्र से कर्मधारय समास। प्रतिपूर्णमन्याः = प्रतिपूर्णा मन्याः येषां ते। बहुब्रीहि समास। विवृद्धमन्युना प्रतिपूर्णमन्याः (विवृद्धमन्यु + टाप्, प्रतिपूर्णमन्यु + जस्) तृतीया तत्पुरुष समास।

दिदृक्षमाणः .... वृत्तमस्मै। ।।29।।

339. **ससीतम्**–सीतया सहितः इति। (सीता + टा, सह) तम्। 'तेन सहेति तुल्ययोगे'[238] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

आबद्धभीम .... न्यामाङ्क्षीत् ।।30।।

340. **आबद्धभीमभ्रुकुटीविभङ्गः** –आबद्धः भीमः भ्रुकुटीविभंगः यन सः इति। 'अनेकमन्यपदार्थे'[239] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

341. **शेश्वीयमानाऽरूणरौद्रनेत्रः**–शेश्वीयमाने अरूणे रौद्रे नेत्रे यस्य सः इति। 'अनेकमन्यपदार्थे'[240] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

नृपात्मजौ .... बह्वनर्थम् ।।31।।

342. **नृपात्मजौ**–नृपस्य आत्मजौ इति। (नृप + ङस्, आत्मज + औ)। 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष'[241] समास।

343. **ससीतौ**–सीतया सहितौ इति। 'तेन सहेति तुल्ययोगे'[242] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

344. **विधवाः**–विगतः धवः यासां ताः इति। 'अनेकमन्यपदार्थे'[243] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

345. **अनृपा**–अविद्यमानः नृपः यस्यां सा। 'नञोऽस्त्यर्थानां वाच्यो वा चोतरपदलोपः'[244] वार्तिक से 'नञ्' समास।

346. **केकय्युपज्ञम्**–केकय्या उपज्ञा यस्य तत्। इति। 'अनेकमन्यपदार्थे'[245] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

347. **बह्वनर्थम्**–अविद्यमानः अर्थः येषां ते 'अनर्थाः' 'नञोऽस्त्र्थानां वाच्यो वा चोत्तरपदलोपः' (वार्तिक से 'नञ्' समास)। बहबः अनर्था यस्मिन् तत्। बहुब्रीहि समास।

नैतन्मतं मत्कमिति .... रोरूदावान् ।।32।।

348. **सरामम्**–रामेण सहितः इति सरामः तम्। 'तेन सहेति तुल्ययोगे'[246] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

349. **सशोकः** मू = शोकेन सहितः इति सशोकः। 'तेन सहेति तुल्ययोगे'[247] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

तं सुस्थयन्तः .... अऽध्वरपात्रजातम् ।।33।।

350. **नरेन्द्रः** – नराणाम् इन्द्रः इति। (नर् + आम्, इन्द्र + सु)। 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

351. **सविप्राः**– विप्रः सहिताः इति। 'तेन सहेति तुल्ययोगे'[248] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

352. **अन्त्याहुतिम्** – अन्त्या चाऽसौ आहुतिः इति। (अन्त्या + जस्, आहुति + जस्) ताम्। 'तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः'[249] सूत्र से कर्मधारय समास।

353. **अध्वरपात्रजातम्**–अध्वरस्य पात्राणि इति। अध्वरपात्राणि। 'षष्ठी'[250] सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास। अध्वरपात्राणाम् जातम् इति अध्वरपात्रजातम् (अध्वरपात्र सु जात सु)। 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

उदक्षिपन् .... चन्दनानि ।।34।।

354. **पट्टदुकुलकेतून्** – पट्टानां दुकूलानि इति पट्टदुकूलानि। (ष.त.) पट्टदुकूलानाम् केतवः (पट्टदुकूल + आम् , केतु + जस्) तान्। 'षष्ठी'[251] सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

355. **वेणुमृदङ्गकांस्यम्** – वेणवश्च मृदंगाश्च कांस्यानि च इति। 'जातिरप्राणिनाम्'[252] सूत्र से समाहार द्वन्द्व समास।

356. **कुङ्कमचन्दनानि**–कुङ्कमाश्च चन्दनानि च तानि इति। 'चाऽर्थेद्वन्द्व'[253] सूत्र से द्वन्द्व समास।

श्रोत्राक्षिनासावदनम् .... चिताग्निम् ।।35।।

357. **श्रोत्राक्षिनासावदनम्**–श्रोत्रे च अक्षिणी च नासां च वदनम् च इति। 'द्वन्द्वश्च प्राणितूर्यसेनाङ्गानाम्'[254] सूत्र से समाहार द्वन्द्व समास।

358. **सरूक्मम्**–रूक्मेण सहितम् इति। 'तेन सहेति तुल्ययोगे'[255] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

359. **प्राक्शिरसम्**–प्राक् शिरो यस्य सः इति। 'अनेकमन्यपदार्थे'[256] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

360. **यथाविधानम्**–विधानम् अनतिक्रम्यः इति। 'अव्ययंविभक्तिसमीप' समृद्धि–व्यद्धयर्थाभावात्ययासम्प्रतिशब्दप्रादुर्भावपश्चाद्यथाऽऽनुपूर्व्ययोंगपद्यसादृश्यसम्पत्तिसाकल्यान्तवचनेषु' सूत्र से अव्ययीभाव समास।

कृतेषु .... सपौरः ।।36।।

361. **पिण्डोदकसञ्चयेषु**–पिण्डाश्च उदकम् च सञ्चयश्च (तेषु)। 'चाऽर्थेद्वन्द्वः'[257] सूत्र से द्वन्द्व समास।

362. **सपौरः**–पौरैः सहितः इति। (पौर टा, सह)। तेन सहेति 'तुल्ययोगे'[258] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

शीघ्रायमाणैः .... रथाश्वमिश्रैः ।।37।।

363. **अपन्थानम्**–न पन्था इति। 'नलोपोनञ्' सूत्र से 'नञ् तत्पुरुष'[259] समास।

364. **अभूषैः**–अविद्यमाना भूषा येषां ते इति। 'नञोऽस्त्यर्थानां वाच्यो वा चोत्तरपदलोपः वार्तिक से 'नञ्' समास।

365. **नागेन्द्ररथाश्वमिश्रैः**– नागेषु इन्द्राः इति नागेन्द्राः। (नाग सुप् इन्द्र जस्) 'सप्तमी' सूत्र से 'सप्तमी तत्पुरुष समास।' नागेन्द्राश्च रथाश्च, अश्वाश्च इति नागेन्द्ररथाश्वम्। 'द्वन्द्वश्च प्राणितूर्यसेनांगानाम्' समाहार द्वन्द्व समास। नागेन्द्ररथाश्वेन मिश्रा (नागेन्द्ररथाश्व + टा, मिश्र + जस्) तैः 'पूर्वसदृशसमोनार्थकलहनिपुणमिश्रश्लक्षणैः' सूत्र से 'तृतीया तत्पुरुष समास।'

उच्चिक्यिरे पुष्पफलं .... विशश्रमुश्च। ।। 38 ।।

366. **पुष्पफलम्**–पुष्पाणि च फलानि च (तत्)। 'जातिरप्राणिनाम्'[260] सूत्र से समाहार द्वन्द्व।

367. **अशंङ्कम्**–अविद्यमाना शंका यस्मिन् तत्। 'नञोऽस्त्यर्थानां वाच्यो वा चोत्तरपदलोपः'[261] वार्तिक से 'नञ्' समास।

सम्प्राप्य तीरं .... अवृत्तयस्ते।। 39 ।।

368. **गंङ्गाम्बुसम्पर्कविशुद्धिभाञ्जः**–गंगायाः अम्बु इति गगाम्बुः 'षष्ठी'[262] सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास। गंगाम्बुना सम्पर्कः इति गंगाम्बुसम्पर्कः तृतीया तत्पुरुष समास। गंगाम्बुसम्पर्केण विशुद्धिभाक् इति गंगाम्बु–सम्पर्कविशुद्धिभाक् (तस्य) 'कर्तृकरणे कृता बहुलम्' सूत्र से तृतीया तत्पुरुष समास।

369. **तमसापगायाः**–तमसा चाऽसौ आपगाः (तस्याः)। 'तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः'[263] सूत्र से कर्मधारय समास।

370. **निरुद्धश्रमवृत्तयः**–निरुद्धा श्रमवृत्ति येषां ते। 'अनेकमन्यपदार्थे'[264] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

ईयु .... पयोभिः ।। 40 ।।

371. **भरद्वाजमुनेः**–भरद्वाजश्चाऽऔ मुनिः इति भरद्वाजमुनिः (तस्य)। 'तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः' सूत्र से कर्मधारय समास।

372. **फलवद्विभूत्या**–फलवताम् विभूतिः इति फलवद्विभूतिः। 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

373. **च्युताऽशनायाः**–च्युता अशनाया येषां ते इति। 'अनेकमन्यपदार्थे'[265] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

वाचंयमान् .... सशिष्यम् ।। 41 ।।

374. **सशिष्यम्**–शिष्यैः सहितः इति (शिष्य + भिस्, सह (स))। 'तेन सहेति तुल्ययोगे' सूत्र से बहुब्रीहि समास।

आतिथ्यमेभ्यः .... द्राघिभवन्त्युदूहुः ।। 42 ।।

375. **कलपद्रुमाः**–कल्पानाम द्रुमाः (कल्प + आम्, द्रुम + जस्) 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

376. **योगबलेन**–योगस्य बलम् (योग + ङस् बल + सु) तेन। 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष'[266] समास।

377. **म्रदिमान्वितानि**–मद्रिम्ना अन्वितानि (मद्रिमन् + टा, अन्वित + जस्)। तृतीया तत्पुरुष समास।

आज्ञां .... तस्मिन् ।।43।।

378. **सरागम्**–रागैः सहितम् इति। (राग + भिस्, सह) 'तेन सहेति तुल्ययोगे'[267] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

379. **सहावम्**–हावेन सहितम् इति। (हाव + टा, सह) 'तेन सहेति तुल्ययोगे' सूत्र से बहुब्रीहि समास।

380. **तिलोत्तमाद्याः**–तिलोत्तमा आद्या यासां ताः। 'अनेकमन्यपदार्थे'[268] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

वस्राऽन्नपानं .... शेध्वम्।।44।।

381. **वस्रान्नपानम्**–वस्त्राणि च अन्नानि च पानानि च। (वस्त्र + जस् अन्न + जस्, पान + जस्) 'सर्वो द्वन्द्वो विभाषैंकवद् भवति।'[269] सूत्र से समाहार द्वन्द्व समास।

ते भुक्तवन्तः .... समीयुः ।।45।।

382. **समध्वाः**–सम्प्राप्ता अध्वानम् इति। 'अत्यादयः क्रान्तिद्यर्थे द्वितीयया' प्रादितः' 'उपसर्गादध्वनः' सूत्र से समासान्त 'टच्' प्रत्यय।

383. **रथवाजिनागैः**–रथाश्च वाजिनश्च इति। (रथ + जस्, वाजि + जस्) सेनागत्वात् 'द्वन्द्वश्च प्राणिसेनातूर्यसेनांगानाम्' सूत्र से समाहार द्वन्द्व। रथावाजि। रथवाजि युक्ता नागाः इति (तैः) – 'शाकपार्थिवादीनाम् सिद्धय उत्तरपदलोपस्थोपसंख्यानम्' सूत्र स 'मध्यपदलोपी' समास।

384. **रम्यवनाम्**–रम्याणि वनानि यस्याः सा इति रम्यवना। 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से बहुब्रीहि समास।

वैखानसेभ्यः .... चित्रकूटम् ।।46।।

385. **श्रुतरामवार्ताः** – रामस्य वार्ता इति रामवार्ता। श्रुता रामवाता यैः ते। 'षष्ठी'[270] सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

386. **विशिङ्खानपतत्रिसङ्घम्**–विशिङ्खानः पतत्रिसंघः यस्मिन् सः। विशिङ्खानपतत्रिसङ्घम्। 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से बहुब्रीहि समास।

387. **अभ्रंलिहाग्रम्**–अभ्रंलिहानि अग्राणि यस्मिन् सः अभ्रलिहाग्रः (तम्)। 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से बहुब्रीहि समास।

388. **रविमार्गभङ्गम्**–रवेः मार्गः इति रविमार्गः। (ष.त.) रविमार्गस्य भंगः इति रविमार्गभंगः। 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

दृष्ट्वा .... मुज्जिहान् ।।47।।

389. **बलौघान्**–बलानाम् ओघाः (बल + आम्, ओघ + जस्) तान्। 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

390. **शितेषुः**–शिताः इषवः यस्य सः। (शित + सुप्, इषु + जस्)। 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से बहुब्रीहि समास।

391. **अक्षिभ्रवम्**–अक्षिणी च भ्रुवौ च इति। 'द्वन्द्वश्च प्राणितूर्यसेनागांनाम्' सूत्र से समाहार द्वन्द्व।

शुक्लोत्तरा .... स्ववर्ग्यान्।। 48।।

392. **शुक्लोत्तरासंभृतः**–शुक्लाश्च असौ उत्तरासंगः इति। 'तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः' सूत्र से कर्मधारय समास।

393. **विशस्त्रान्**–विगतानि शस्त्राणि येभ्यः ते। (प्रादिभ्यो धातुजस्य वाच्यो वा चोत्तरपदलोपः' वार्तिक से 'नञ्' समास।

394. **समन्यून्**–मन्युना सहिताः इति। (मन्यु + टा सह – (स)) समन्यु (तान्)। 'तेन सहेति तुल्ययोगे'[271] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

395. **वीतविरुद्धबुद्धीन्**–बीता विरुद्धा बुद्धिः येषां ते। वीतविरुद्धबुद्धिः तान्। 'अनेकमन्यपदार्थे'[272] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

396. **स्ववर्ग्यान्**–स्वस्य वर्गः इति। स्ववर्गः। (स्व ङस् वर्ग सु)। 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष'[273] समास।

समूलकाषम् .... रामवियोगशोकात्।। 50।।

397. **रामान्तिकम्**–रामस्य अन्तिकः इति। (राम + ङस् अन्तिक + सु)। 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

398. **बृंहितमन्युवेगाः**–मन्योः वेगः इति मन्युवेगः। 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास। बृंहितः मन्युवेगाः येषां ते इति। 'अनेकमन्यपदार्थे'[274] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

399. **रामवियोगशोकात्**–रामस्य वियोगः (राम + ङस् वियोग + सु)। 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

400. **रामवियोगेन शोकोः इति**। रामवियोगशोकः तस्मात्। 'तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन' सूत्र से 'तृतीया तत्पुरुष' समास।

चिरं .... अन्तिकेऽपाम्। 50/3

401. **सशब्दम्**–शब्दैः सहितम् यथा तथा इति। 'तेन सहेति तुल्ययोगे' सूत्र से बहुब्रीहि समास।

402. **मध्येजलात्**–मध्ये जलस्य इति मध्येजलम् (तस्मात्)। 'पारेमध्ये षष्ठ्या वा'[275] सूत्र से अव्ययीभावः।

403. **राघवलक्ष्मणाभ्याम्**–राघवश्च लक्षमणश्च ताभ्याम्। 'चाऽर्थे द्वन्द्वः'[276] सूत्र से द्वन्द्व समास।

404. **द्वयञ्जलम्**–द्वयोः अञ्जलयोः समाहारः इति द्वयञ्जलम्। 'तदितार्थोत्तरपदसमाहारे च' सूत्र से समास। 'संख्यापूर्वो द्विगुः'[277] सूत्र से द्विगु संज्ञा' द्वित्रिभ्यामञ्जलेः इति समासन्त 'टच्' प्रत्यय।

अरण्ययाने .... कनीयान् ।।51।।

405. **अरण्ययाने**–अरण्ये यानम् (अरण्य + ङि. यान. + सु) तस्मिन्। 'सप्तमी तत्पुरुष समास।'[278]

कृती श्रुती .... पुत्रकाम्या ।।52।।

406. **वृद्धमतेषु**–वृद्धानां मतानि इति। (वृद्ध + आम्, मत + जस्) तेषु। 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

अस्माकमुक्तं .... पृथ्वीम् ।।53।।

407. **अतिष्ठन्**–न तिष्ठन् इति। 'नलोपो नञ्' सूत्र से 'नञ् तत्पुरुष' समास।

408. **तातवाक्ये**–तातस्य वाक्यम् (तात + ङस् वाक्य + सु) तस्मिन्। 'षष्ठी' सत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

वृद्घौरसां .... धर्म्यम् ।।5।।

409. **वृद्धौरसाम्**–वृद्धः औरसः यस्याः सा। 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से बहुब्रीहि समास।

410. **राजयधुरा**–राज्यस्य धूः इति। (राज्य + ङस्, धू + सु)। 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास। 'ऋक्पूरब्धूपक्षामानक्षे' सूत्र से समासान्त 'अ' प्रत्यय।

411. **कुलकीर्तिलोपे**–कुलस्य कीर्तिः इति कुलकीर्तिः। 'षष्ठी'[279] सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास। कुलकीर्ति लुम्पति इति (कुलकीर्ति लुप् + अण्) 'कर्मण्यण्' सूत्र से अण् प्रत्यय। 'उपपदमतिङ्'[280] सूत्र से 'उपपद समास।'

ऊर्जस्वलं .... शान्तमेतत् ।।55।।

412. **हस्तितुरङ्गम्** –हस्तिनः च तुरङ्गाश्च इति। हस्तितुरंगम्। 'द्वन्द्वश्च प्राणितुर्यसेनांगानाम्'[281] सूत्र से 'समाहार द्वन्द्व' समास।

413. **क्षितीन्द्रः**–क्षितेः इन्द्रः इति। 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

इति निगदितवन्तं .... कारकयाऽस्मन्मतेन ।।56।।

414. **च्युतनिखिलविशङ्कः**–च्युता निखिला विशंङ्का यस्मात् सः इति। 'अनेकमन्यपदार्थे'[282] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

415. **जनौघैः**–जनानाम ओघाः। (जन + आम् ओध + सु) (तै)। 'षष्ठी'[283] सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

416. **अस्मन्मतेन**–अस्माकम् मतम् इति। (तेन) (अस्मद् आम्, मत सु)। 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

417. **सकलभुवनराज्यम्**–सकलानि च तानि भुवनानि इति। (सकल जस् भुवन जस्) 'तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः'[284] सूत्र से कर्मधारय समास।

418. **सकलभुवनानां राज्यम्** –(सकलभुवन आम् राज्य सु)। 'षष्ठी'[285] सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

चतुर्थ सर्ग

निवृत्ते भरते .... आरण्यमीयिवान् ।।1।।

419. **दण्डकारण्यम्**–दण्डकस्य अरण्यम् इति। (दण्डक + ङस् अरण्य + सु)। 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

अटाटयमानः .... रक्षसा ।।2।।

420. **ससीतः**–सीतया सहितः इति ससीतः। 'तेन सहेति तुल्ययोगे'[286] सूत्र से बहुब्रीहिः समास। 'वोपसर्जनस्य' सूत्र से 'सह' को 'स' आदेश।

421. **सलक्ष्मणः**–लक्ष्मणेन सहितः इति। 'तेन सहेति तुल्ययोगे' सूत्र से बहुब्रीहि समास। 'वोपसर्जनस्य' सूत्र से 'सह' को सादेश वैकल्पिक रूप से अभाव।

अवाक्शिरसमुत्पादं .... निचख्नतुः ।।3।।

422. **अवाक्शिरसम्**–अवाक् शिरः यस्य सः (तम्)। 'अनेकमन्यपदार्थे'[287] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

423. **उत्पादम्**–ऊर्ध्वं पादौ यस्य सः (तम्)। 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से बहुब्रीहि समास।

424. **कृतान्तेन**–कृतः अन्तः येन सः – कृतान्तः (तेन)। 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से बहुब्रीहि समास।

425. **विराधाख्यम्**–विराधः आख्यो यस्य सः तम्। 'अनेकमन्यपदार्थे'[288] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

आंहिषातां .... शरणैषिणाम् ।।4।।

426. **रघुव्याघ्रौ**–रघुषु व्याघ्रौ इव इति। (रघु सुप् व्याघ्र औ)। स्युरुत्तरपदे व्याघ्रपुंगवर्षभ कुञ्जराः। 'सप्तमी तत्पुरुष' समास।

427. **शरभंगाश्रमम्**–शरभंगस्य आश्रमः (शरभंग + ङस् आश्रम + सु) तम्। 'षष्ठी'[289] सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

पुरो रामस्य .... मुनिकेतनम्।।5।।

428. **सुतीक्ष्णमुनिकेतनम्**–सुतीक्ष्णः च असौ मुनिः इति सुतीक्ष्णमुनिः। 'तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः'[290] सूत्र से कर्मधारय समास। सुतीक्ष्णमुनेः केतनम् (सुतीक्ष्णमुनि + ङस् केतन + सु) 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

यूयं .... गतिम् ।।6।।

429. **स्वपुण्यविजिताम्**–स्वस्य पुण्यम् इति। (स्व + ङस् पुण्य + सु)। 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास। स्वपुण्येन विजिता (ताम्) (स्वपुण्य टा, विजित सु)। तृतीया तत्पुरुष समास।

तस्मिन् कृशानु .... आश्रमान् ।।7।।

430. **सुतीक्ष्णमुनिसन्निधौ**–सुतीक्ष्णमुनेः सन्निधिः (सुतीक्ष्णमुनि + ङस् सन्निधि + सु) तस्मिन्। 'षष्ठी'[291] सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

431. **पर्णशालायाम्**-पर्ण निर्मिता शाला इति। पर्णशाला, पर्णशालायाम्। - 'शाकपार्थिवादीनां सिद्वय उत्तरपदलोपस्योपसंख्यानम्' सूत्र से मध्यपदलोप तत्पुरुष समास।

वनेषु .... विचक्रमे ।।8।।

432. **पर्णसंस्तरः**-पर्णानि संस्तरो यस्य सः। (पर्ण + जस् संस्तर + सु)। 'अनेकमन्यपदार्थे'[292] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

ऋग्यजुषम् .... होमवान् ।।9।।

433. **ऋग्यजुषम्**-ऋचश्च यजूंषि च ऋग्यजुषम् (तत्)।'चाऽर्थे द्वन्द्वः'[293] सूत्र से द्वन्द्व समास।

वसानः .... तनुत्रवान् ।।10।।

434. **तन्त्रकनिभे**- तन्त्रकाभ्याम् सदृश्यौ इति तन्त्रकनिभे (ते)। (तन्त्रभ्याम् सदृश्य औ) 'पूर्वसदृशसमोनार्थकलहनिपुणमिश्रश्लक्ष्णैः'[294] सूत्र से 'तृतीया तत्पुरुष' समास।

435. **तरुत्वचौ**-तरोः त्वचौ इति। (तरु + ङस् त्वक् + औ) ते।'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

हित्वाशित .... निर्भयः ।।11।।

436. **दन्दशूकारिः**-दन्दशूकानाम् अरिः इति। (दन्दशूक + आम् अरि + सु) 'षष्ठी'[295] सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

437. **निर्भयः**-निर्गतं भयम् यस्मात् सः। (निर्गत सु भय सु)। 'अनेकमन्यपदार्थे'[296] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

वातीनव्यालदीपाऽस्त्रः .... आश्रमान् ।।12।।

438. **व्रातीनव्यालदीप्रास्त्रः**-व्रातीनानाम् व्यालाः इति। (व्रातीन + आम् व्याल + जस्) वातीनव्यालाः 'षष्ठी तत्पुरुष' समास। दीप्राणि अस्त्राणि यस्य सः - दीप्राऽस्त्रः बहुब्रीहि समास। व्रातीनव्यालेषु दीप्राऽस्त्रः (व्रातीनव्याल + सुप् दीप्राऽस्त्र + सु) सप्तमी तत्पुरुष समास।

439. **महाब्रह्मैः**-महान्तः च ते ब्रह्माणः इति। (महत् + जस्, ब्रह्मन् + जस्) 'सन्महत्परमोत्तमोत्कृष्टाः पूज्यमानै'[297] सूत्र से कर्मधारय समास।'कुमहद्भि आमन्यतरस्याम्' सूत्र से 'टच्' प्रत्यय।

440. **नैकटिकाश्रमान्**-नैकटिकानाम् आश्रमाः इति। (नैकटिकाः आम्, आश्रम + जस्) तान्।'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास। अथवा नैकटिकाश्च ते आश्रमाः इति। 'तत्पुरुष समानाधिकरणः कर्मधारयः'[298] सूत्र से कर्मधारय समास।

परेद्यव्यद्य .... अगात्।।13।।

441. **मुनीन्द्राणाम्**-मुनिषु इन्द्राः इति। (मुनि सुप् इन्द्र + जस्) तेषाम्।'सप्तमी तत्पुरुष'।

442. **वृद्धिक्षयौ**-वृद्धिश्च क्षयश्च इति। (वृद्धि + सु क्षय + सु) तौ। 'चाऽर्थे द्वन्द्वः'[299] सूत्र से 'द्वन्द्व' समास।

आतिष्ठद्गु .... रविम् ।। 14 ।।

443. **आतिष्ठद्गु**–तिष्ठन्ति गावो यस्मिन् (काले) दोहाय इति। तिष्ठद्गु (दोहनकालः)। 'तिष्ठद्गुप्रभृतीनि च'[300] सूत्र से निपातन से 'अव्ययीभाव' समास।

444. **तिष्ठद्गुपर्यन्तम्**–(तिष्ठद्गु + आङ्) 'आङ् मर्यादाऽभिविध्योः'[301] सूत्र से अव्ययीभावः समास।

ददृशे .... सौमित्रयेऽसकौ ।। 15 ।।

445. **भार्योढम्**–भार्याः ऊढाः येन स इति। (भार्या + सु ऊढा + सु) तम्। 'अनेकमन्यपदार्थे'[302] सूत्र से बहुब्रीहि समास। 'वाऽऽहिताग्न्यादिषु' इति निष्ठायाः विकल्पेन परनिपातः।

दधाना .... पक्षतौ ।। 16 ।।

446. **कर्णजाहविलोचना**–कर्णजाहयोः विलोचने यस्याः सा इति। (कर्णजाह + ओस् विलोचना + औ)। 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से बहुब्रीहि समास।

447. **अतिसर्वेण**–सर्वम् अतिक्रान्तम् इति। (सर्व + अम्, अति) तेन, 'अत्यादयः क्रान्ताद्यर्थे द्वितीयया' सूत्र से 'तत्पुरुष समास'। 'एक विभक्ति चाऽपूर्वनिपाते' सूत्र से निषेध होने पर उपसर्जन संज्ञा होने पर भी 'सर्व' शब्द का पूर्व प्रयोग नहीं।

448. **वाक्त्वचेन**–वाक् च त्वक् च (वाक् + सु त्वच् + सु) तेन। 'द्वन्द्वश्च प्राणितूर्यसेनाङ्गनाम्'[303] सूत्र से 'समाहार द्वन्द्व' समास। 'द्वन्द्वाच्चुदषहान्तात्समाहारे' सूत्र से टच् प्रत्यय।

449. **चन्द्रलेखा**–चन्द्रस्य लेखा इति। (चन्द्र + ङस् लेखा + सु)। 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

सुपाद .... घनेन सा ।। 17 ।।

450. **सुपात्**–शोभनौ पादौ यस्याः सा। (सु पाद् + औ)। 'अनेकमन्यपदार्थे'[304] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

451. **द्विरदनासोरूः**–द्वौ रदौ (दन्तौ) यस्य सः। (द्वि + औ रद + औ) द्विरदः। 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से बहुब्रीहि समास।

452. **द्विरदस्य नासे**–(द्विरद + ङस् नासे + सु) 'षष्ठी'[305] सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास। द्विरदनासे इव उरू यस्या साः इति। 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से बहुब्रीहि समास।

453. **मृदुपाणितलांगुलिः**–पाण्योः तले इति। (पाणि + ओस् तले + औ)। 'षष्ठो' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास। पाणितले च अंगुलयश्च – (पाणितल ओ, अगुलि – जस्) 'द्वन्द्वश्च प्राणितूर्यं सेनाङ्गानाम'[306] सूत्र से समाहार द्वन्द्व। मृदुः पाणितलांगुलिः यस्याः सा (मृदु + सु पाणितलंगुलि + सु)। 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से बहुब्रीहि समास।

उन्नसं .... सुहसानना ।। 18 ।।

454. **उन्नसम्**–उन्नता नासिका यस्य तत्। (उद् + नासिका + सु) 'उपसर्गाच्च' सूत्र से 'अच्' प्रत्यय 'नासिका' को 'न स' आदेश। 'अनेकमन्यपदार्थे'[307] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

455. **शुद्धदत्**–शुद्धा दन्ता यस्य तत्। (शुद्ध + जस्, दन्त + जस्)। 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से बहुब्रीहि समास। 'अग्राऽन्तशुद्धशुभ्रवृषवराहेभ्यश्च'[308] सूत्र से दन्त को दत्त ओदश।

456. **लोलकुण्डलम्**–लोले कुण्डले यस्य तत्। (लोल + औ कुण्डल + औ)। 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से बहुब्रीहि समास।

457. **सुहसानना**–शोभनो हसः यस्मिन् तत् (सु, हस + सु) तत्। बहुब्रीहि समास। सुहसम् आननम् यस्याः सा। (सुहस + सु, आनन + सु) इति सुहसानना। 'अनेकमन्यपदार्थे'[309] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

प्राप्य .... प्रियंवदा ।। 19 ।।

458. **रघ्त्तमम्**–रघुषु उत्तमः इति। (रघु + सुप्, उत्तम + सु) तम्। 'सप्तमी तत्पुरुष' समास।

सौमित्रे! .... पुरुषायुषम् ।। 20 ।।

459. **स्वभोगीनाम्**–स्वस्य भोगः इति। (स्व + ङस् भोग + सु)। 'षष्ठी'[310] सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास। तस्मै हिता स्वभोगीना ताम्।

460. **अशंङ्कः**–अविद्यमाना शंका यस्य सः। (अ शंका + सु)। 'नञोऽस्त्यर्थानां वाच्यो वा चोत्तरपदलोपः' वार्तिक से 'नञ्' समास।

तामुवाच स .... किमभीरुरार्यसे ।। 21 ।।

461. **स्त्रीपुंसभीषणे**–स्त्री च पुमाश्च (स्त्री + सु, पुमान् + सु) 'चाऽर्थेद्वन्द्वः'[311] सूत्र से द्वन्द्व समास। स्त्रीपुंसयोः भीषणे (स्त्रीपुंस + ओस्, भीषण + औ)। 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

462. **अभीरूः**–न भीरूः इति अभीरू। 'नलोपो नञ्'[312] सूत्र से 'नञ् तत्पुरुष' समास।

मानुषानभिलष्यन्ती .... कथमञ्चसि ।। 22 ।।

463. **दिव्यधर्मिणी**–दिव्यानां धर्माः इति। (दिव्य + आम् , धर्म + जस्)। 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास। दिव्यधर्माः। दिव्यधर्माः सन्ति यस्याः सा इति। 'अनेकमन्यपदार्थे'[313] सूत्र से बहुब्रीहि समास। 'धर्मशीलवर्णान्ताश्च' सूत्र से इनि प्रत्यय ङीप् प्रत्यय।

464. **स्वतन्त्रा**–स्वः (आत्मा) तन्त्रम् (प्रधान्) यस्याः सा। (स्व + सु तन्त्र + सु)। 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से बहुब्रीहि समास।

उग्रम्पश्याऽऽकुले .... कथं न वा ।। 23 ।।

465. **उग्रम्पश्याकुले**–उग्रम्पश्यैः आकुलम् इति। (उग्रम्पश्य + भिस्, आकुल + सु) तस्मिन्। 'षष्ठी'[314] सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

466. **शालीनत्वविर्जिता**–शालीनत्वेन विवर्जिता इति। (शालीनत्व + टा विवर्जिता + सु)। 'तृतीया तत्कृतार्थे गुणवचनेन'[315] सूत्र से 'तृतीया तत्पुरुष समास।'

467. **कामुकप्रार्थनापट्वी**–कामुकस्य प्रार्थना (कामुक + ङस्, प्रार्थना + सु) 'षष्ठी'[316] सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास। कामुकप्रार्थना। कामुकप्रार्थनासु पट्वी। 'सप्तमी तत्पुरुष' समास।

राघवं .... औपकर्णिक लोचन।। 24।।

468. **अनुरहसम्**–रहसि इति (रहस् + ङि ; अनु) 'अव्ययंविभक्तिसमीप' समृद्धिव्य-द्धयर्थाभावात्ययासम्प्रतिशब्दप्रादुर्भावपश्चाद्यथाऽऽनुपूर्व्ययोंगपद्यसादृश्यसम्पत्तिसाकल्यान्तवचनेषु' सूत्र से अव्ययीभाव समास। 'अन्ववतप्ताद् रहस' सूत्र से समासान्त 'अच्' प्रत्यय।

469. **पर्णशालायाम्**–पर्णानाम् शाला इति। (पर्ण + आम् , शाला + सु) तस्याम्। 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

470. **औपकर्णिकलोचनः**–औपकर्णिके लोचने यस्य सः (औपकर्णिक + औ, लोचन + औ) 'अनेकमन्यपदार्थे'[317] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

वपुश्चचान्दनिकं .... यस्यौपजानुकौ।। 25।।

471. **कार्णवेष्टकिकम्**–कर्णयोः वेष्टके इति। (कर्ण + ओस्, वेष्टक + औ) कर्णवेष्टिके। 'षष्ठी'[318] सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

472. **कर्णवेष्टिके-कर्णवेष्टिकाभ्याम्**–सम्पादि–कार्णवेष्टकिक (तम्)।

473. **सर्वकर्मीणौ**–सर्वाणि च तानि कर्माणि इति। (सर्व + जस्, कर्मन् + जस्) 'तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः'[319] सूत्र से कर्मधारण समास। सर्वकर्माणि व्याप्नुत इति सर्वकर्मीणौ।

474. **औपजानुकौ**–जान्वोः समीपम् (उप–जानु + ङस्) समीपार्थे 'अव्ययंविभक्तिसमीप' समृद्धिव्यद्धयर्थाभावात्ययासम्प्रतिशब्दप्रादुर्भावपश्चाद्यथाऽऽनुपूर्व्ययोंगपद्यसादृश्यसम्पत्तिसाकल्यान्तव चनेषु' सूत्र से अव्ययीभावः समास। 'इसुसुक्तान्ताव्कः' सूत्र से 'क' प्रत्यय।

बद्धा दुर्बल .... धत्तेऽन्यदुर्वहम् ।। 26।।

475. **दुर्बलरक्षार्थम्**–दुष्टं बलं येषां ते इति दुर्बलाः। बहुब्रीहि समास। दुर्बलानाम् रक्षा दुर्बलरक्षा– 'षष्ठी'[320] सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास। दुर्बलरक्षायै इदम् (दुर्बलरक्षा + ङे, अर्थम्) 'चतुर्थी तदर्थार्थबलिहितसुखरक्षितैः' सूत्र से चतुर्थी तत्पुरुष समास।

476. **औपनीविक**–नीव्याः समीपम् (उप – नीवी + ङस्) 'अव्ययंविभक्तिसमीप-समृद्धिव्यद्धयर्थाभावात्ययासम्प्रतिशब्दप्रादुर्भावपश्चाद्यथाऽऽनुपूर्व्ययोंगपद्यसादृश्यसम्पत्तिसाकल्यान्तव चनेषु'[321] समीपोऽर्थे अव्ययीभाव समास। उपनीवौ (तस्मिन्) भवः– औपनीविकः।

477. **आश्मनप्रख्यम्**–आश्मनेन प्रख्यः इति। (आश्मन + टा, प्रख्य + सु) (तम्) 'तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन'[322] सूत्र से 'तृतीया तत्पुरुष' समास।

478. **सेषुम्**–इषुभिः सहितः। (ईषु + भिस्, सह (स))। 'तेन सहेति तुल्ययोगे'[323] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

479. **अन्यदुर्वहम्**–अन्यैः दुर्वहः गुणवचनेन' (अन्य + भिस् दुर्वह + सु) तम्। 'तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन' सूत्र से 'तृतीया तत्पुरुष' समास।

जेता यज्ञद्रुहां .... सदा ।।27।।

480. **धर्मसन्तानसूः**–धर्माणां सन्तानः (धर्म + आम् सन्तान + सु) धर्मसन्तानः। 'षष्ठी'[324] सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास। धर्मसन्तानम् सूते इति – धर्मसन्तानसूः।

481. **दारगवाणाम्**–दाराश्च गावश्च इति। (दार + जस, गो + जस्)। 'चाऽर्थे: द्वन्द्व'[325] सूत्र से द्वन्द्व समास।

ततो वावृत्य .... वचः ।।28।।

482. **सादरम्**–आदरेण सहितम् तत्। (आदर टा, सह (स))। 'तेन सहेति तुल्ययोगे' सूत्र से बहुब्रीहि समास।

483. **रामशालाम्**–रामस्य शाला (राम ङस् शाला + सु) ताम्। 'षष्ठी'[326] सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

अस्त्रीकः .... मा मुचः ।।29।।

484. **अस्त्रीकः** – अविद्यमाना स्त्री यस्य सः। 'नञोऽस्त्यर्थानां वाच्यो वा चोत्तरपदलोपः वार्तिक से 'नञ्' समास। 'न द्यृतश्च'[327] इति कप् 'न कपि' इति ह्रस्वप्रतिषेधः

लक्ष्मणं सा .... पुनः ।।30।।

485. **महोक्षम्**–महान् च असौ उक्षाः (महत् + सु, उक्ष + जस्)। कर्मधारय समास।

486. **मन्मथायुधसम्पातव्यथ्यमानमतिः**– मन्मथस्य आयुधानि इति। (मन्मथ + ङस् आयुध + जस्) ष.त.। मन्मथायुधानाम् सम्पातः इति मन्मथायुधसम्पातः (मन्मथायुधान + आम्, सम्पात सु)। 'षष्ठी'[328] सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास। मन्मथायुधसम्पातेन व्यथ्यमाना मतिः यस्याः साः। 'अनेकमन्यपदार्थे'[329] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

तस्याः .... मुखम् ।।31।।

487. **अपनसम्**–अपगता नासिका यस्मात् तत् (अप, नासिका + सु) 'अपनासिका'। 'उपसर्गाच्च इत्यच' सूत्र से नासिका को नसादेश। बहुब्रीहि समास।

अहं शूर्पणखा .... साऽब्रवीत् ।।32।।

488. **शूर्पणखा**–शूर्पाणि इव नखाः यस्याः सा। 'अनेकमन्यपदार्थे'[330] सूत्र से बहुब्रीहि समास। 'पूर्वपदात्संज्ञायामगः' सूत्र से 'णत्व' विधान।

खरदूषणयोः .... दण्डकारण्यवासिनम्।।34।।

489. **खरदूषणयोः**–खरश्च दूषणश्च इति (खर + सु, दूषण + सु) 'चाऽन्र्थे द्वन्द्वः'[331] सूत्र से द्वन्द्व समास।

490. **दण्डकारण्यवासिनम्**–दण्डकस्य अरण्यम् इति। (दण्डक + ङस् अरण्य + सु) 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास। दण्डकारण्ये वसति दण्डकारण्यवासी तम् (णिनि प्रत्यय)।

मम .... क्षमम् ।।36।।

491. **रावणनाथायाः**–रावणः नाथः यस्याः सा इति। रावणनाथा तस्याः। 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से बहुब्रीहि समास।

असस्कृत्रिम .... माम् ।।37।।

492. **असस्कृत्रिमसंव्यानौ**–न संस्कृत्रिमे असंस्कत्रिमे। 'नलोपो नञ्' सूत्र से 'नञ् तत्पुरुष' समास। असस्कृत्रिमानि संव्याने ययोः तौ इति।'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से बहुब्रीहि समास।

493. **अनुप्त्रिमफलाशिनौ**–न उप्त्रिमाणि अनुप्त्रिमाणि इति।'नलोपो नञ्' सूत्र से 'नञ् तत्पुरुष' समास। अनुप्त्रिमाणि च तानि फलानि इति। (अनुप्त्रिम + जस्, फल + जस) 'तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः' सूत्र से कर्मधारय समास। अनुप्त्रिमफलानि। तानि अश्नीतः तच्छीलः (णिनि प्रत्यय)।

494. **अभृत्रिमपरीवारौ**–न मृत्रिमोऽमृत्रिमः। नञ् तत्पुरुष समास। अभृत्रिमः परीवारः ययोः तौ। बहुब्रीहि समास।

श्वःश्रेय .... मा रूदः ।।38।।

495. **श्वःश्रेयसम्**–शोभनम् श्रेयः, श्वःश्रेयसम् (तम्) 'मयूरव्यंसकादयश्च' सूत्र से मयूरव्यंसकादि तत्पुरुष समास।'श्वसोवसीयः श्रेयसः' सूत्र से समासान्ताऽच् प्रत्यय।

496. **मानार्धम्**–मानाय इदम् (मान + ङे, अर्थम्) 'चतुर्थी तदर्थार्थबलिहितसुखरक्षितैः'[332] सूत्र से तत्पुरुष समास।

जक्षिमोऽनपराधेऽपि .... क्षमामहे ।।39।।

497. **अनपराधे**–अपराधस्य अभावः (अपराध् + अन) तस्मिन्।'अव्ययंविभक्तिसमीप' समृद्धिव्यद्धयर्थाभावात्ययासम्प्रतिशब्दप्रादुर्भावपश्चाद्यथाऽऽनुपूर्व्ययोंगपद्यसादृश्यसम्पत्तिसाकल्यान्तवचनेषु'सूत्र से अर्थाभावेमेव्ययीभाव समास।'तृतीयासप्तम्योर्बहुलम्' इत्यत्र बहुलत्वात् अभावः।

तौ चतुर्दश .... अन्वितौ।।40।।

498. **चतुर्दशसाहस्त्रबलौ**–चतुर्दशसाहस्राणि परिमाणं यस्य तत् इति चतुर्दशसाहस्रम् इति। चतुर्दशसाहस्रम् बलम् ययो: तौ। 'अनेकमन्यपदार्थे'[333] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

499. **पारश्वधिकधानुष्कशाक्तिकप्रासिकान्वितौ**–पारश्वधिकाश्च धानुष्काश्च शाक्तिकाश्च प्रासिकाश्च। (पारश्वधिक + जस्, धानुष्क + जस्, शाक्तिक + जस्, प्रासिक + जस्) 'द्वन्द्वश्च प्राणितूर्यसेनांगानाम्'[334] सूत्र से एकवद्‌भाव। पारश्वधिक धानुष्कशाक्तिकप्रासिकम्। तेन अन्वितौ इति। तृतीया तत्पुरुष समास।

अथ सम्पततो .... मृधे ।।41।।

500. **रामलक्ष्मणौ**–रामश्च लक्ष्मणश्च (राम + सु, लक्ष्मण + सु) 'चाऽर्थेद्वन्द्व:' सूत्र से द्वन्द्व समास।

501. **बहुमूर्ध्न:**–बहव: मूर्धान: येषां ते (बहु + जस्, मूर्धन् + जस्) तान्। 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से बहुब्रीहि समास। 'अल्लोपोऽन' इत्यलोप:।

502. **द्विमूर्धा:**–द्वौ मूर्धानौ येषां ते (द्वि + औ, मूर्धन् + ओ) 'अनेकमन्यपदार्थे'[335] सूत्र से बहुब्रीहि समास। 'द्वित्रिभ्याम्ष मूर्ध्न:' सूत्र से समासान्त 'ष' प्रत्यय।

503. **त्रिमूर्धा:**–त्रय: मूर्धान: येषां ते (त्रि + जस्, मुर्धन् + जस्)। 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से बहुब्रीहि समास।

तै .... मेदिनी ।।42।।

504. **वृक्णरुग्णसम्भुन्नक्षुण्णभिन्नविपन्नकै:** – वृक्णाश्च, रुग्णाश्च सम्भुन्नाश्च क्षुण्णाश्च भिन्नाश्च विपन्नकाश्च। वृक्ण + जस्, रग्ण + जस्, सम्भुन्न + जस्, क्षुण्ण + जस्, भिन्न + जस् विपन्न + जस् तै:। 'चाऽर्न्थे द्वन्द्व:'[336] सूत्र से द्वन्द्व समास।

505. **निमग्नोद्विग्नसंह्वीणै:**–निमग्नाश्च उद्विग्नाश्च संह्वीणाश्च (निमग्न + जस्, उद्विग्न + जस्, संह्वीण + जस्) तै:। 'चाऽर्न्थे द्वन्द्व:'[337] सूत्र से द्वन्द्व समास।

केचिद्वेपथु .... च केचन ।।43।।

506. **सरक्तम्**–रक्तेन सहित: (रक्त + टा सह/) तम्। 'तेन सहेति तुल्ययोगे'[338] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

मृगयुमिव .... पतत्त्रिराज् ।।44।।

507. **दक्षिणेर्मा**–दक्षिणे ईर्म (व्रणम्) यस्य अस्ति। (दक्षिण + ङि, ईर्म + सु) 'दक्षिणेर्मालुब्धयोगे' सूत्र से बहुब्रीहि समास।

508. **उग्रमुखम्**–उग्रं मुखम् यस्य स:। (उग्र + सु मुख + सु) उग्रमुख:। 'अनेकमन्यपदार्थे'[339] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

509. **पतत्त्रिराजम्**–पतत्त्रिणाम् राजा (पतत्त्रि + आम् राजन् + सु) तम्। 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास। समासान्त टच् प्रत्यय।

510. **त्रिमूर्धः**–त्रयो मूर्धानः यस्य सः (त्रि + जस्, मर्धून् + जस्) पूर्ववत् बहुब्रीहि समास।

शितविशिखनिकृत .... पूर्वलिंगतुल्य।। 45।।

511. **शितविशिखनिकृत्तकृत्स्नक्कत्रः** = शिताश्च ते विशिखाः (शित् + जस् विशिख + जस्) 'तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः'[340] सूत्र से कर्मधारय समास। शितविशिखाः। निकृत्तानि कृत्स्त्राणि वक्त्राणि यस्य सः (निकृत्त + जस्, कृत्स्त्र + जस्, वक्त्र + जस्) निकृत्स्नकृस्त्रवक्ता बहुब्रीहि समास। शितविशिखैः निकृत्तकृत्स्न वक्त्रः (क्षितविशिख + भिस्) निकृत्तकृत्स्नवृक्त्र + सु) तृतीया तत्पुरुष समास।

512. **क्षितिकम्पकीर्णश्रृंगः**–क्षितेः कम्पः (क्षिति + ङस्, कम्प + सु) 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास। क्षितिकम्पः। कीर्णानि श्रृंगाणि यस्य सः (कीर्ण + जस्, श्रृंग + जस्) 'अनेकमन्यपदार्थे'[341] सूत्र से बहुब्रीहि समास। कीर्णश्रृंगः। क्षितिकम्पेन शीर्णश्रृंगः (क्षितिकम्पा + टा, कीर्णश्रृंग + सु) तृतीया तत्पुरुष समास।

513. **अखिलकुलक्षयपूर्वलिंग तुल्यः।** अखिलं च तत् कुलम्। कर्मधारय समास। अखिलकुलम्, तस्य क्षयः षष्ठी तत्पुरुष समास। अखिलकुलक्षयः, पूर्वम् च तत् लिंगम् – पूर्वलिंगम (कर्मधारय समास) अखिलकुलक्षये पूर्वलिंगम् अखिलकुलक्षयपूर्वलिंगम्, तेन तुल्यः। तृतीया तत्पुरुष समास।

पञ्चम सर्ग

निराकरिष्णु .... खरदूषणौ।। 1।।

514. **खरदूषणौ** – पूर्ववत्।

तौ .... रणे ।। 2।।

515. **खङ्गगमुसलप्रासचक्रबाणगदाकरौ**–खङ्गश्च मुसलश्च प्रासश्च चक्रम् च वाणश्च गदा च 'चाऽर्थेद्वन्द्वः' सूत्र से द्वन्द्व समास। खडगमुसलप्रासचक्रबाणगदाः।

516. **आयुधच्छायम्**–आयुधानाम् छाया आयुधच्छायम् 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास। 'छाया बाहुल्ये'[342] सूत्र से पूर्वपदार्थबाहुलतानपुंसकलिङ्ग।

517. **रजः सन्तमसे**–रजः एव सन्तमसम् यस्मिन् तत्। 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से बहुब्रीहि समास।

अथ .... चक्रतुद्विषौ ।। 3।।

518. **तीक्ष्णायसैः**–तीक्ष्णम् आयसम् येषां ते (तीक्ष्ण + अम्, आयस् + स) तैः। 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से बहुब्रीहि समास।

519. **अधिमर्म**–मर्मसु इति (मर्म + सुप्–अधि) 'अव्ययंविभक्तिसमीप'[343] समृद्धिव्यद्धयर्था–भावात्ययासम्प्रतिशब्दप्रादुर्भावपश्चाद्यथाऽऽनुपूर्व्ययोंगपद्यसादृश्यसम्पत्तिसाकल्यान्तवचनेषु' विभक्ति सूत्र से विभक्त्यर्थे अव्ययीभाव समास।

520. **रघूत्तमौ**–रघुषु उत्तमौ (रघु + सुप् उत्तम् + औ) 'सप्तमी तत्पुरुष' समास।

हतबन्धुः .... पतिम् ।।4।।

521. **हतबन्धुः**–हतौ बन्धू यस्याः सा (हत + औ बन्धु + औ)। 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से बहुब्रीहि समास।

522. **शूर्पणखां**–शूर्पाणि इव नखा यस्याः सा। 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से बहुब्रीहि समास।

523. **पारसमुद्रम्**–समुद्रस्य पारम् (समुद्र + ङस्, पार + सु) 'पारेमध्ये षष्ट्या वा' सूत्र से अव्ययीभाव समास। एकदन्तत्वनिपातस्य 'नाऽव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्या'[344] सूत्र से अम् अभावः।

सम्प्राप्य .... रावणान्तिके ।।5।।

524. **राक्षससभम्** – राक्षसानाम् सभा इति (राक्षस + आम्, सभा + सु)। 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास। 'सभा राजाऽमनुष्य पूर्वा' सूत्र से नपुसंकलिङ्ग।

525. **क्रोधविह्वला**–क्रोधेन विह्वला (क्रोध + टा विह्वला + सु) तृतीया तत्पुरुष समास।

दण्डकान .... भूमिवर्धनो ।।6।।

526. **रक्षः प्रकाण्डकौ**–प्रकाण्डकौ च ते राक्षसी 'प्रशंसावचनैश्च'[345] इति समासः, रूढशब्दानामा विष्टलिंगकत्वेन स्वस्वलिंगनामे एव समानाधिकरण्यम्। अथवा रक्षसौ ⁄काण्डौ इव 'उपमितं व्याध्रादिभिः सामान्यऽप्रयोगे'[346] इति उपमित समास।

527. **सभृत्यौ**–भृत्यैः सहितौ (भृत्य + भिस + सह/स)। 'तेन सहेति तुल्ययोगे'[347] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

528. **भूमिवर्धनौ**–भूमेः वर्धनौ (भमि + ङस्, वर्धन + औ)। 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

विग्रहस्तव .... को नयः।।7।।

529. **बृहस्पतिपुरोधसा**–बृहताम् पतिः इति बृहस्पतिः। 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास। 'तदबृहवोः करपत्योश्चोरदेवतयोः सुट् तलोपश्च' सूत्र से सुट् 'त' लोप। बृहस्पतिः पुरोधा यस्य सः बृहस्पतिपुरोधाः तेन। 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से बहुब्रीहि समास।

530. **कुमारसेनान्या** – कुमारः सेनानीः यस्य सः (कुमार + सु सेनानी + सु) तेन। 'अनेकमन्यपदार्थे'[348] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

यद्यहं नाथ! .... चार दुर्बलः।।8।।

531. **विनासा**–विगता नासा यस्याः सा (वि + नासा)। 'अनेकमन्यपदार्थे'[349] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

532. **हतबान्धवा**–हतौ बान्धवौ यस्याः सा। 'अनेकमन्यपदार्थे'[350] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

533. **चारदुर्बलः**–चारेण दुर्बलः (चार + टा, दुर्बल + सु)। तृतीया तत्पुरुष समास।

करिश्यमाणं .... भवान् ।।9।।

534. **अज्ञः** – न ज्ञः इति। 'नलोपो नञ्' सूत्र से 'नञ् तत्पुरुष' समास।

वृतस्तवम् .... मुन्मना ।।10।।

535. **पात्रेसमितैः** – पात्रे समिताः, पात्रेसमिताः तैः 'पात्रेसमितादयश्च'[351] सूत्र से अलुकसमास निपात।

536. **पानशौण्डेः** – पाने शौण्डः (पान + ङि, शौण्ड + सु) 'सप्तमीशौण्डैः' सूत्र से सप्तमी तत्पुरुष समास।

537. **उत्मनाः** – उत्कण्ठितम् मनः यस्य सः (उद्–मनस् + सु)। 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से बहुब्रीहि समास। अत्वसन्तस्य चाधातोः' इति दीर्घत्वम्।

अध्वरेष्व .... अधुना ।।11।।

538. **महेन्द्रियम्** –महान् च असौ इन्द्रः (महत् + सु इन्द्र + सु) 'तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः'[352] सूत्र से कर्मधारय समास।

539. **दुश्च्यवनः**–दुष्टः च्यवनो यस्य सः। 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से बहुब्रीहि समास।

आमिक्षीयम् .... राक्षसाः ।।12।।

540. **दधिक्षीरम्**–दधि च क्षीरम् च (दधि + सु, क्षीर + सु) तत् 'विभाषावृक्षमृगतृण–धान्यव्यञ्जनपशुशकुन्यश्वत्वपूर्वापराङधरोत्तराणाम्' सूत्र से व्यञ्जन आदि अर्थ में द्वन्द्व समास। पुरोऽाश्यम् = पुरोडाशाय हितम् – (पुरोडाश + ङे हित + सु) तत् 'विभाषा हवि' रित्यादिना अपूपादित्वाद्यत्।' चतुर्थी तदर्थर्थबलिहित सुखरक्षितैः' सूत्र से 'चतुर्थी तत्पुरुष' समास।

युवजानिः .... शिलीमुखैः।।13।।

541. **युवजानिः**–युवतिर्जाया यस्य सः। 'अनेकमन्यपदार्थे'[353] सूत्र से बहुब्रीहि समास। (युवन् + सु, जाया + सु) 'जायाया निङ्' सूत्र से 'बहुब्रीहि समासान्त निङादेश। 'लोपो–व्योर्वलि' सूत्र से यकारलोपः। 'स्त्रियाः पुंवद्भाषितपुंसकारनूङ्समानाधिकरणे स्त्रियामपूरणीप्रियादिषु' सूत्र से पूर्वपद को पुवद्भाव।

542. **धनुष्पाणि** – धनुः पाणौ यस्य सः (धनुष् + सु पाणि + ङि.) 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से बहुब्रीहि समास। 'प्रहरणाऽर्थेभ्यः परे निष्ठासप्तम्यौ'[354] इति सप्तम्या परनिपातः नित्यम् समासेऽनुत्तर पदस्थस्य इति नित्य षत्वम्।

543. **शिलीमुखैः**–शिली मुखम् येषाम् ते (शिली + सु, मुख + सु) तैः। 'अनेकमन्यपदार्थे'[355] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

मांसान्योष्ठाऽवलोप्यानि .... दिशः ।।14।।

544. **ओष्ठाऽवलोप्यानि** – ओष्ठाभ्याम् अवलोप्यानि– (ओष्ठ + भ्याम्, अवलोप्य + जस्) 'कर्तृकरणे कृता बहुलम्'[356] सूत्र से 'तृतीया तत्पुरुष' समास।

सहायवन्त .... श्वसी: ।।16।।

545. **हस्तेकृत्य**–हस्ते कृत्वा इति हस्ते कृत्य–'नित्यं हस्ते पाणावुपयमने' सूत्र से हस्तशब्द की गति होने के कारण 'कुगतिप्रादय:' सूत्र से समास:। तत: क्त्वो ल्यप्।

लक्ष्मी: .... निरीक्षते ।।17।।

546. **पुंयोगात्** – पुंसा योग: (पुस् + टा, योग + सु)। तृतीया तत्पुरुष समास।

योषिद्वृन्दारिका .... परिमण्डला ।।18।।

547. **योषिद्वृन्दारिका**–योषित् च सा वृन्दारिका (योषित् + सु, वृन्दारिका + सु) 'वृन्दारकनागकुञ्जरै: पूज्यमानम्'[357] सूत्र से तत्पुरुष समास।

548. **दूर्वाकाण्डम्**–दुर्वाया: काण्डम् (दुर्वा + ङस् काण्ड + सु) 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष'[358] समास।

549. **न्यग्रोधपरिमण्डला**–न्यग्रोधम् इव परिमण्डला। 'उपमानानि सामान्यवचनै:' सूत्र से कर्मधारय समास।

नास्यम् .... विहितन्द्रिय: ।।19।।

550. **विहितेन्द्रिय:**–विहितानि इन्द्रियाणि यस्य स:। 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से बहुब्रीहि समास।

सारोऽसा .... निमञ्जथुम् ।।20।।

551. **इन्द्रियार्थानाम्**–इन्द्रियाणाम् अर्था: इति। (इन्द्रिय + आम्, अर्थ + जस्) तेषाम्। 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष'[359] समास।

552. **कान्तान्तरै:**–अन्या: कान्ता: इति। (अन्या + जस् कन्ता + जस्) कान्तान्तराणि तै:। 'मयूरव्यंसकादयश्च'[360] सूत्र से रूपक तत्पुरुष समास।

प्रत्यूचे .... ह्यहम् ।।23।।

553. **राक्षसेन्द्र:** – राक्षसा नाम् इन्द्र: = (राक्षस + आम् इन्द्र + सु) 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

मामुपास्त .... अनाद्रेसित: ।।24।।

554. **याष्टीकव्याहत:**–याष्टीकै: व्याहत: (याष्टीक + भिस्, व्याहित सु)। तृतीया तत्पुरुष समास।

555. **आज्ञालोभोन्मुख:** – आज्ञाया: लाभ: = (आज्ञा + ङस्, लाभ + सु)। 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास। आज्ञालाभ:। आज्ञालाभे उन्मुख: (आज्ञालाभ + ङि. उन्मुख + सु) सप्तमी तत्पुरुष समास।

556. **काक्षेण**–कुत्सितम् अक्षम्। 'कुगतिप्रादयः'[361] सूत्र से प्रादि तत्पुरुष समास।

557. **अनादरेक्षितः** – न आदरः इति। अनादरः 'नलोपो नञ्'[362] सूत्र से 'नञ् तत्पुरुष' समास।

558. **अनादरेण ईक्षितः** – (अनादर + टा, ईक्षित + सु)। तृतीया तत्पुरुष समास

विरूग्णोदग्रधाराऽग्रः .... बली ।।25।।

559. **विरुग्णोदग्रधाराऽग्रः**–धाराणाम् अग्रणि (धारा + आम्, अग्र + जस्) 'षष्ठी'[363] सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास। धाराग्रणि। विरूग्णानि उद्ग्राणि धाराग्राणि यस्य सः। 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से बहुब्रीहि समास।

560. **अभिन्नम्**–न भिन्न (तम्)। 'नलोपो नञ्' सूत्र से 'नञ् तत्पुरुष' समास।

कृत्या लंका .... तृणवद्त्यजम् ।।26।।

561. **लंकाद्रुमालानम्**–लंकायाः द्रुमः (लंका + ङस्, द्रुम + सु) लंकाद्रुमः। लंकाद्रुमः एव आलानम् यस्य सः (लंकाद्रुम + सु, आलान + सु)। 'अनेकमन्यपदार्थे'[364] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

आहोपुरुषिकाम् .... सदा ।।27।।

562. **आहोपुरुषिकाम्**–'अहोपुरुष इति यस्यां क्रियायाम् सा आहोपुरुषिका' इति काशिका। 'मयूरव्यसकादयश्च' सूत्र से आकृतिगण समासः।

563. **रत्नकान्तिभिः**–रत्नानाम् कान्तये (रत्न + आम् कान्ति + जस्) ताभिः। 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

564. **ध्वस्ताऽन्धकारे**–ध्वस्तः अन्धकारः यस्मिन् तत्। (ध्वस्त + सु अन्धकार + सु) तस्मिन्। 'अनेकमन्यपदार्थे'[365] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

565. **पूर्णेन्दोः**–पूर्णश्चसौ इन्दुः (पूर्ण + सु, इन्दु + सु) तस्य। 'तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः' सूत्र से कर्मधारय समास।

हृतरत्नः– .... गोत्रभि।।28।।

566. **हृतरत्न**–हृतानि रत्नानि यस्य सः (हृत + जस्, रत्न + जस्)। 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से बहुब्रीहि समास।

567. **च्युतोद्योगः**–च्युतः उद्योगः यस्य सः (च्युत + सु, उद्योग + सु)। 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से बहुब्रीहि समास।

568. **सत्रप**–त्रपया सहितः (त्रप + टा, सह / स)। 'तेन सहेति तुल्ययोगे'[366] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

569. **पूतक्रतार्यी**–पूताः क्रतवो यस्य सः (पूत + जस्, क्रतु + जस्) पूतक्रतुः। बहुब्रीहि समास।

अतुलयमहसा .... तद्विनिग्रहे ।।29।।

570. **अतुल्यमहसा** – न तुल्यम् इति। अतुल्यम् नञ् अतुल्यम् महः यस्य सः (अतुल्य + सु महस् + सु) तेन। 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से बहुब्रीहि समास।

571. **तद्विनिग्रहे**–विशिष्टः निग्रहः विनिग्रह 'कुगतिप्रादयः' सूत्र से प्रादि तत्पुरुष समास। तस्य विनिग्रहः (तत + ङसु, विनिग्रह + सु) तस्मिन्। 'षष्ठी'[367] सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

उत्पत्य खां .... चक्रमे ।।30।।

572. **दशग्रीवः**–दश ग्रवाी यस्य सः (दशन् + जस्, ग्रीवा + जस्)। 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से बहुब्रीहि समास।

573. **शिताऽस्त्रभृत्** – शितानि च तानि अस्त्राणि इति (शिव + जस्, अस्त्र + जस्) शिताऽस्त्राणि। 'तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः'[368] सूत्र से कर्मधारय समास। शिताऽस्त्राणि तानि विभर्तीति।

574. **समुद्रसविधावासम्**–समुद्रस्य सविधः इति। (समुद्र + ङस्, सविध + सु) (समुद्रसविधः) षष्ठी तत्पुरुष समास। समुद्रसविधे आवासः। (समुद्रसविध + ङि, आवास + सु) समुद्रसविधावासः तम् व्यधिकरण–बहुब्रीहि समास।

संपत्य– .... दशाननः ।।31।।

575. **तत्सनीडे**–तस्य सनीडः (तत + ङस्, सनीड + सु) तस्मिन्। 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

576. **श्रुतार्थेन**–श्रुतः अर्थः येन सः, (श्रुत + सु, अर्थ + सु) श्रुतार्थः–तेन। 'अनेकमन्यपदार्थे'[369] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

577. **दशाननः**–दश आननानि यस्य सः (दशन् + जस्, आनन + जस्)। 'अनेकमन्यपदार्थे'[370] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

अन्तर्धत्स्व .... दधद्धनुः ।।32।।

578. **राक्षसेश्वरः**–राक्षसानाम् ईश्वरः (राक्षस + आम्, ईश्वर + सु)। 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष'[371] समास।

579. **रघुव्याघ्रात्**–रघुषु व्याघ्रः (रघु + सुप्, व्याघ्रः + सु) तस्मात्। सप्तमी तत्पुरुष समास।

580. **हस्तरोधम्**–हस्तेन रोधः यस्य सः (हस्त + टा, रोध + सु) तत् 'व्याधिकरण'[372] बहुब्रीहि समास।

भवन्तं .... सार्वलौकिकम् ।।33।।

581. **हीनसन्धिम्**–हीनः च असौ सन्धिः (हीन + सु, सन्धि + सु) तम्। 'तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः'[373] सूत्र से कर्मधारय समास।

यमाऽस्यदृश्वरी .... सिंहनर्दिना ।।34।।

582. **यमाऽस्यदृश्वरी**–यमस्य आस्यम् (यम + ङस्, आस्य + सु)। यमास्यम् 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष'[374] समास। यमास्यम् दृष्टवती इति।

अध्यङ् .... मखे धनु ।।36।।

583. **मद्विधा**–मम इव विधा येषां ते। व्यधिकरण बहुब्रीहि।

584. **कन्याशुल्कम्**–कन्यायाः शुल्कम् (कन्या + ङस् शुल्क + सु) तत्। 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष'[375] समास।

सवित्तः .... मखेषु सः ।।37।।

585. **खरदूषणौ**–खरश्च दूषणश्च इति। 'चाऽर्थे द्वन्द्वः'[376] सूत्र से द्वन्द्व समास।

586. **ससुत्वानः**–सुत्वभिः सहिताः। 'तेन सहेति तुल्ययोगे'[377] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

सुखजातः ....– बलिविग्रहम् ।।38।।

587. **सुखजातः**–जातं सुखं यस्य सः, सुखजातः। 'अनेकमन्यपदार्थे'[378] सूत्र से बहुब्रीहि समास। 'जातिकालसुखादिभ्यः परानिष्ठावाच्य' इति सुखशब्दस्य पूर्वनिपातः।

588. **सुरापीतः**–पीताः सुराः येन सः (पीत + जस्, सुर + जस)। 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से बहुब्रीहि समास। वाऽऽहिताग्न्यादिषु इति वैकल्पिको निष्ठायाः परनिपातः।

589. **नृजग्धः**–ना जग्धो येन सः। 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से बहुब्रीहि समास।

590. **माल्यधारयः**–माल्यानाम् धारयः (माल्य + आम्, धारय + सु)। 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

591. **अधिलंकम्**–लंकायाम् इति। (लंका + ङि + अधि) 'अव्ययं विभक्तिसमीपसमृद्धि-व्यृद्धयर्थाऽभावात्ययाऽसम्प्रतिशब्दप्रादुर्भावपश्चाद्यथाऽऽनुपूर्व्ययौगपद्यसादृश्यसम्पतिसाकल्याऽन्तवचनेषु'[379] सूत्र से अव्ययी भाव समास।

592. **बलिविग्रहम्**–बलिना विग्रहः (बलि + टा , विग्रह + सु) तम्। तृतीया तत्पुरुष्ज्ञ समास।

तं भीतंका .... कि ततः।।39।।

593. **यातयामम्**–याताः यामाः यस्य सः। (यात + जस्, यामा + जस्) बहुब्रीहि समास।

अघानि .... क्षुद्रमानसम् ।।40।।

594. **लज्जाभयविभूषणाः**–लज्जा च भयम् च लज्जाभये। 'चाऽर्थेद्वन्द्व'[380] सूत्र से द्वन्द्व समास। लज्जाभये एव विभूषणे यस्याः सा (लज्जाभये + औ विभूषण + औ)। 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से बहुब्रीहि समास।

595. **स्त्रीजने**–स्त्री च असौ जनः स्त्रीजनः। 'तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः'[381] सूत्र से कर्मधारय समास।

596. **क्षुद्रमानसम्** – क्षुद्रम् मानसम् यस्य स् तम्। 'अनेकमन्यपदार्थे'[382] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

यद् गेहे .... न तत् ।। 41 ।।

597. **गेहेनर्दिनम्**–गेहे एव नर्दति इति ताच्छील: गेहेनर्दी, तं (णिनि)। 'पात्रेसमितादयश्च'[383] सूत्र से सप्तमी तत्पुरुष समास।

598. **कुब्रह्मयज्ञके**–कुत्सित: ब्रह्मा , कुब्रह्मा। 'कुगतिप्राश्यथं'। सूत्र स्र प्रादि तत्पुरुष समास। कुब्रह्मस्य यज्ञक: = कुब्रह्मयज्ञक: तस्मिन्। 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

चिरकालोषितम् .... कान्तिके ।। 42 ।।

599. **चिरकालोषितम्**–चिरम् काल:, चिरकाल:। 'सहसुपा' सूत्र से 'सुप्सुपा' समास। चिरकालम् उषितम् 'कालाध्वनोरत्यन्त संयोगे' सूत्र से द्वितीया विभक्ति। 'अत्यन्तसयोगे च'[384] सूत्र से द्वितीया तत्पुरुष समास।

600. **कीटनिष्कुषितम्**–कीटै: निष्कुषितम् – (कीट + भिस्, निष्कुषित + सु) तृतीया तत्पुरुष समास।

601. **क्षत्रियकान्तिके**–क्षत्रियकस्य अन्तिक: इति। (क्षत्रियक + ङस्, अन्तिक + सु) तस्मिन्। 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

वनपातसके- .... खरदूषणौ ।। 43 ।।

602. **वनतापसके**–वने तापसक: (वन + ङि, तापसक + सु) तस्मिन्। 'षष्ठी'[385] सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष'[386] समास।

603. **विपक्ष**:–विरुद्ध: पक्षो यस्य स:, विपक्ष: तस्मिन्। 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से बहुब्रीहि समास।

604. **खरदूषणौ**–पूर्ववत्।

त्वं तु भीरु .... न सदा ।। 44 ।।

605. **सुदुर्बुद्धे**–दुष्टा बुद्धि: यस्य स: इति दुर्बुद्धि:। 'अनेकमन्यपदार्थे'[387] सूत्र से बहुब्रीहि समास। अत्यन्तं दुर्बुद्धि: 'कुगतिप्रादय:' सूत्र से 'प्रादितत्पुरुष' समास।

शीर्षच्छेद्यमतोऽहं .... वनौकसौ ।। 45 ।।

606. **शीर्षच्छेद्यम्** – शीर्षस्य छेद: (शीर्ष + ङस्, द्देध + सु) 'षष्ठी'[388] सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

607. **क्षितिवर्द्धनम्**–क्षिते: वर्द्धन: (क्षिति + सु वर्द्धन + सु) तम्। 'षष्ठी'[389] सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

608. **वनौकसौ** –वनम् ओक ययो: तौ (वन + सु ओक + सु)। 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से बहुब्रीहि समास।

तमुद्यतनिशा – .... भवामि ते ।।46।।

609. **उद्यतनिशाताऽसिम्**–उद्यतः निशातः असिर्येन सः (उधतु + सु, निशात + सु, असि + सु) 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से बहुब्रीहि समास।

610. **अभ्यमित्र्यः**–न मित्रम् इति अमित्रम्। 'नलोपो नञ्' सूत्र से 'नञ् तत्पुरुष' समास। अमित्रस्य अभिमुखम् , (अभि + अमित्र + सु)

611. **अभिमित्रम्** – 'लक्षणेनाभिप्रती आभिमुख्ये' सूत्र से अव्ययी भाव समास। अभ्यमित्रमलम् गच्छति इति–अभ्यमित्र्यः।

हरामि .... सन्तनु– ।।47।।

612. **रामसौमित्री** – रामश्च सौमित्रिश्च (राम + सु, सौमित्रि + सु) 'चाऽर्न्थेद्वन्द्वः सूत्र से द्वन्द्व समास।

613. **यथेष्टम्**–इष्टम् अनतिक्रम्यः इति। (इष्ट + सु यथा) 'अव्ययंविभक्तिसमीपसमृद्धि–व्यद्धयर्थाभावात्ययासम्प्रतिशब्दप्रादुर्भावपश्चाद्यथाऽऽनुपूर्व्ययोंगपद्यसादृश्यसम्पत्तिसाकल्यान्तवचनेषु' सूत्र से अनतिक्रम्य अर्थ में अव्ययी भाव समास।

ततश्चित्री .... लोभयन् ।।48।।

614. **यथामुखीनः**–मुखस्य सदृशम्–यथामुखम्।'यथाऽसादृश्ये' सूत्र से अव्ययीभाव समास।'प्रतिबिम्बम् निपातनात्सादृश्येऽव्ययीभावः'।[390] यथामुखम् दर्शनः, यथामुखीनः।

तेन– .... अजिनम् ।।49।।

615. **मृगलोचना**–मृगस्य इव लोचने यस्याः सा।'व्याधिकरण' समास।

616. **मृगाऽजिनम्** – मृगस्य अजिनम् , (मृग + ङस्, अजिन + सु)।'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

617. **विपुलोरस्कम्**–विपुलम् उरः यस्य सः। (विपुल + सु उरस् + सु) तम्।'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से बहुब्रीहि समास।'उरः प्रीृतिभ्यः कप्' इति समासान्त कप्।

योगक्षेपकरं .... गजविक्रमः ।।50।।

618. **योगक्षेकरम्**–योगश्च क्षेमश्च (योग + सु, क्षेम + सु) 'चाऽर्थेद्वन्द्वः' सूत्र से द्वन्द्व समास। योगक्षेमौ करोति तत् , हेत्वर्थे 'ट' प्रत्यय।

619. **गजविक्रमः** – गजस्य इव विक्रमः यस्य सः। (गज + ङस्, विक्रम + सु)।'अनेकमन्यपदार्थे'[391] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

स्थायं .... विसिष्मिये ।।51।।

620. **चित्रवृतिम्**–चित्रा वृतिः यस्य सः चित्रवृतिः तम्।'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से बहुब्रीहि समास।

चिरं क्लिशित्वा .... क्षणदाचरम् ।। 52 ।।

621. **विलुभितप्लवम्**–विलुभिता: प्लवा: यस्य स:। (विलुभित + जस्, प्लवा + जस्) तम्। 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से बहुब्रीहि समास।

श्रुत्या – .... गन्तुमैजिहत् – ।। 53 ।।

622. **विस्फूर्जथुप्रख्यम्**–विशिष्ट: स्फूर्जथु: (वि + स्फूर्जथु:)। 'कुगतिप्रादय:' सूत्र से प्रादितत्पुरुष समास:। विस्फूर्जयु: प्रख्या (सादृश्यम्) यम्य स: विस्फूर्जयुप्रख्य: तम.। बहुब्रीहि समास।

623. **कष्टश्रितम् = कष्टम् श्रित: (कष्ट + अम्, श्रित + सु) तम्।** 'द्वितीया श्रिताऽतीतपतितगताऽत्यस्तप्राप्तापन्नै:' सूत्र से द्वितीया तत्पुरुष समास।

एष .... राघवम् ।। 54 ।।

624. **प्रावृषिजाम्भोदनादी**–प्रावृषिज: च असौ अम्भोद: प्रावृषिजाऽम्भोद: 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से बहुब्रीहि समास। स इव नदति इति–प्रावृषिजाऽम्भोदनादी 'कर्तर्युपमाने' सूत्र से णिनि:।

रामसंघुषितम् .... ताम् – ।। 55 ।।

625. **रामसंघुषितम्** – रामस्य संघुषितम् (राम + ङस्, संघुषित + सु)। 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

626. **रामस्वनितसकांश:** – रामस्य स्वनितम् (राम + ङस्, स्वनित + सु)। 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास। रामस्वनितेन सदृश: 'पूर्वसदृशसमोनार्थकलहनिपुणामिश्रश्लक्ष्णै:'[392] सूत्र से तृतीया तत्पुरुष समास।

आप्यान .... क: क्षम: ।। 56 ।।

627. **आप्यानस्कन्धकण्ठाऽसम्**–स्कन्धश्च कण्ठश्च असंश्च (स्कन्ध + सु, कण्ठ + सु, अंस + सु) 'द्वन्द्वश्च प्राणितूर्यसेनागंनाम्' सूत्र से द्वन्द्व समास। आप्यानम् स्कन्धकण्ठासम् यस्य स: (आप्यान + सु, स्कन्धकण्ठासम् सु) तम्। 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से बहुब्रीहि समास।

देहम् .... मुमूर्षया ।। 57 ।।

628. **अस्त्राग्नौ**–अस्त्रम् अग्नि: इव– (अस्त्र + सु, अग्नि + सु) तस्मिन्। 'उपमितं व्याघ्रादिभि: सामान्यप्रयोगे'[393] सूत्र से 'उपमानोत्तरपद कर्मधारय' समास।

629. **ज्याघुष्टकठिनाऽगुष्ठम्** – ज्याया: घुष्टम् (ज्या + ङस्, घुष्ट + सु) षष्ठी तत्पुरुष समास। ज्याघुष्टम्। कठिनौ अंगुष्ठौ यस्य स:–कइिनाऽङ्गुष्ठ:। बहुब्रीहि समास। ज्याघुष्टेन कठिनांगुष्ठ: (ज्याघुष्ट + टा, कठिनागुष्ठ + सु) तम्। तृतीया तत्पुरुष समास।

शत्रून् .... पतिः ।।58।।

630. **कृताऽर्थः**–कृतः अर्थः येन सः।'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से बहुब्रीहि समास।

मृषोधं .... शपन्वशी।।60।।

631. **शत्रुहस्तम् – शत्रोः हस्तः** (शत्रु + ङस्, हस्त + सु) तम्।'षष्ठी'[394] सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

गते .... मृदलाबुनः ।।61।।

632. **जलशुचिः**–जलेन शुचिः। (जल + टा, शुचि + सु)। तृतीया तत्पुरुष समास।

633. **शुद्धदन्**–शुद्धा दन्ता यस्य सः। 'अनेकमन्यपदार्थे' [395] सूत्र से बहुब्रीहि समास। 'अग्राऽन्तशुद्धशुभ्रवृषवराहेभ्यश्च' सूत्र से दन्तशब्दस्य विभाषया दत्रादेशः।

634. **अक्षमालावान्**–अक्षाणाम् माला (अक्ष + आम, माला + सु) 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास। सा. अस्या अस्ति इति (मतुप्)

635. **मृदुलाबुनः**–मृत् च अलाबु च (मृत् + सु, अबालु सु) तस्य।'जातिरप्राणिनाम' सूत्र से समाहार द्वन्द्वः।

कमण्डलुकपालेन– .... दण्डवान् ।।62।।

636. **कमण्डलुकपालेन**–कमण्डलुः एव कपालम् (कमण्डलु + सु, कपाल + सु) कमण्डलुकपालम् तेन 'मयूरव्यंस्कादयश्च'[396] सूत्र से रूपक समास।

अधीयत्– .... विलोकयन् ।।63।।

637. **आत्मविद्विद्याम्**–आत्मविदाम् विद्या (आत्मविद् + आम्, विद्या + सु) ताम्।'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

638. **मस्करिव्रतम्**–मस्करिणाम् व्रतम् (मसकरि + आम्, व्रत + सु) तत्। 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' [397]समास।

सायन्तनीम् .... शुचिस्मिता ।।65।।

639. **शुचिस्मिता**–शुचिः स्मितम् यस्याः सा (शुचि + सु, स्तिम + सु)।'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से बहुब्रीहि समास।

का त्वमोकाकिनी .... कथं न वा ।।66।।

640. **निरन्वयजने**–निर्गतः अन्वयः येषां ते (निर् – अन्वय + सु) बहुब्रीहि समास। निरन्वयाः जनाः यस्मिन् तत् – (निरन्वय + जस् जन + जस्) तस्मिन्।'अनेकमन्यपदार्थे'[398] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

641. **अपालाम्**-अविद्यमानः पालः यस्याः सा 'अपाला' ताम्। 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से बहुब्रीहि समास।

हृदय - .... हेतुना ।।67।।

642. **हृदयंगममूर्तिः** - हृदयंगमा मूर्तिः यस्याः सा (हृदयंगमा + सु, मूर्ति + सु)। 'अनेकमन्यपदार्थे'[399] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

परिपर्युदधे- .... सुजीकितम् ।।69।।

643. **आद्युलोकात्** - द्यु च असौ लोकः इति द्युलोकः। कर्मधारय समास। 'आङ्मर्यादाऽभिविध्योः'[400] सूत्र से विकल्प से अव्ययी भाव समास।

644. **सुजीवितम्** - शोभनम् जीवितम् 'कुगतिप्रादयः' सूत्र से प्रादितत्पुरुष समासः।

आपीत- .... मे मति।।70।।

645. **आपीतमधुका**-आपीतम् मधुः यस्याः सा-(आपीत + सु, मधु + सु)। 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से बहुब्रीहि समास।

646. **सुदिवा**-शोभनम् दिवा यस्याः सा (सु दिवा + सु) बहुब्रीहि समास।

647. **सत्परिमललक्ष्मीका**-परिमलस्य लक्ष्मीः (परिमल + ङस्, लक्ष्मी + सु) 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठो तत्पुरुष'[401] समास। परिमललक्ष्मी।

वल्गूयन्ती .... ते ।।73।।

648. **स्थाणुसमः** - स्थाणुना समः। (स्थाणु + टा, सम + सु) 'पूर्वसदृशसमोनार्थकलहनिपुणमिश्रश्लक्ष्णैः'[402] सूत्र से तृतीया तत्पुरुष समास।

कः पण्डित - .... वनम् ।।75।।

649. **अमिषसन्निभास्** - अभिषेण सदृशी इति। अभिषसन्निभा ताम्। 'पूर्वसदृशसमोनार्थकलहनिपुणमिश्रश्लक्ष्णैः' सूत्र से तृतीया तत्पुरुष समास।

ओजायमाना .... वचः ।।76।।

650. **सादरा**-आदरेण सहिता। 'तेन सहेति तुल्ययोगे' सूत्र से बहुब्रीहि समास।

651. **दशमूर्धानम्**-दश मूर्धानः यस्य सः = (दश + जस्, मूर्धन + जस्) तम् 'अनेकमन्यपदार्थे'[403] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

महाकुलीन .... तपस्विनाम् ।।77।।

652. **महाकुलीनः** - महत् च तत् कुलम् (महत् + सु, कुल + सु)। 'तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः' सूत्र से कर्मधारय समास। महाकुलम्। तत्र भवो महाकुलीनः 'ख' प्रत्यय।

निहन्ता .... रणे ।। 78 ।।

653. **'पारश्वधिकरामस्य'**–पाश्वधिकश्च असौ रामः। (पारश्वधिक + सु, राम + सु) तस्य। 'तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः' सूत्र से कर्मधारय समास।

पतत्रिक्रोष्टु– .... शेरते– ।। 80 ।।

654. **बाणनिकृत्तानि**–बाणैः निकृतानि (बाण + भिस्, निकृत + जस्) तृतीया तत्पुरुष समास।

655. **पतत्रिक्रोष्टु जुष्टानि** – पतत्रिणश्च क्रोष्टारश्च (पतत्रिन् + जस्, क्रोष्ट + जस्) 'चाऽर्थे द्वन्द्वः'[404] सूत्र से द्वन्द्व समास। पतत्रिक्रोष्टुभिः जुष्टानि (पतत्रिक्रोष्टु + भिस्, जुष्ट + जस्) तृतीया तत्पुरुष समास।

656. **श्रेणीभूतानि** – 'अश्रेणयः श्रेणयः भूतानि' इति। 'ऊर्यादिच्विडाच्य' सूत्र से गतित्वात् 'कुगतिप्रादश्च'[405] सूत्र से 'गतितत्पुरुष' समास।

दीव्यमानम् .... नाऽवगच्छसि ।। 81 ।।

657. **महागदाः** – 'महत्यः' चता गदाः (महत् + जस्, गदा + जस्) ताः। 'तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः'[406] सूत्र से कर्मधारय समास।

अथ – .... दशाननः ।। 83 ।।

658. **कषायाक्षः** – कक्षाये अक्षिणी यस्य सः (कषाय + औ, अक्षि + औ) 'बहुब्रीहौ सक्थ्यक्ष्णो स्वांगात्षच्'[407] इति समासान्तः षच्।

659. **स्यन्नस्वेदकणोल्बणः**–स्वेदानाम् कणाः (स्वेदः आम्, कण + जस्)। षष्ठी तत्पुरुष समास। स्वेदकणाः। स्यन्नाश्च ते स्वेदकणाः (सयन्न + जस्, स्वेदकण + जस्) कर्मधारय समास। स्यन्नस्वेदकणैः उल्बणः (स्यन्न सवेदकण + भिस् उल्बण + सु) तृतीया तत्पुरुष समास।

660. **दशाननः** – दश आननानि यस्य सः – पूर्ववत् बहुब्रीहि समास।

कृते – .... राघवम् ? ।। 84 ।।

661. **नग्नमुषितप्रख्यम्** – प्राक् मुषितः पश्चात् नग्नः, नग्नमुषितः 'पूर्वकालैकसर्वजरत्पराणनवकेवलाः समानाऽधिकरणेन'[408] सूत्र से कर्मधारय समास। राजदन्तादित्वात् 'राजदन्तादिषु परम्'[409] इति पूर्व कालस्य परनिपातः। नग्नमुषितेन प्रख्या (सादृश्यम्) यस्य सः (नग्नमुषित + टा, प्रख्य + जस्) तम्। व्यधिकरण बहुब्रीहि समास।

राक्षसान् .... स्मयः ।। 85 ।।

662. **बटुयज्ञेषु**–बटूनाम् यज्ञाः (बटु + आम्, यज्ञ + जस्) तेषु। 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

663. **पिण्डीशूरान्**–पिण्ड्याम् एव शूराः इति पिण्डीशूराः तान्। 'पात्रेसमितादयश्च'[410] सूत्र से तत्पुरुष समास।

664. **कूपमाण्डूकि**–कूपे माण्डूकी (इव) कूपमाण्डूकी। 'पात्रेसमितादयश्च'[411]–सूत्र से तत्पुरुष समास।

मत्पराक्रम .... यथा हरिः ।।86।।

665. **मत्पराक्रमसंघिप्तराज्यभोग परिच्छदाः** – मम पराक्रमः। (मत् + ङस्, पराकम + सु) मत्पराक्रमः। 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास। भोगस्य परिच्छदाः – (भोग + ङस्, परिच्छद + जस्) भोगपरिच्छदाः 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास। मत्पराक्रमेण संघिप्ता (मत्पराक्रम + टा, संघिप्ता + सु) मत्पराक्रमसंघिप्ता तृतीया तत्पुरुष समास। राज्यम् च भोगपरिच्छदाः च **चाऽर्थे द्वन्द्वः सूत्र** से द्वन्द्व समास। राज्यभोगपरिच्छदाः मत्पराक्रम संघिप्ता राज्यभोग परिच्छा यस्य सः। बहुब्रीहि समास।

निर्लङ्कः .... कारणम्? ।।87।।

666. **निर्लङ्क :** निष्क्रान्तः लंकायाः इति विग्रहे (निर् – लंका + ङसि्) निरादयः क्रान्ताद्यर्थे पञ्चम्याः' इति समासः, 'द्विगुप्राप्तापन्नालम्पूर्वगतिसमासेषुप्रतिषेधो वाच्यः' इति परलिंगताप्रतिषेधाद्विशेष्यलिंगता, 'एकविभक्ति चाऽपूर्वनिपाते' इति, लंकाशब्दस्य उपसर्जनत्वात् 'गोस्त्रियोरूपर्जनस्य' इति उपसर्जनह्रस्वत्वम्।

667. **हृतपुष्पकः**–हृतम् पुष्पकम् यस्मात् सः (हृत + सु, पुष्पक + सु)। 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से बहुब्रीहि समास।

668. **विमदः** – विगतः मदः यस्य सः (वि – मद + सु)। 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से बहुब्रीहि समास।

669. **अन्तर्गिरम्**–'गिरौ इति' (गिरि + ङि, अन्तर्) 'अव्ययंविभक्तिसमीप'[412] समृद्धि–व्यद्धयर्थाभावात्ययासम्प्रतिशब्दप्रादुर्भावपश्चाद्यथाऽऽनुपूर्व्ययोंगपद्यसादृश्यसम्पत्तिसाकल्यान्तवचनेषु' सूत्र से विभक्ति अर्थ में अव्ययी भाव समास। 'गिरेश्च सेनकस्य' इति विकल्पादव्ययीभाव समासान्त टच्।

भिन्ननौक ....– निरुद्यतिः ।।88।।

670. **भिन्नौकः** – भिन्नानौः यस्य सः (भिन्न + जस्, नौ + जस)। बहुब्रीहि समास। 'उरःप्रभृतिभ्यः कप्' इति समासान्तः कप्।

समुद्रोपत्यका .... मैथिलि ।।89।।

671. **समुद्रोपत्यका** – समुद्रस्य उपत्यका (समुद्र + ङस्, उपत्यका + सु)। 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

672. **पर्वताधित्यका** – पर्वतस्य अधित्यका (पर्वत + ङस्, अधिव्यका + सु)। 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष'[413] समास।

673. **रत्नपारायणम्**-रत्नानाम् पारम् (समाप्ति) (रत्न + आम्, पार + सु)। 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष'[414] समास। रत्नपारम् तस्य अयनम् (स्थानम्) 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

आवासे .... मया सह।।90।।

674. **सिक्तसंमृष्टे** – पूर्वम् सिक्तः पश्चात् संसृष्टः, – सिक्तसंमृष्टः तस्मिन् 'पूर्वकालेकसर्वजरतपुराणनवकेवलाः समानाधिकरणेन'[415] सूत्र से कर्मधारय समास।

675. **लिप्तवासिता**–'पूर्वम् लिप्ता पश्चात् वासिता' 'पूर्वकालेकसर्वजरतपुराणनवकेवलाः समानाधिकरणेन'[416] सूत्र से कर्मधारय समास।

676. **अर्पितोरुसुगन्धितस्रकम्** – शोभना गन्धा यासां ताः सुगन्धः। बहुव्रीहि समास। अर्पिता उरवः सुगन्धयः स्रजः यस्याः सा। 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से बहुव्रीहि समास।

संगच्छ .... किञ्चनम् ।।91।।

677. **प्रोष्यपापीयान्** – प्रोष्य पापीयान् 'मयूरव्यंसकादयश्च' सूत्र से रूपक तत्पुरुष समास।

678. **अकिञ्चनम्**-नाऽस्ति किञ्चन यस्य सः = अकिञ्चनः तम्। 'अनेकमन्यपदार्थे'[417] सूत्र से बहुव्रीहि समास।

अश्नीत- .... वरमन्दिरे।।92।।

679. **स्मरकर्मणि**-स्मरस्य कर्म (स्मर् + ङस्, कर्मन् + सु) तस्मिन्। 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

680. **दशग्रीवम्**-दश ग्रीवा यस्य स (दशन् + जस्, ग्रीवाः + जस्) तम्। 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से बहुब्रीहि समास।

681. **वरमन्दिरे**-वरम् च तन्मन्दिरम् = (वर + सु, मन्दिर + सु) तस्मिन्। 'तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः' सूत्र से कर्मधारय समास।

मा स्म- .... भव।।93।।

682. **वक्षः संमर्दिनी**-वक्षसः संमर्दिनि (वक्षस् + सु, संमर्दिनी सु)। 'षष्ठी'[418] सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

तां .... निशाचरः ।।94।।

683. **भीमविग्रहः**-भीमः विग्रहः यस्य सः (भीम + सु, विग्रह + सु)। 'अनेकमन्यपदार्थे'[419] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

त्रस्यन्तीम् .... मृगपक्षिणः ।।95।।

684. **रात्रिञ्चरालयम्**–रात्रिचराणाम् आलयः (रात्रिचर + आम्, आलय + सु) तम् व 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठो तत्पुरुष'[420] समास।

685. **मृगपक्षिणः**–मृगाश्च पक्षिणश्च 'चाऽर्थे द्वन्द्वः' सूत्र से द्वन्द्व समास।

686. **तूष्णीभूय**–तूष्णीम् भूत्वा इति विग्रहे। 'तूष्णीमि भुवः'[421] इति पक्षे क्त्वा प्रत्ययः 'क्त्वां च।' इति पक्षे समासे ल्यबादेशः।

उच्चै .... वदन् ।।96।।

687. **रामलक्ष्मणौः**–रामश्च लक्ष्मणश्च। 'चाऽर्थेद्वन्द्वः' सूत्र से द्वन्द्व समास।

688. **पक्षीन्द्रः**–पक्षीणाम् इन्द्रः (पक्षि + आम्, इन्द्र सु)। 'षष्ठी' सूत्र से 'षष्ठी तत्पुरुष' समास।

द्विषन् .... मम ।।97।।

689. **वनेचराग्रयाणाम्**–वने चरन्ति इति वनेचराः। 'चरेष्टः'[422] सूत्र से ट प्रत्ययः। 'तत्पुरुषे कृति 'बहुलम्' सूत्र से लोप। वनेचरेषु अग्रया–वनेचराग्रयाः तेषाम्। सप्तमी तत्पुरुष समास।

690. **आदायचरः**–आदाय चरति भिक्षासेनादायेषु च इति 'ट' प्रत्ययः।

पिशाचमुख – .... शालिनम् ।।103।।

691. **पिशाचमुखधौरेयम्**–पिशाचस्येव मुखं येषा ते पिशाच्मुखाः। व्याधिकरण बहुब्रीहि समास। ते धौरेया यस्य सः पिशाचमुखधौरेयः तम्। 'अनेकमन्यपदार्थे'[423] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

692. **सच्छत्रकवचम्**–छत्रं च कवचम् च छत्रकवचैन 'चाऽर्थेद्वन्द्वः' सूत्र से द्वन्द्व समास। छत्रकवचाभ्याम् सहितः। सच्छत्रकवचः तम् 'तेन सहेति तुल्ययोगे' बहुब्रीहि समास।

संत्रास्याञ्चकाराऽरिं .... बाहुना ।।104।।

693. **विशंतिवाहुना**–विशंतिः बाहवः यस्य सः तेन। 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से बहुब्रीहि समास।

असीतः .... खगः ।।105।।

694. **असीतः**–अविद्यमाना सीता यस्य सः। बहुब्रीहि समास।

695. **नखतुण्डायुधः** – नखाश्च तुण्डम् च 'नखतुण्डम्' 'द्वन्द्वश्च प्राणितूर्यसेनांगनाम्' सूत्र से प्राण्यङ्गत्वात्समाहर द्वन्द्वः। नखतुण्डम् एव आयुधम् यस्य सः। बहुब्रीहि समास।

उपासञ्चिक्रिरे – .... पतत्रिणः 107/5

696. **देवगन्धर्वकिन्नराः**–देवाश्च गन्धर्वाश्च किन्नराश्च (देव + जस्, गन्धर्व + जस्, किन्नर + जस्)। 'चाऽर्थेद्वन्द्वः'[424] सूत्र से द्वन्द्व समास।

प्रलुठितमवनौ .... रामकान्ताम्।। 108।।

697. **दशवदनः** – दश वदनानि यस्य सः। (दश + जस्, वदन + जस्)। 'अनेकमन्यपदार्थे'[425] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

698. **खचरोत्तमम्** –खचरेषु उत्तमः (खचर + सुप्, उत्तम + सु) तम्। सप्तमी तत्पुरुष समास।

699. **भीमधुर्यम्**–भीमा धूर्या यस्मिन् सः (भीम + सु, धूर्य + सु)। 'अनेकमन्यपदार्थे'[426] सूत्र से बहुब्रीहि समास।

700. **रथवरम्** –रथेषु वराः (रथ + सुप् वर + जस्) तम्। सप्तमी तत्पुरुष समास।

701. **स्वपुरम्**–स्वस्य पूः (स्व + ङस्, पुर + सु) तत्। 'षष्ठी' सूत्र से षष्ठी तत्पुरुष समास। '**ऋक्पूरब्धूः** पथामानक्षे'[427] सूत्र से समासान्त 'अ' प्रत्यय।

2. समस्त पद में पूर्व प्रयोग निर्णयपूर्वक समस्त पद का लिङ्ग निर्धारण

* **अव्ययीभाव समास** में '**अव्ययीभावश्च**'[428] सूत्र 2/4/18 से नपुंसकलिङ्ग होता है। जैसे–ईप्सितम् अनतिक्रम्य– 'यथेप्सितम्'[429] इस उदाहरण में अदन्त के स्थान पर सु का लोप न होकर अम् हो गया। '**नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्या;**' 2/4/53 सूत्र से।
* **अयोध्याम् अभि**–अभ्योध्यम्–यहाँ '**ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपादिकस्य**' सूत्र से आकारान्त को ह्रस्व अदन्त होकर अम् से नपुंसकत्व हुआ।
* **उपजानु**–जानुनः समीपम्–यहाँ '**अव्यायादाप्सुपः**'[४३०] से सुप् का लोप होकर नपुंसकत्व स्पष्ट हुआ।
* **अनुरहसम्**–रहसि इति–यहाँ 'टच्' प्रत्यय होकर अदन्त हुआ तथा अदन्त को नपुंसकत्व में अम् होता है।
* **आद्युलोकात्**–द्युलोकात् पर्यन्तम्–पञ्चमी में 'अदन्त को अम् न होकर पञ्चम्यन्त रूप बना' '**नाव्यीभावादतोऽम्त्वपचम्याः**' सूत्र से।
* **अन्तर्गिरम्**– 'गिरौ इति'–गिरि शब्द से समासान्त 'टच्' प्रत्यय होकर अदन्त हुआ तथा अदन्त नपुंसकलिंग में अम् हो जाता है।

तत्पुरुष समास में उसक भेद कर्मधारय में '**प्रायेणोत्तरपदार्थप्रधानस्तत्पुरुषस्तृतीपा**'[४३१] से उत्तर पद के अर्थ की प्रधानता रहती है अर्थात् उत्तर पद के अनुसार लिंग विभक्ति का निर्धारण होता है। क्योंकि द्वन्द्व तथा तत्पुरुष समास का लिंग उस समास के उत्तर पद के लिङ्ग समान होता है। 2/4/26

जैसे–

मधुलेहिगीतौ–यहाँ उत्तर पद गीति के कारण स्त्रीलिंग सप्तमी।

तीयावशेषेण–षष्ठी तत्पुरुष–पुल्लिंग तृतीया एकवचन

शैलाधिपस्य–षष्ठीतत्पुरुष–पुल्लिंग षष्ठी एकवचन

आत्मकृतान्–तृतीयातत्पुरुष–पुल्लिंग द्वितीया एकवचन

अन्यमृगेन्द्रान्–कर्मधारय–पुल्लिंग द्वितीया बहुवचन

शैलकुञ्जे–षष्ठी तत्पुरुष–पुल्लिंग सप्तमी एकवचन

गभस्तिधाराभिः–षष्ठी तत्पुरुष–स्त्रीलिंग तृतीया बहुवचन

लोचनलोभनीयाः–षष्ठी तत्पुरुष–स्त्रीलिंग द्वितीया बहुवचन

ऋज्वायताः–कर्मधारय–स्त्रीलिंग द्वितीया बहुवचन

प्रादि गति संज्ञक तत्पुरुष समास में 'एक विभक्ति चाऽपूर्वनिपाते सूत्र(1/2/44) से जिससे निश्चित एक ही विभक्ति आती हो उस पद की उपसर्जन संज्ञा होती है किन्तु पूर्व निपात नहीं होता और स्त्री प्रत्ययान्त शब्द जिसके अन्त में हो ऐसे प्रातिपादिकान्त को ह्रस्व आदेश हो जाता है। अर्थात् गति समास में परलिङ्गता का निषेध होता है और विशेष्य के अनुसार लिंग व्यवस्था होती है।'

जैसे–मात्राम् अतिक्रान्तम् में–अतिमात्रम्–अन्तिक्रान्तिम् पद का विशेषण हुआ। अतः नपुंसकलिंग है।

अधिष्ठात्री देवता–अधिदेवता। यहाँ आकृतिः स्त्रीलिंग का विशेषण होने से स्त्रीलिंग रूप है।

द्विगु समास समाहार अर्थ में नपुंसकलिंग एकवचन होता है।[5]

जैसे–द्वयोः अञ्जल्योः समाहारः इति द्वयञ्जलम्–नपुंसकलिंग एकवचन।

उपपद समास में अतिङ्ग होने के कारण[6] प्रत्ययान्त के अनुसार लिंग का निर्धारण होता है या विशेष्य अनुसार लिंग होता है जैसे निशायाम् चरति–निशाचरः, यहाँ 'ट' प्रत्यय का प्रयोग हुआ। अतः स्त्रीलिंग में ङीप् होकर निशाचरी रूप बनता है।

रात्रौचरति–इति–रात्रिचरी

प्रियम् वदति–इति प्रियंवदा आदि।

बहुव्रीहि समास में प्रायः अन्यपद के अर्थ की प्रधानता होती है। 'प्रायेणान्यपदार्थप्रधानो 'बहुव्रीहिश्चतुर्थः'। बहुव्रीहि में समस्यमान पद उस अन्य पद का केवल विशेषण बनकर रह गया है। अतः बहुव्रीहि के लिए कहा गया है 'सर्वोपसर्जनो' अर्थात् बहुव्रीहि में सब पद उपसर्जन अर्थात् गौण होते हैं। जैसे–

सीतया सहितौ इति ससीतौ–यहाँ राम व लक्षण का विशेषण होने के कारण पुल्लिंग द्विवचन का प्रयोग हुआ।

विगतः धवः यासां ताः – विधवाः। यहाँ 'विधवाः' कौशल्या आदि रानियों का विशेषण होने से स्त्रीलिंग बहुवचन में प्रयोग हुआ।

* **दश वदनानि यस्य सः**–दशवदनः। यहाँ 'रावण' का विशेषण होने के कारण पुल्लिंग एकवचन रूप बना। इत्यादि

* अविद्यमानः नृपः यस्यां सा-अनृपा। नृपशब्द पुल्लिंग। किन्तु पृथ्वी का विशेषण होने से स्त्रीलिंग रूप हुआ।
* द्वौ मूर्धानौ येषां ते-द्विभूर्धान्-यहाँ मूर्धन् शब्द नकार पुल्लिंग है किन्तु समासान्त 'ष' प्रत्यय होकर द्विमूर्ध बना तथा राक्षसों का विशेषण होने से पुल्लिंग रामवत् द्वितीया बहुवचन।
* बहवः मूर्धानः येषां ते-बहुमूर्धानः-यहाँ 'ष' प्रत्यय न होने के कारण नकाराकान्त पुल्लिंग द्वितीया बहुवचन है।

द्वन्द्व समास में 'प्रायेणोभयपदार्थप्रधानो द्वन्द्वः पञ्चम' दोनों पदों के अर्थ की प्रधानता होती है किन्तु द्वन्द्व समास पद विशेष की व्यवस्था अलग से दी गई है एवं समाहार द्वन्द्व नपुसंक लिंग एकवचन में होता है। इतरेतर द्वन्द्व में उत्तरपद के अनुसार लिंग एवं विभक्ति की व्यवस्था होती है। जैसे रामश्च लक्ष्मणश्च-रामलक्ष्मणौ-यहाँ उत्तरपद लक्ष्मण के अनुसार पुल्लिंग द्विवचन किया गया है। **सः नपुसकम्-2/4/17**

मित्राश्च वरुणश्च-मित्रावरूणौ-पुल्लिंग द्विवचन।

वस्त्राणि च अन्नानि च पानानि च-वस्त्रान्नपानम्- 'सर्वो द्वन्द्वो विभावैकवद्भवति' से समाहार अर्थ में नपुसंकलिंग एकवचन हुआ।

इस प्रकार समस्त समास प्रकरण में यथा स्थान सर्वनाम् शब्दों के द्वारा समास में प्रयुक्त समस्त पद का यथास्थान लिंग एवं विभक्ति का निर्धारण किया गया है।

संदर्भ सूची

1 वैयाकरण सिद्धान्त कौमुदी (श्रीस्वामिनारायण श्रितै श्रीमत् श्रीकृष्ण) पृ.सं. 72 सूत्र संख्या 2/2/8

2 वही सूत्र संख्या 5/4/91

3 वही सूत्र संख्या 2/1/30

4 वही सूत्र संख्या 2/2/35

5 वही सूत्र संख्या 2/2/30

6 वही सूत्र संख्या 2/2/24

7 वही सूत्र संख्या 2/2/24

8 वही सूत्र संख्या 2/2/49

9 वही सूत्र संख्या 2/2/61

10 वही सूत्र संख्या 2/1/61

11 वही सूत्र संख्या 2/2/18

12 वही सूत्र संख्या 2/2/24

13 वही सूत्र संख्या 2/2/61

14 वही सूत्र संख्या 2/2/8

15 वही सूत्र संख्या 2/2/24

16 वही सूत्र संख्या 2/2/24

17 वही सूत्र संख्या 2/2/24

18 वही सूत्र संख्या 2/2/11

19 वही सूत्र संख्या 2/2/4

20 वही सूत्र संख्या 2/2/61

21 वही सूत्र संख्या 2/2/4

22 वही सूत्र संख्या 2/2/21

23 वही सूत्र संख्या 2/2/24

24 वही सूत्र संख्या 2/2/31

25 वही सूत्र संख्या 2/2/42

26 वही सूत्र संख्या 2/2/8

27 वही सूत्र संख्या 2/2/24

28 वही सूत्र संख्या 2/2/19

29 वही सूत्र संख्या 2/2/19

30 वही सूत्र संख्या 2/2/20

31 वही सूत्र संख्या 2/2/24

32 वही सूत्र संख्या 2/2/61

33 वही सूत्र संख्या 2/2/40

34 वही सूत्र संख्या 2/2/24

35 वही सूत्र संख्या 2/2/21

36 वही सूत्र संख्या 2/2/24

37 वही सूत्र संख्या 2/2/8

38 वही सूत्र संख्या 2/2/24

39 वही सूत्र संख्या 2/2/21

40 वही सूत्र संख्या 2/2/19

41 वही सूत्र संख्या 2/2/14

42 वही सूत्र संख्या 2/2/42

43 वही सूत्र संख्या 2/2/

44 वही सूत्र संख्या 2/2/19

45 वही सूत्र संख्या 2/2/21

46 वही सूत्र संख्या 2/2/62
47 वही सूत्र संख्या 2/2/24
48 वही सूत्र संख्या 2/2/21
49 वही सूत्र संख्या 2/2/8
50 वही सूत्र संख्या 2/2/28
51 वही सूत्र संख्या 2/2/24
52 वही सूत्र संख्या 2/2/8
53 वही सूत्र संख्या 2/2/24
54 वही सूत्र संख्या 2/2/19
55 वही सूत्र संख्या 2/2/24
56 वही सूत्र संख्या 2/2/19
57 वही सूत्र संख्या 2/2/21
58 वही सूत्र संख्या 2/2/24
59 वही सूत्र संख्या 2/2/18
60 वही सूत्र संख्या 2/2/9
61 वही सूत्र संख्या 2/2/19
62 वही सूत्र संख्या 2/2/18
63 वही सूत्र संख्या 2/2/21
64 वही सूत्र संख्या 2/2/45
65 वही सूत्र संख्या 2/2/2
66 वही सूत्र संख्या 2/2/42
67 वही सूत्र संख्या 2/2/61
68 वही सूत्र संख्या 2/2/8
69 वही सूत्र संख्या 2/2/24
70 वही सूत्र संख्या 2/2/8
71 वही सूत्र संख्या 2/2/21
72 वही सूत्र संख्या 2/2/24
73 वही सूत्र संख्या 2/2/57
74 वही सूत्र संख्या 2/2/24
75 वही सूत्र संख्या 2/2/32
76 वही सूत्र संख्या 2/2/8
77 वही सूत्र संख्या 2/2/28
78 वही सूत्र संख्या 2/2/8
79 वही सूत्र संख्या 2/2/8
80 वही सूत्र संख्या 2/2/8
81 वही सूत्र संख्या 2/2/8
82 वही सूत्र संख्या 2/2/8
83 वही सूत्र संख्या 2/2/24
84 वही सूत्र संख्या 2/2/27
85 वही सूत्र संख्या 2/2/24
86 वही सूत्र संख्या 2/2/32
87 वही सूत्र संख्या 2/2/32
88 वही सूत्र संख्या 2/2/24
89 वही सूत्र संख्या 2/2/8
90 वही सूत्र संख्या 2/2/6
91 वही सूत्र संख्या 2/2/8
92 वही सूत्र संख्या 2/2/24

93 वही सूत्र संख्या 2/2/8
94 वही सूत्र संख्या 2/2/24
95 वही सूत्र संख्या 2/2/8
96 वही सूत्र संख्या 2/2/24
97 वही सूत्र संख्या 2/2/28
98 वही सूत्र संख्या 2/2/28
99 वही सूत्र संख्या 1/2/42
100 वही सूत्र संख्या 2/2/24
101 वही सूत्र संख्या 2/2/42
102 वही सूत्र संख्या 2/2/8
103 वही सूत्र संख्या 2/2/8
104 वही सूत्र संख्या 2/3/73
105 वही सूत्र संख्या 2/2/28
106 वही सूत्र संख्या 2/3/73
107 वही सूत्र संख्या 2/2/24
108 वही सूत्र संख्या 2/2/24
109 वही सूत्र संख्या 2/2/24
110 वही सूत्र संख्या 2/2/8
111 वही सूत्र संख्या 2/2/24
112 वही सूत्र संख्या 2/2/24
113 वही सूत्र संख्या 2/2/24
114 वही सूत्र संख्या 2/2/8
115 वही सूत्र संख्या 2/2/24
116 वही सूत्र संख्या 2/2/24
117 वही सूत्र संख्या 2/2/24
118 वही सूत्र संख्या 2/2/24
119 वही सूत्र संख्या 2/2/24
120 वही सूत्र संख्या 2/2/24
121 वही सूत्र संख्या 2/2/24
122 वही सूत्र संख्या 2/2/24
123 वही सूत्र संख्या 2/2/28
124 वही सूत्र संख्या 2/2/21
125 वही सूत्र संख्या 2/2/8
126 वही सूत्र संख्या 2/2/24
127 वही सूत्र संख्या 2/2/24
128 वही सूत्र संख्या 2/2/28
129 वही सूत्र संख्या 2/2/41
130 वही सूत्र संख्या 2/2/24
131 वही सूत्र संख्या 2/2/24
132 वही सूत्र संख्या 2/2/24
133 वही सूत्र संख्या 2/2/24
134 वही सूत्र संख्या 2/2/24
135 वही सूत्र संख्या 2/2/24
136 वही सूत्र संख्या 2/3/4
137 वही सूत्र संख्या 2/2/4
138 वही सूत्र संख्या 2/2/24
139 वही सूत्र संख्या 2/2/24

140 वही सूत्र संख्या 2/2/8
141 वही सूत्र संख्या 2/2/41
142 वही सूत्र संख्या 2/2/42
143 वही सूत्र संख्या 2/2/57
144 वही सूत्र संख्या 2/2/8
145 वही सूत्र संख्या 2/2/24
146 वही सूत्र संख्या 2/2/24
147 वही सूत्र संख्या 2/2/21
148 वही सूत्र संख्या 2/2/24
149 वही सूत्र संख्या 2/2/41
150 वही सूत्र संख्या 2/2/21
151 वही सूत्र संख्या 2/2/24
152 वही सूत्र संख्या 2/2/20
153 वही सूत्र संख्या 2/2/18
154 वही सूत्र संख्या 2/2/24
155 वही सूत्र संख्या 2/2/24
156 वही सूत्र संख्या 2/2/21
157 वही सूत्र संख्या 2/2/24
158 वही सूत्र संख्या 2/2/20
159 वही सूत्र संख्या 2/2/24
160 वही सूत्र संख्या 2/2/41
161 वही सूत्र संख्या 2/2/8
162 वही सूत्र संख्या 2/2/24
163 वही सूत्र संख्या 2/2/2
164 वही सूत्र संख्या 2/2/21
165 वही सूत्र संख्या 2/2/24
166 वही सूत्र संख्या 2/2/24
167 वही सूत्र संख्या 2/2/21
168 वही सूत्र संख्या 2/2/24
169 वही सूत्र संख्या 2/2/21
170 वही सूत्र संख्या 2/2/24
171 वही सूत्र संख्या 2/2/24
172 वही सूत्र संख्या 2/2/24
173 वही सूत्र संख्या 2/2/21
174 वही सूत्र संख्या 2/2/8
175 वही सूत्र संख्या 2/2/24
176 वही सूत्र संख्या 2/2/11
177 वही सूत्र संख्या 2/2/24
178 वही सूत्र संख्या 2/2/8
179 वही सूत्र संख्या 2/2/24
180 वही सूत्र संख्या 2/2/21
181 वही सूत्र संख्या 2/2/24
182 वही सूत्र संख्या 2/2/24
183 वही सूत्र संख्या 2/2/21
184 वही सूत्र संख्या 2/2/8
185 वही सूत्र संख्या 2/2/24
186 वही सूत्र संख्या 2/2/24

187 वही सूत्र संख्या 2/2/8
188 वही सूत्र संख्या 2/2/8
189 वही सूत्र संख्या 2/2/24
190 वही सूत्र संख्या 2/2/24
191 वही सूत्र संख्या 2/2/21
192 वही सूत्र संख्या 2/2/24
193 वही सूत्र संख्या 2/2/24
194 वही सूत्र संख्या 2/2/21
195 वही सूत्र संख्या 2/2/8
196 वही सूत्र संख्या 2/2/24
197 वही सूत्र संख्या 2/2/24
198 वही सूत्र संख्या 2/2/24
199 वही सूत्र संख्या 2/2/57
200 वही सूत्र संख्या 2/2/24
201 वही सूत्र संख्या 2/2/58
202 वही सूत्र संख्या 2/2/24
203 वही सूत्र संख्या 2/2/24
204 वही सूत्र संख्या 2/2/8
205 वही सूत्र संख्या 2/2/24
206 वही सूत्र संख्या 2/2/24
207 वही सूत्र संख्या 2/2/24
208 वही सूत्र संख्या 2/2/24
209 वही सूत्र संख्या 2/2/8
210 वही सूत्र संख्या 2/2/24
211 वही सूत्र संख्या 2/2/24
212 वही सूत्र संख्या 2/2/24
213 वही सूत्र संख्या 2/2/21
214 वही सूत्र संख्या 2/2/2
215 वही सूत्र संख्या 2/2/8
216 वही सूत्र संख्या 2/2/24
217 वही सूत्र संख्या 2/2/57
218 वही सूत्र संख्या 2/2/24
219 वही सूत्र संख्या 2/2/24
220 वही सूत्र संख्या 2/2/7
221 वही सूत्र संख्या 2/2/24
222 वही सूत्र संख्या 2/2/24
223 वही सूत्र संख्या 2/2/24
224 वही सूत्र संख्या 2/2/24
225 वही सूत्र संख्या 2/2/24
226 वही सूत्र संख्या 2/2/24
227 वही सूत्र संख्या 2/2/24
228 वही सूत्र संख्या 2/2/24
229 वही सूत्र संख्या 2/2/24
230 वही सूत्र संख्या 2/2/24
231 वही सूत्र संख्या 2/2/24
232 वही सूत्र संख्या 2/2/24
233 वही सूत्र संख्या 2/2/24

234 वही सूत्र संख्या 2/2/24
235 वही सूत्र संख्या 2/2/24
236 वही सूत्र संख्या 2/2/24
237 वही सूत्र संख्या 2/2/24
238 वही सूत्र संख्या 2/2/24
239 वही सूत्र संख्या 2/2/24
240 वही सूत्र संख्या 2/2/57
241 वही सूत्र संख्या 2/2/24
242 वही सूत्र संख्या 2/2/24
243 वही सूत्र संख्या 2/2/57
244 वही सूत्र संख्या 2/2/21
245 वही सूत्र संख्या 2/2/20
246 वही सूत्र संख्या 2/2/24
247 वही सूत्र संख्या 2/2/21
248 वही सूत्र संख्या 2/2/24
249 वही सूत्र संख्या 2/2/24
250 वही सूत्र संख्या 2/2/8
251 वही सूत्र संख्या 2/2/24
252 वही सूत्र संख्या 2/2/21
253 वही सूत्र संख्या 2/2/24
254 वही सूत्र संख्या 2/2/24
255 वही सूत्र संख्या 2/2/24
256 वही सूत्र संख्या 2/2/41
257 वही सूत्र संख्या 2/2/42
258 वही सूत्र संख्या 2/2/21
259 वही सूत्र संख्या 2/2/24
260 वही सूत्र संख्या 2/2/24
261 वही सूत्र संख्या 2/2/24
262 वही सूत्र संख्या 2/2/24
263 वही सूत्र संख्या 2/2/24
264 वही सूत्र संख्या 2/2/21
265 वही सूत्र संख्या 2/2/20
266 वही सूत्र संख्या 2/2/24
267 वही सूत्र संख्या 2/2/2
268 वही सूत्र संख्या 2/2/24
269 वही सूत्र संख्या 2/2/2
270 वही सूत्र संख्या 2/2/24
271 वही सूत्र संख्या 2/2/24
272 वही सूत्र संख्या 2/2/24
273 वही सूत्र संख्या 2/2/24
274 वही सूत्र संख्या 2/2/24
275 वही सूत्र संख्या 2/2/24
276 वही सूत्र संख्या 2/2/15
277 वही सूत्र संख्या 2/2/24
278 वही सूत्र संख्या 2/2/24
279 वही २/२/८

280 वही २/२/१९
281 वही २/४/३
282 वही २/२/२४
283 वही २/२/८
284 वही
285 वही २/२/८
286 वही २/२/२८
287 वही २/२/२४
288 वही २/२/२४
289 वही २/२/८
290 वही २/२/८
291 वही २/२/८
292 वही २/२/२४
293 वही २/२/२१
294 वही २/१/३१
295 वही २/२/८
296 वही २/२/२४
297 वही २/१/६१
298 वही १/२/४२
299 वही २/२/२१
300 वही २/१/१७
301 वही २/१/१३
302 वही २/२/२४
303 वही २/४/३
304 वही २/२/२४
305 वही २/२/८
306 वही २/४/३
307 वही २/२/२४
308 वही ५/४/१४५
309 वही २/२/२४
310 वही २/२/८
311 वही २/२/२१
312 वही ६/३/७३
313 वही २/२/२४
314 वही २/२/८
315 वही २/१/३०
316 वही २/२/८
317 वही २/२/२४
318 वही २/२/८

319 वही १/२/४२
320 वही २/१/३६
321 वही २/१/६
322 वही २/१/३०
323 वही २/२/२८
324 वही २/२/८
325 वही २/२/२१
326 वही २/२/८
327 वही ५/४/१५३
328 वही २/२/८
329 वही २/२/२४
330 वही २/२/२४
331 वही २/२/२१
332 वही ५/४/१५३
333 वही ५/४/१५३
334 वही ५/४/१५३
335 वही ५/४/१५३
336 वही ५/४/१५३
337 वही ५/४/१५३
338 वही ५/४/१५३
339 वही ५/४/१५३
340 वही ५/४/१५३
341 वही ५/४/१५३
342 वही ५/४/१५३
343 वही ५/४/१५३
344 वही ५/४/१५३
345 वही ५/४/१५३
346 वही ५/४/१५३
347 वही ५/४/१५३
348 वही ५/४/१४
349 वही ५/४/१५३
350 वही ५/४/१५३
351 वही ५/४/१५
352 वही ५/४/१५३
353 वही ५/४/१५३
354 वही ५/४/१
355 वही ५/४/१५३
356 वही ५/४/१
357 वही ५/४/१५३

358 वही ५/४/१५३
359 वही ५/४/१५३
360 वही ५/४/१५३
361 वही ५/४/१५३
362 वही ५/४/१५३
363 वही ५/४/१५३
364 वही ५/४/१५३
365 वही ५/४/१५३
366 वही ५/४/१
367 वही ५/४/१
368 वही ५/४/१५३
369 वही ५/४/१५३
370 वही ५/४/१
371 वही ५/४/१५३
372 वही ५/४/१
373 वही ५/४/१५३
374 वही ५/४/१५३
375 वही ५/४/१५३
376 वही ५/४/१५३
377 वही ५/४/१
378 वही ५/४/१
379 वही ५/४/१५३
380 वही ५/४/१५
381 वही ५/४/१५३
382 वही ५/४/१५
383 वही ५/४/१
384 वही ५/४/१५
385 वही ५/४/१५
386 वही ५/४/१
387 वही ५/४/१
388 वही ५/४/१
389 वही ५/४/१५
390 वही ५/४/१५३
391 वही ५/४/१५३
392 वही ५/४/१५३
393 वही ५/४/१
394 वही ५/४/१४
395 वही ५/४/१५३
396 वही ५/४/१५३

397 वही ५/४/१५३
398 वही ५/४/१५३
399 वही ५/४/१५३
400 वही ५/४/१५३
401 वही ५/४/१५३
402 वही ५/४/१५
403 वही ५/४/१
404 वही ५/४/१५३
405 वही ५/४/१५३
406 वही ५/४/१५३
407 वही ५/४/१५
408 वही ५/४/१५
409 वही ५/४/१५
410 वही ५/४/१५३
411 वही ५/४/१५
412 वही ५/४/१५३
413 वही ५/४/१५३
414 वही ५/४/१५३
415 वही ५/४/१५३
416 वही ५/४/१५
417 वही ५/४/१४५
418 वही ५/४/१५
419 वही ५/४/१५३
420 वही ५/४/१५३
421 वही ५/४/१५३
422 वही ५/४/१५३
423 वही ५/४/१५३
424 वही ५/४/१५३
425 वही ५/४/१५३
426 वही ५/४/१५
427 वही ५/४/१५३
428 वही ५/४/१
429 वही ५/४/१५३
430 वही ५/४/१५३
431 वही ५/४/१५३